मेजर-जनरल

श्रीमान् काश्मीर नरेश।

महाराज सर प्रतापसिंहजी इन्द्रमहेन्द्र बहादुर

सिपेर-सलतनत, जी. सी. एस, आई.

॥ श्रीः ॥

राजरत्नाकर।

पंजाबप्रान्त।

काश्मीर.

काश्मीर राज्य भारतवर्षके उत्तर पश्चिमीय कोनेमें विस्तृत है। इसके उत्तरमें गिरिराज हिमालयकी काराकोरम नामक पर्वतमाला है। पूर्वमें तिब्बत, दक्षिणमें पंजाब और पश्चिममें हजारा प्रान्त है।

काश्मीरका क्षेत्रफल ७६ हजार ७ सौ ८४ वर्गमील है। लगभग १२ लाख मनुष्य इसमें बसते हैं और राज्यकी वार्षिक आय लगभग ८० लाख ७६ हजार रुपये है।

हिमालयकी अतिविस्तृत और सुन्दर घाटियोंमें काश्मीर सबसे रमणीय है। इससे उत्तम, इससे रम्य या धन धान्य, फल फूलसे पूरित दूसरा स्थान भारतवर्ष भरमें नहीं है। इसी कारण बहुत प्राचीन समयसे काश्मीर भारतके स्वर्गधाम नामसे संसारभरमें विख्यात चला आता है। प्राचीन फारसी कवि इसी की शानमें कह गया है—

"अगर फिर्दोस बर रूये जमीनस्त। हमीनस्तो हमीनस्तो हमीनस्त"।

अर्थात् यदि स्वर्ग पृथ्वीपर है, तो वह यही है, यही है, यहीं है। इसी प्रकार शेख सादी भी अपनी एक कवितामें इसकी प्रशंसा कर गये हैं, जिसका अर्थ यह है कि यदि जला हुआ कोई पक्षी भी इस स्वर्गतुल्य रम्य स्थानमें छोड दिया जावे तो आश्चर्य नहीं जो उसके बाल और पर इस भूमिके प्रभावसे फिर निकल आवें।

मगाय और राज्यमें भलीभांति शांति स्थापित रखी। इस राजाने पश्चिमी पञ्जाबका बहुतसा भाग जीत लिया था.। चीन नरेशके पास एक प्रभावशाली हिन्दू दूतदल इसी राजाके समयमें भेजा गया था। जयपद नामका एक और प्रतापी नरेश इस वंशमें हुआ। वह रणविद्याका पूर्णज्ञाता और अपने समयका अद्वितीय वीर था। उसके पराक्रम और साहसके विषयमें भांति भांतिके किस्से कहानियां काश्मीरमें अबतक प्रसिद्ध हैं।

नागवंशका सौभाग्य सूर्य अस्त होनेके पश्चात् काश्मीर उत्पाल वंशके अधिकारमें चला गया। सं० ८९२ से सं० ९९१ तक इस वंशने काश्मीरमें राज्य किया। अवन्तिवर्मन और शंकर वर्मन नामके दो अति प्रतापशाली राजा इस वंशमें हुए। अवन्ति वर्मनके बनाये देवमन्दिर अब भी काश्मीर-अवन्तिपुरमें विद्यमान हैं। भूमि सींचनेके लिये इस राजाने अनेक नहरें और कुण्ड खुदवाये, जिनकी कारीगरी देखकर इस समयके बड़े बड़े इंजिनियर भी आश्चर्यमें डूब जाते हैं। इसी राजाका पुत्र शङ्करवर्मन बडा वीर और रणकुशल था। इसके निर्माण करायेहुए भी अनेक स्थान काश्मीरमें मिलते हैं। यह राजा गणितशास्त्रका पूर्ण ज्ञाता था। इसने भूमिकरके सम्बन्धमें अतिउपयोगी नियम बनाये थे। उन्हीं नियमोंके अनुसार अबतक भूमिकर वसूल होता था। थोडेही समयसे उसमें वर्तमान समयानुसार कुछ फेर बदल किया गया है।

सं० १०९३ में गजनीनरेश महमूदके आक्रमण भारतपर आरम्भ हुए। महमूद दलबलसहित काश्मीरमें भी घुस गया और हिन्दू राजाको हराकर बड़े भयङ्कर अत्याचार वहांके निवासियोंपर किये, किन्तु कुछही दिनबाद हिन्दूराजाने महमूद और उसकी सेनाको एक घाटीमें घेर लिया और सब अत्याचारोंका भरपूर बदला लिया। महमूदके असंख्य साथी वहां मारे गये। महमूद किसी प्रकार जानबचाकर भाग निकला। इसके बाद उसने कई बार आक्रमण किये किन्तु काश्मीरमें उसने फिर कभी भूलसे भी पैर न रखा। महमूदके चले जानेपर प्रायः २९० वर्षतक फिर हिन्दूनरेश शांतिपूर्वक राज्य करते रहे। इसके बाद हिन्दुओंका सूर्य बहुत कालके लिये काश्मीरमें अस्त हो गया।

विशाल पर्वतोंसे घिरे रहनेके कारण काश्मीर बहुत समयतक मुसलमानोंकी अधीनतासे बचा रहा। किन्तु सं० १३९१ में यह शाहमीर नामके

डेरे डाले पड़े हुए थे। उन्होंने काश्मीरी बादशाहोंकी फूटका हाल सुनकर कुछ सेना काश्मीरमें भेज दी। उसने बिना अधिक रोकठोकके काश्मीर जीतकर उसे मुगल राज्यमें सम्मिलित कर दिया। तबसे प्रायः १५० वर्षतक काश्मीर मुगलराज्यका एक सूबा गिनाजाता था। वहांके राज्यच्युत बादशाहको अकबरने एक बड़ी जागीर प्रदान करके बिहारप्रान्तमें रहनेकी आज्ञा दी। मुगल सम्राट् ग्रीष्म ऋतु काश्मीरमेंही व्यतीत करते थे। इसीसे वहां भी जहांगीर बादशाहके बनवाये अति सुन्दर महल तथा बाग विद्यमान हैं।

सं० १७९५ में फारसनरेश नादिरशाहने भारतपर आक्रमण किया और दिल्लीमें घुसकर अगणित नगरनिवासियोंकी हत्या कराई। लौटते समय नादिरने काश्मीरपर भी आक्रमण किया और उसपर अपना अधिकार जमा लिया। इसके बाद अहमदशाह दुर्रानीने काश्मीर जीतकर सं० १८०९ में उसे अपने राज्यमें सम्मिलित करलिया और आजमखां नामके एक सरदारको वहांका हाकिम नियत किया। किन्तु सं० १८६६ में इस सरदारने बगावत की और स्वयं काश्मीरका बादशाह बन बैठा। शाह फारसने कईबार इसके विरुद्ध सेना भेजी, किन्तु कुछ सफलता प्राप्त न हुई।

उन्हीं दिनोंमें पंजाबकेसरी महाराज रणजीतसिंहका सौभाग्य सूर्य उदय होचुका था। आजमखांके स्वतंत्र होनेके १० ही वर्ष बाद महाराज रणजीतसिंहने काश्मीरपर आक्रमण करके उसका अधिकांश भाग अपने अधिकारमें कर लिया। दूसरे वर्ष अर्थात् सं० १८७७ में आजमखांने अङ्गरेजोंकी सहायतासे महाराजको काश्मीरसे निकाल देना चाहा, किन्तु इसमें उसे सफलता न हुई, दिल्ली स्थित प्रधान अङ्गरेजी अफसरोंने उसकी शर्तें स्वीकार नहीं कीं। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछही समयमें सम्पूर्ण काश्मीर सिख राज्यमें शामिल होगया।

सन् १८४४ में महाराज रणजीतसिंहकी मृत्यु होगई। उनके मरतेही पंजाबमें बड़ी गड़बड़ मची, सर्वत्र अशांति फैल गई। ऐसेही समय महाराजके पुत्र खड्गसिंह सिंहासन पर बैठे किन्तु बहुत दिन राज्य न कर सके। सिंहासनारूढ होनेके चार महीनेके अन्दरही किसीके इशारेसे उनकी हत्या होगई। खड्गसिंहके बाद शेरसिंह गद्दीपर बैठे, किन्तु थोड़ेही दिनोंमें वह अपने पुत्रों सहित बेदर्दीसे मार डाले गये। बात यह थी कि उस समय पंजाबमें सरदारोंकी सर-

कशी बेहद बढ गई थी, कोई किसीको राजा नहीं मानना चाहता था, सब स्वार्थान्ध होरहे थे एक दूसरेके विरोधी अनेकदल खडे होगये थे। इन्हीं दलोंके षड्यन्त्रोंका यह परिणाम हुआ कि कोई राजा देर तक पंजाबके सिंहासनपर न बैठ सका। शेरसिंहकी मृत्युके बाद कुछ दिनोंतक हलचलसी पडी रही, अन्तमें महाराज रणजीतसिंहकी विधवा महारानीने दलीपसिंहको राजगद्दीपर बिठा दिया। दलीपसिंह महाराज रणजीतके कनिष्ठ पुत्र थे, सिंहासनारूढ होनेके समय वह बाल्यावस्थामें थे। दलीपसिंहको सिंहासनपर बिठा महारानीने लालसिंह, अपने भाई जोरावरसिंह तथा जम्मूके राजा गुलाबसिंहकी एक कमेटी बनाई। इसी कमेटीकी सहायता लेकर महारानी नाबालिग दलीपसिंहके नामसे राज्य कार्य चलाने लगीं।

अगले वर्ष सन् १८४५ में अंग्रेजोंसे युद्ध छिड गया। सन् १८४६ में सोनांवके मैदानमें सिखों और अंग्रेजोंका घोर युद्ध हुआ। इसमें दोनों ओरके बहुतसे वीर मारेगये। अन्तमें सन् १८४७ में संधिपत्र लिखागया। इसके अनुसार सिख नरेशको दोआबेके जिले अंग्रेजोंके हवाला करदेना पडे। युद्धका पूरा खर्चभी लाहोरदरबारके ऊपर डालागया, किन्तु खजानेमें रुपया नहीं, खर्च दें तो कैसे। लाचार दरबारने हजारा और काश्मीरके सूबे खर्चेके बदले अंग्रेजोंको देदिये। पीछे अंग्रेजोंने काश्मीरका सूबा जम्मूनरेश गुलाबसिंहके हाथ ८० लाख रुपयेपर बेचदिया। काश्मीर पर अधिकार पातेही जम्मूनरेश महाराज जम्मू काश्मीर कहे जाने लगे।

महाराज गुलाबसिंहकी जीवनीकी दो एक बातें भी जानने योग्य हैं। रणजीतसिंहके समय गुलाबसिंह एक साधारण सवार थे, महाराज रणजीतसिंहके किसी मुसाहबके नौकर थे। थोडेही समयमें केवल अपने बाहुबल और तीक्ष्ण बुद्धिद्वारा उन्होंने सिख सेनामें बडा नाम पैदा किया और धीरे धीरे सेनापतिके पदपर पहुँच गये। उन्हीं दिनोंमें रनेरी स्थानका सर्दार अगरखां बागी होगया था, उसको अधीन करनेमें गुलाबसिंहने जैसी वीरता और बुद्धिकी विलक्षणता दिखाई, उससे महाराज अति प्रसन्न हुए और जम्मूका सूबा गुलाबसिंहको दे दिया। गुलाबसिंह जम्मूमें स्वतन्त्रतापूर्वक शासन करने लगे। कुछही समयमें उन्होंने आस पासके छोटे छोटे राजपूत सरदारोंको अपने अधीन करके धीरे

धीरे अपना राज्य लदाख तक बढा दिया। अन्तमें अंग्रेजोंसे काश्मीर मिल-जाने पर उनके राज्यका विस्तार दूरतक होगया, सिखों और अंग्रेजोंसे युद्ध छिडतेही दूरदर्शी महाराजने जान लिया था कि अंग्रेजोंसे लडना भाग्यसे लडना है। सिख राज्यकी उस समय दशाही ऐसी हो रही थी कि पञ्जाब अंग्रेजोंके हस्तगत हुए विना रह नहीं सकता था जो हो, ऐसीही दशा देखकर गुलाबसिंह सिख अंग्रेज युद्धमें पहले अलगही चुपचाप अपने राज्यके अन्दर बैठे रहे। चिलियानवालाके युद्धमें सिखोंको थोडी सफलता प्राप्त होनेसे उनका चित्त डावांडोल हुआ था सही, किन्तु मुल्तान और गुजरातमें अंग्रेजोंके विजयकी बात सुनकर वह चुप हो गये और अन्तमें अंग्रेजोंके मित्र बने रहे।

इस मित्रताका परिचय उन्होंने सन् १८५७ के गदरमें भलीभांति दिया था। सिपाहियोंकी बगावत आरम्भ होतेही उन्होंने बहुतसी सेना अपने युवराज रणवीरसिंहके साथ अंग्रेजोंकी सहायताके लिये दिल्ली भेजी। किन्तु गुलाबसिंह बगावतका परिणाम न देख सके अभी उनकी सेना दिल्लीहीमें थी की उनका स्वर्गवास हो गया। यह समाचार सुनतेही युवराज रणवीरसिंहने अपने एक नायकको दिल्लीस्थित फौजका सेनापति बनाया और स्वयं काश्मीर को रवाना हो गये।

महाराज रणवीरसिंह सन् १८५७ में गद्दीपर बैठे। पिताकी भांति रणवीर सिंह भी वीर और प्रजापालक राजा थे। महाराज नित्य प्रजाका दुख सुख आप सुना करते थे इसके लिये दिनमें दो बार दरबार लगता था। वहां जिसको जो कुछ कहना होता, बेधडक कहता था। महाराज धनी और दरिद्र सबके साथ एकसार न्याय करतेथे। अपनी प्रजाके कष्ट निवारणका इन नरेशको बडा ध्यान रहता था। जहां कोई दैवी विपद या अकाल आदि पडता था महाराज तत्क्षण बडे बडे काम खोलकर गरीबोंका पालन पोषण करते थे। सारांश यह कि प्रजाको सुखी रखनेमें वह किसी प्रकारकी त्रुटि नहीं होने देना चाहते थे। अपने राज्यका धन और व्यापार बढानेमें भी इन महाराजने कसर नहीं की। आपने अंगूरी शराब बनानेके अनेक कारखाने खुलवाये किन्तु अधिक सफलता रेशमके कारखानोंमें हुई। महाराजने काश्मीर के रेशम और ऊनके उद्यमकी बहुत उन्नति की। प्रजाकी कई कुरीतियां भी महाराजने दूर कीं। अनेक राजपूत जातियोंकी भांति कुछ सिख भी कन्या-

ओंको उत्पन्न होते ही मारडालते थे। महाराजने इस भयङ्कर प्रथाको एकदम उठा दिया। आपके समय काश्मीरमें अनेक अस्पताल और दवाखाने खुलगये और शिक्षाका प्रचार आरम्भ हो गया। सारांश यह कि वर्त्तमान उन्नतिकी बहुत कुछ नीव आपहींके समयमें पड गई।

अंग्रेज सरकारसे आपकी गाढी मित्रता थी। सन् १८५७ में दिल्ली जीतनेके समय आपने अंग्रेजोंकी जो सहायता की थी उसके लिये १ नवम्बर १८६१ को एक बडे दरबारमें बृटिश सरकारने आपको जी. सी. एस. आई. की उपाधिसे विभूषित किया। सन् १८७५ में प्रिन्सआफ वेल्स अर्थात् माजी महाराज एडवर्ड भारतमें पधारे। काश्मीरनरेश उनसे भेंट करनेके लिये कलकत्ते गये, वहां श्रीमान् प्रिन्सने आपका बडा आदर किया था।

सन् १८७७ में महारानी विक्टोरियाके "कसरे-हिन्द" होनेकी घोषणा दिल्लीमें हुई थी। इसके लिये वहां एक बडा आलीशान दरबार हुआ। महाराज भी उक्त दरबारमें पधारे थे। वहीं आप बृटिश सेनाके आनरेरी जनरल बनाये गये और "इन्द्रमहेंद्र बहादुर सिपरेसल्तनत" की उपाधि भी आपको प्रदान की गई। इसके सिवाय आपकी सलामी १९ से २१ तोपकी करदी। बडे लाटकी नवीन कौंसिलके आप मेम्बर भी नियत किये गये। लार्ड डफरिनके रावलपिंडी दरबारमें भी आप गये थे। उस समय आपका स्वास्थ्य बहुत बिगडा हुआ था, दिन दिन दशा शोचनीय होती गई। अन्तमें १२ सितम्बर सन् १८८५ को आपका स्वर्गवास हो गया।

महाराज रणवीरसिंहके बाद वर्त्तमान काश्मीरनरेश महाराजा प्रतापसिंहजी सिंहासनारूढ हुए। सन् १८८९ में आपके राज्याधिकार एक कौंसिलको दे दिये गये। इसमें आपके स्वर्गीय भ्राता अमरसिंहजी तथा अन्य कई सुयोग्य पुरुष शामिल थे। सन् १८९१ में महाराजको फिर पूर्ववत् अधिकार प्राप्त होगये किन्तु कौन्सिल कायमरही। इस समय महाराजको सब प्रकारके दीवानी तथा फौजदारी अधिकार प्राप्त हैं।

सन् १८८८ में महाराज बृटिश सेनाके कर्नल बनाये गये और सन् १८९२ में जी. सी. एस. आई. की उपाधिसे विभूषित किये गये, आपकी सलामी १९ तोपोंकी है।

फर्जन्दे खास पटियाला नरेश ।

महाराज भूपेन्द्र सिंहजी ।

पटियाला.

पंजाबके राज्योंमें पटियाला राज्य सबसे बडा है। इसका विस्तार ५९५१ वर्गमीलमें है। सन् १८९१ की मनुष्यगणनाके अनुसार इसमें १५ लाख ८३ हजार ५ सौ २१ आदमी बसते थे। राज्यकी वार्षिक आय लगभग ५७ लाख रुपया है।

पटियाला राज्यकी नींव असलमें १२ वीं शताब्दिमें पड चुकी थी। उस समय पश्चिम राजपूतानेमें जैसल नामके एक प्रतापशाली राजपूत सरदारका दौरदौरा था। जैसल भाटी वंशका राजपूत था। वर्त्तमान जैसलमेर राज्य और नगरकी नींव उसीने डाली थी। राजपूतानेमें अपना सिक्का जमाकर जैसल पंजाबमें घुसगया और वहां सन् ११८० तक सतलजके दक्षिण बहुतसी भूमिपर अपना अधिकार जमा लिया। इतनेमें राजपूतानेसे खबर आई कि जैसलमेरमें कुछ विद्रोह खडा हुआ है। जैसल झटपट अपनी राजधानी जैसलमेरको चला गया और फिर न लौटा।

जैसलके प्रस्थानके बाद पंजाबमें प्राप्त कीहुई भूमि उसके वंशजोंके हाथमें रही। सिन्धु नामका एक प्रतापी जमीन्दार इसी वंशमें हुआ, उसीके नामपर पटियाला, नामा और जीन्दके नरेश सिन्धु जाट कहलाते हैं। मुगल सम्राट् बाबरके भारत आक्रमणके समय सिन्धुका एक वंशज सागर, सतलजके दक्षिण हुकूमत करता था। बाबर और दिल्लीपति इब्राहीम लोदीकी पानीपतवाली लडाईमें सागरने बाबरका अच्छा साथ दिया था। विशेषकर उसीकी सहायतासे बाबर इब्राहीम लोदीको परास्त कर सका। विजयके बाद बाबरने सागरके पुत्र बरयामको पानीपतके पश्चिमवाले जिलोंका चौधरी बना दिया। बरयामके वंशमें फूल नामका जमीन्दार हुआ, इसीके नामपर पटियाला, नाभा और जीन्द फूलकियां राज्य कहलाते हैं। कहतेहैं कि सिख गुरु हरगोविन्दजीने फूलको आशीर्वाद दिया था। उसीके प्रभावसे उसकी बडी उन्नति हुई, यहांतक कि दिल्लीपति शाहजहाँने भी उसे चौधरीकी उपाधिसे विभूषित किया। इसी फूलने १७ वीं शताब्दिमें पटियाला नगरकी नींव डाली। सन् ११५२ में फूलकी मृत्यु होगई।

फूलके दो पुत्र थे–तिलोका और राम। तिलोकाके वंशजोंने नाभा और जीन्दके राज्य कायम किये। इन राज्योंके वर्त्तमान नरेश तिलोकाकेही वंशज हैं। कनिष्ठ पुत्र रामने पटियाला राज्य कायम किया उसीके वंशज वहाँ अवभी राज्य करते हैं।

रामके बाद उसका पुत्र आलासिंह गद्दीपर बैठा। यह बडा प्रतापशाली सरदार था, बरनालेके मैदानमें इसने नवाब सैयद असद अलीको परास्त करके बहुतसी भूमि हस्तगत की। पीछे भाटी और अन्य शत्रुओंको भी इसने एक एक करके परास्त किया। इसीने पटियालेका किला बनवाया था। सन् १७६२ में अफगान अहमदशाह दुर्रानीने भारतपर आक्रमण किया। बरनालेके रणक्षेत्रमें आलासिंह और अहमदशाहका सामना हुआ। दुर्रानीकी प्रबल सेनाके सामने आलासिंह कुछ न कर सका, अन्तमें बहुत हानि उठाकर उसे हारनापडा। किन्तु परास्त होतेही उसने अहमदशाहकी अधीनता स्वीकार कर ली। इससे प्रसन्न होकर अहमदने आलासिंहको राजाकी उपाधि प्रदान की और अपने देशको लौटगया। अहमदके विदा होतेही आलासिंह दलबल सहित सरहिन्दपर चढगया। वहांके अफगान हाकिमने उसका सामना किया; लेकिन परास्त होकर मारागया। आलासिंहने सरहिन्द नगर और सूबेको खूब लूटा, अन्तमें बहुतसे सरहिन्द निवासियोंको पटियाला नगरमें बसनेके लिये बाध्य करके जबरदस्ती अपने साथ लेगया।

इतनेमें अहमदशाह दुर्रानीका दूसरा आक्रमण भारतपर हुआ। आलासिंहकी उन्नति पहलेसे अधिक देखकर दुर्रानीने बहुत भारी कर उससे वसूल किया और उसका दर्जा घटाकर फिर स्वदेशको लौट गया। आलासिंह दुर्रानीको लाहोर तक पहुंचाने गया था। इसके थोडेही दिन बाद सन् १७६९ में आलासिंहका देहान्त होगया।

आलासिंहके बाद उनके पुत्र अमरसिंह सिंहासनपर बैठे। अहमदशाहने सन् १७६७ में अमरसिंहको 'राजये–राजगान बहादुर' की उपाधिसे विभूषि किया और राजसी चिह्न डङ्का और झण्डा भी प्रदान किया। सन् १७७२ में मराठोंका जोरशोर दिल्लीकी ओर बहता था। अमरसिंहने 'उनके भयसे

खजाना और अपना सब माल रक्षाके निमित्त भटिंडे भेज दिया। जिनका डर था वह तो नहीं बोले, किन्तु स्वयं अमरसिंहका भाई हिम्मतसिंह बडे भाईसे बगावतकर बैठा और पटियालेके किलेपर अपना अधिकार जमाना चाहा। अन्य कई सरदार भी उसके शरीक हो गये, किन्तु अमरसिंहने थोडेही दिनोंमें इन सबको परास्त कर दिया। उसी समय रणजीतसिंहका सौभाग्य-सूर्य पंजाबमें उदय हो चुका था। अमरसिंहको पंजाब केसरीका शुरूहीसे बहुत भय था, कईबार चेष्टा करनेपर भी रणजीतसिंहके सामने उनकी कुछ पेश न गई।

अमरसिंहकी मृत्युके बाद सन् १७८१ में साहबसिंह गद्दीपर बैठे। उनके शासनकालमें राज्यपर बडी विपद पडी। सन् १७८६ में समस्त पंजाबप्रांतमें घोर अकाल पडा था। अकालके कारण पटियाला राज्यका बल बहुत कुछ घटगया। यह देखकर अनेक सरदार स्वतन्त्र होगये और राज्यकी बहुतसी भूमि उन्होंने दबा ली। साहबसिंहने कोई चारा न देख, मराठोंको दिल्लीसे अपनी मददके लिये बुलाया। उन्होंने आकर समस्त बागी सरदारोंको फिरसे जीत, पटियाला दरबारके सपुर्द करदिया।

सन् १८०३ में अंगरेजी जनरल लेकने दिल्लीपर अधिकार जमा लिया। वहीं मराठों और अंगरेजोंमें एक संधिपत्र लिखागया। इसी संधिकी तिथिसे अंगरेजी राज्य यमुनाके पार बढने लगा। रणजीतसिंहकी दृष्टि बहुत दिनोंसे पटियालेपर लगी थी, इससे सन् १८०६ में वह सेना सहित फूलकियां राज्यपर चढगये। उसी समय नाभा और पटियालामें कुछ तकरार शुरू होगई। नाभा नरेशने रणजीतसिंहको अपनी सहायताके लिये बुलाया। रणजीतसिंह तो इसके लिये तैयार होकर निकलेही थे। नाभाका सन्देशा मिलतेही झट फूलकियां राज्यमें घुस गये। लेकिन अन्तमें नाभा और पटियालाके नरेशोंमें मेल कराकर लाहोर लौट गये।

अगले वर्ष सन् १८०७ में पटियालेके राजा और रानीमें कुछ बिगाड हो गया। रानीनें अपने पतिको दण्ड दिलानेके लिये रणजीतसिंहको बुलाया। रणजीतसिंह फिर सेनासहित सतलजके पार उतर गये। सतलज पारके छोटे छोटे राजा रणजीतसिंहके इस तरह घडी घडी पार उतरनेसे भयभीत हुए।

उन्होंने अङ्गरेजोंकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये कलकत्तेमें गवर्नर जनरलके पास एक पत्र भेजा। किन्तु इसका उत्तर मिलनेसे पहले रणजीतसिंहने पटियाला-नरेश और उनकी रानीमें मेल करादिया। रानी राजाने हीरेका एक बहुमूल्य कण्ठा तथा एक पीतलकी बन्दूक रणजीतसिंहको भेंट की। रणजीतसिंह इतनीही भेंट लेकर लाहोर लौट गये। किन्तु राहमें कई छोटे राजाओं और सरदारोंके किले अपने अधिकारमें करते गये।

लाहोर पहुँचकर महाराज रणजीतसिंहको खबर मिली कि सतलजपारके राजाओंने इस इस तरहका पत्र अङ्गरेजोंको लिखा है। महाराजने भी झट एक पत्र गवर्नर जनरलके पास कलकत्ते भेजा और उसमें सतलजपारके समस्त राज्यों पर अपने दावेका कारण प्रगट किया। अङ्गरेजोंने इसके उत्तरमें अपना एक दूत लाहोर भेजा। उसने सतलजपारके राज्योंके झगड़ेका फैसला करना चाहा; किन्तु महाराज उसकी शर्तोंसे राजी न हुए और कुछ दिन बाद ससैन्य सतलजपार उतरगये। उन्होंने जातेही अम्बालेपर अपना अधिकार जमा लिया। अंगरेज उन्हें रोकनेका अभी प्रबंधही कर रहे थे कि महाराज आपही लाहोरको वापस होगये।

सन् १८०९ में अंग्रेजों और सिखनरेश महाराज रणजीतसिंहके मध्य एक संधिपत्र लिखा गया। इसके अनुसार महाराजने सतलजपारके कुल छोटे छोटे राज्योंपरसे अपना दावा उठालिया। उधर पटियालानरेशने इस छुटकारेके बदले अंग्रेजोंको वचन दिया, कि देशमें युद्ध छिडनेके समय वह सब तरह अंग्रेजोंकी मदद करेंगे। इसके बाद कुछ समयतक सतलजके इस पार एक प्रकार शांति रही।

राजा साहबसिंह सन् १८१३ में परलोक सिधारे। उनके बाद उनके पुत्र कर्मसिंह पटियालेकी गद्दीपर बैठे। इनके समय अंग्रेजो और गोर्खोंमें युद्ध छिड गया। कर्मसिंहने अंग्रेजोंकी हर तरह सहायता की। इसके बदले अंग्रेजोंने राजाको ९०००) वार्षिक आयके दो परगने प्रदान कर दिये। महाराजाने अंग्रेज सरकारको ८ लाख रुपये नकद गिन दिये। १८३० में शिमला और उसके इर्दगिर्दकी भूमि अंग्रेजोंको देकर कर्मसिंहने खडोली परगनेके तीन ग्राम बदलेमें ले लिये। वर्त्तमान शिमलेकी उत्पत्ति उसी समयसे समझना चाहिये।

३२ वर्ष राज्य करके सन् १८४५ में कर्मसिंहका देहान्त हो गया। उनके बाद उनके पुत्र महाराजा नरेन्द्रसिंह गद्दीपर बैठे। इन्हींके समयमें अंग्रेजों और सिखोंसे पहला युद्ध हुआ था। पटियालाने नियमानुसार अंग्रेजोंका पक्ष लिया, किन्तु महाराज नाभाने सिख सरकारके साथ सहानुभूति प्रगट की। युद्ध समाप्त होनेपर अंग्रेजोंने ३८०००) वार्षिक आयकी भूमि नाभासे छीनकर पटियालाको प्रदान कर दी। इसके बाद पटियाला राज्यकी दिन दिन उन्नति होती रही। महाराज नरेन्द्रसिंहने अपने राज्यसे चुंगी और अन्य कई प्रकारके कर उठादिये जिससे व्यापारकी अच्छी उन्नति हुई। शासनका भी बहुत कुछ सुधार किया। अंग्रेजसरकार महाराजके उदार शासनसे अति प्रसन्न हुई और उसने वह सब भूमि महाराजको दे दी, जो सिखयुद्धके कारण हस्तगत हुई थी।

सन् १८५७ के गदरमें पटियाला दरबारने अंग्रेजोंकी सेना और रसद आदिसे भलीभांति सहायता की थी। गदरके बाद शांति स्थापित होनेपर अंग्रेज सरकारने झझरकी नवाबीका नारनौलवाला इलाका महाराज पटियालाको प्रदान किया। इस इलाकेकी वार्षिक आय उस समय २ लाख रुपये थी। सन् १८६०में बृटिशसरकारने दत्तक पुत्र लेनेका अधिकार पटियालेके नरेशोंको प्रदान करके एक सनद लिख दी, साथही वह वार्षिक कर भी माफ किया, जो पटियाला दरबारसे लिया जाता था। बृटिश सरकारके जिम्मे पटियाला राज्यका कुछ कर्ज बहुत समयसे बाकी था। अंग्रेजोंने कुछ भूमि पटियालाके हवाले करके यह कर्ज भी चुका दिया। १ नवम्बर सन् १८६१ को बृटिश सरकारने महाराज नरेन्द्रसिंहको जी. सी. एस. आई. की उपाधिसे विभूषित किया। अगले वर्ष नवम्बर मासमेंही महाराजका स्वर्गवास होगया।

आपके पुत्र महेन्द्रसिंह १२ वर्षकी आयुमें राजगद्दीपर बैठे। राज्याधिकार आपको सन् १८७० में बालिग होनेपर प्राप्त हुए। अगले वर्ष महाराज जी सी. एस. आई. की उपाधिसे विभूषित किये गये। महाराज महेन्द्रसिंहको प्रजाकी सुख समृद्धिका बडा ध्यान रहता था। आपने राज्यके भूमिकर सम्बन्धी आईनका बहुत कुछ सुधार किया और राज्यकी हर तरहसे उन्नति की। आपने पटियालेमें एक कालेज स्थापित किया जो इस समय बडी उन्नत दशामें है। महेन्द्र

कालिज इस समय पंजाबके उच्च श्रेणीके कालेजोंमें गिना जाता है। कालेजके सिवा महाराजने राज्यमें जगह जगह स्कूल स्थापित किये। इनकी संख्या उस समय ८६ से कम नहीं थी। राज्यमें शिक्षाका प्रचार आरम्भ करनेवाले यही महाराज हैं आपहीके उत्साह देख इर्द गिर्दके अन्य राज्योंका भी शिक्षा प्रचारकी ओर ध्यान हुआ।

शिक्षाप्रचारके सिवा स्वास्थ्यरक्षाकी ओर भी महाराजका सदा ध्यान रहता था। आपने राज्यमें ९ अस्पताल खुलवा दिये इसके सिवा राज्यमें तार लगवा कर एक तारघर बनवाया। खास पटियाला नगरमें महाराजने एक लाख रुपयेके व्ययसे एक बडी धर्मशाला बनवाई और "महेन्द्र सराय" उसका नाम रक्खा। कृषिकी दशा सुधारनेके लिये भी आपने बहुत कुछ व्यय किया। सतलज नदीसे एक बडी नहर कटवाये। इससे कृषकोंका बहुत कुछ कष्ट दूर होगया। इसी प्रकार महाराज प्रजाके हितके लिये अनेक उपयोगी कामोंपर दिल खोलकर व्यय करते थे।

महाराजकी उदारता राज्यके भीतर ही नहीं रुक जाती थी, बाहर वाले भी उससे लाभ उठाते थे। आपके शासनकालमें पंजाबमें एक बार महाअकाल पडा। महाराजने एक लाख रुपये अकालग्रस्तोंकी सहायताके लिये अंग्रेजोंको दिये। श्रीमान् प्रिन्स आफ् वेल्स अर्थात् वर्त्तमान महाराज एडवर्डकी भारतयात्राकी खुशीमें महाराजने एक लाख ६ हजार ३ सौ ९१ रुपये पंजाब यूनिवर्सिटीको प्रदान करके कई वृत्तियां स्थापित कराईं। बंगालके अकालफण्डमें भी आपने १० हजार रुपये प्रदान किये थे।

२३ दिसम्बर सन् १८७५ को कलकत्तेमें श्रीमान् प्रिन्स आफ् वेल्सका स्वागत धूमधामसे हुआ था। अन्य बडे बडे नरेशोंकी भांति महाराज महेन्द्रसिंह भी श्रीमान्का स्वागत करनेके लिये कलकत्ते पधारे थे। प्रिन्स महोदय महाराजसे प्रसन्नता पूर्वक मिले और आगरे पहुँचकर श्रीमान् खास राजधानी पटियालामें महाराजसे भेंट करने गये थे। इसके ४ महीने बाद ही १४ अप्रैल सन् १८७६ को महाराज महेन्द्र सिंहका स्वर्गवास हो गया।

महाराजके दो पुत्र थे, इनमें ज्येष्ठ पुत्र टीका राजेन्द्र सिंहकी आयु उस समय कुल चार वर्षकी थी। बृटिश सरकारने उन्हींको राजगद्दीपर बिठाकर शासनका भार एक कौंसिलके सपुर्द कर दिया। कौंसिल सन् १८८९, तक राज्यकार्य चलाती रही। सन् १८९० में महाराज बालिग हो गये इससे उसी वर्ष २३ अक्टोबरको आपको समस्त शासनाधिकार प्राप्त हो गये। आपके समयमें बृटिशसरकारने पटियाला दर्बारकी नजर माफ करदी।

आपके देहान्तके समय वर्त्तमान महाराज भूपेन्द्रसिंहजी नाबालिग थे इससे राज्यकार्य चलानेके लिये एक कौंसिल स्थापित की गई। पटियालानरेशको दीवानी फौजदारीके सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हैं।

महाराज भूपेन्द्रसिंहजीका जन्म सन् १८९१ में हुआ था। लाहोरके एटकिसन चीफ्स कालिजमें आपने शिक्षा पाई। आपकी नाबालिगीमें रिजेन्सी कौन्सिल द्वारा राज्यकार्य चलता था। बालिग होनेपर गत वर्ष आप गद्दीपर विराजमान हुए। आप बडी योग्यतासे शासन कर रहे हैं। पञ्जाबके नरेशोंमें पटियालानरेश सबसे प्रथम गिने जाते हैं। आपकी सलामी १७ तोपोंकी है। सन् १९००में भारत सरकारने अपना एक पोलिटिकल एजेण्ट फूलकियां तथा बहावलपुर राज्यके लिये नियत किया। यह एजेण्ट पटियालेमें रहते हैं।

सिक्का।

पटियाला नरेशोंको अपना सिक्का जारी करनेका अधिकार अहमदशाह दुर्रानीने सन् १७६७ में प्रदान किया था। तांबेका सिक्का कभी नहीं जारी हुआ। एक बार महाराज नरेन्द्रसिंहने अठन्नी और चवन्नी चलाई थी। रुपये और अशरफियां सन् १८९९ तक राज्यकी टकसालमें ढलती रहीं। अन्ततक सिक्कोंपर वही पुरानी इबारात खुदी रहती थी कि "अहमदशाहकी आज्ञानुसार जारी हुआ।" पटियालेका रुपया राज शाही रुपया कहा जाता था। नानकशाही रुपये अबभी ढाले जाते हैं। यह केवल दशहरे या दिवाली परही काम आते हैं। इस रुपयेपर यह शेर छपा रहता है,—"देग तेगो फतह नसरत बेदरंग, याफ्त अज नानक गुरुगोबिन्दसिंह।"

इसका मर्मांश यह है कि देग और तेग अर्थात् तलवार तथा विजय, यह सब गुरुगोविंदसिंहको नानकसे प्राप्त हुई।

शिल्प व्यापार।

अच्छे सूती कपडे सुनाम नगरमें और रेशमी पटियालेमें बनते हैं। सूसी नामका वस्त्र पटियाले और बसीमें बुना जाता है। सुनहरी लैस भी पटियालेमें बनती है। समाना और नारनौलमें पलङ्गके पाये अच्छे बनते हैं । पायलमें लकडीके नकाशीवाले द्वारके चौखट बनते हैं, अच्छे होते हैं, । पीतलका काम पटियाला, मदौर और कानौडमें होता है । नरवानामें एक जिनिङ्ग फैक्टरी है। लोहे तांबे और अभ्रककी खानें महेन्द्रगढ़ निजामतमें हैं। तांबा और सीसा सोलनमें निकलता है। शोरा राजपुरा, नारनौल, नरवानामें बनता है।

राज्यसे बाहर गेहूं, चना, दाल, ज्वार, तेलहन, घी, रुई, सूत, शोरा, चूना, लालमिरच भेजी जाती है। राज्यमें आनेवाले मालमें युक्तप्रदेशसे केवल चीनी और चावल आता है। बंबई और दिल्लीसे कपडे और अन्य पदार्थ आते हैं।

शिक्षा।

पटियालेमें शिक्षाका प्रचार बहुत कम है। सन् १८८१ से १९०१ तक, दस वर्षमें, शिक्षित स्त्रियोंकी संख्या दूनी हो गई किन्तु मर्दोंकी घट गई । सन १९०४ में ६०९० लडके तथा ९३८ लड़कियां शिक्षापाती थीं।

प्राचीन नगर।

पटियाला–राजधानी पटियाला नगर उसी नामकी एक नदीके पश्चिमी किनारेपर स्थित है। सन् १९०१ में ५३, ५४५ मनुष्य उसमें बसते थे। राजा आलासिंहने सन् १७६३ में सरहिन्दको जीता था। उस समय पटियाला एक छोटासा ग्राम था। राजा आलासिंहने वहीं एक सुदृढ किला बनवाया और वहीं राजधानी कायम की । सरहिन्दके अधिकांश निवासी अपना नगर छोडकर पटियालेमें बसने लगे, इससे नगरकी रौनक दिन दिन बढने लगी। इस समय वहां अच्छा व्यापार होता है और देशी शिल्प, कारीगरीकी भी कुछ चर्चा है। महाराजका पुरातन महल नगरके मध्यमें है। नगरकी सडकें बाजार चौडे हैं किन्तु गलियां बडी विकट और तंग तथा

टेढी हैं। नगरके बाहरी भागमें अलबत्ता अच्छे अच्छे बाग, बंगले, सडकें तथा सरकारी मकानात हैं। महेन्द्र कालिज, राजेन्द्र विक्टोरिया जुबिली पुस्तकालय, राजेन्द्र अस्पताल, बारहदरी तथा मोतीबाग देखने योग्य है।

बानूर–राजपुरेसे दस मील दक्षिण, प्रायः ६ हजारकी वस्तीका कसबा है। इसके ईर्दगिर्द बहुतसे खण्डरात पडे हैं। अति प्राचीन नगर है। प्राचीन नाम पुष्प, पुष्प नगरी या पुष्पावती था। हिन्दू राज्यके समय यहांका चमेलीका इत्र बहुत प्रसिद्ध था। अब भी कुछ बनता है। किसी समय यहां चमेली और अन्य सुगंधित फलोंके बहुतसे बाग थे। इसीसे पुष्पावती नाम पडा।

भटिण्डा–इसका दूसरा नाम गोविन्दगढ है। सन् १९०१में१३१८९ आदमी इस नगरमें बसते थे। हिन्दू राज्यके समय इसे विक्रमगढ़ कहते थे। मुसल्मान एतिहासिकोंने इसे बटिंडा लिखा है। काश्मीर के इतिहाससे विदित होता है कि भटिंडामें राजा जयपालकी राजधानी थी। महमूद गजनवीने इसपर अधिकार कर लिया था। वर्त्तमान भटिंडेके विषयमें कहा जाता है कि राजपूत भाटीरावने इसे फिरसे बनवाकर भटिंडा इसका नाम रखा। बीकानेरके भटनेर नगरकी नीव भी इन्हीं राजाने डाली थी। मुगल राज्यके समय भटिंडा एक बडा सूबा था। सन् १७५४ में पटियालानरेश महाराज आलासिंहने यह नगर जीतकर अपने राज्यमें मिलालिया।

घुराम–कुहराम या रामगढ भी कहते हैं। ७९८ आदमी इस ग्राममें बसते हैं। ईर्दगिर्द बहुतसे खण्डहर मौजूद हैं। कहते हैं कि प्राचीन समयमें यह बडा प्रसिद्ध नगर था। महाराज रामचन्द्रजीके नाना इसी नगरमें रहते थे। मुसल्मानी इतिहासमें इसका नाम कुहराम पहलेपहल सन् ११९२ में आया है। उस वर्ष मुहम्मद गोरीने यह नगर जीतकर उजाड कर दिया था।

कलैत–छोटासा कसबा है। यहां चार बडे प्राचीन मंदिर और एक कुण्ड बना हुआ है। कहते हैं कि मंदिर और कुण्ड राजा शालिवाहनने बनवाये थे ण्ड 'कपालमणि' तीर्थ कहलाता है।

कानौड–सन् १८९० में ९९८४ आदमियोंकी वस्ती थी । मुगलराज बाबरके एक नौकर महद्दूदखांने यह नगर वसाया था । पहले पहल कानौडिया ब्राह्मणही इस नगरमें वसे, इससे उसका नाम कानौड पडा । शाह आलम बादशाहके वजीरकी विधवा सन् १७९२ में कानौडमें शासन करती थी। उसी वर्ष सेंधियाके जनरल डीवाइनके अधीन मराठोंकी सेनाने कानौडको घेरलिया । वजीरकी विधवा युद्धमें मारी गई । इसके बाद यह सूबा मराठे राज्यमें शामिल होगया । अन्तमें मराठोंसे युद्ध होनेपर यह सूबा अंगरेजोंके हाथ आया । उन्होंने पहले इसे झझरके नवाबको प्रदान कर दिया; किन्तु गदरके बाद सन् १८६१ में कानौड और कुडुआनाके परगने पटियाला राज्यको दे दिये गये ।

नारनौल–पटियाला राज्यमें राजधानीके बाद इसी नगरका दर्जा है। वस्ती २० हजारके लगभग है । कोई तो कहते हैं कि राजा दूणकरनने अपनी रानी नारदूणके नाम पर इस नगरको वसाया, नारदूणका नाम विग-डते विगडते नारनौल होगया । किन्तु महाभारतमें दिल्लीके दक्षिणदेशका नाम नरराष्ट्र लिखा है इससे सम्भव है कि इसीसे नारनौल नाम पडा हो। मुसलमानी इतिहासमें इसका नाम प्रथम सन् १४११ में आया है । उस वर्ष बादशाह अलतमशने नारनौलका परगना अपने एक सरदारको प्रदान कर दिया था । शेरशाहसूर बादशाह यहीं पैदा हुआ था । अकबरके शासनकालमें नगरमें कई इमारतें बनीं और तालाब खोदे गये । औरंगजेबके समय सतनामी सम्प्रदायवालोंने इसपर आक्रमण किया और जीतकर कुछ दिनोंके लिये अपने अधिकारमें करलिया; किन्तु पीछे वे निकाल दिये गये। सन् १७९९ में यह परगना मराठोंके हाथमें चलागया, उनसे अंगरेजोंको मिला और गदरके बाद पटियाला दरबारको प्रदान हुआ ।

पायल–कहते हैं ७०० वर्ष पहले कुछ खत्रियोंने इसे वसाया था । यहाँ गंगासागर नामक एक प्रसिद्ध तालाब तथा एक शिवमंदिर है, उसे दश नामका अखाडा कहते हैं ।

पिंजौर–प्राचीन नाम पंचपुरा। प्राचीन फारसी इतिहासज्ञ अबू रींहांने सन् १०३० में इसका जिक्र किया है। संस्कृतके टूटे फूटे शिलालेख बहुत मिलते हैं।

समाना–अच्छा कसबा है। बहुत प्राचीन नगर है। कहते हैं कि एक समय फारिसके समानिद बादशाह भागकर भारतमें आये, उन्हींने इसे बसाया था। जहांगीर बादशाहके समय यहांके बुने वस्त्र अतिउत्तम गिने जाते थे। सन् १६२१ में अङ्गरेजी ईस्टइण्डिया कम्पनीके आदमी कलकत्तेसे यहांकी उत्तम सूती छीटें खरीदने आते थे। एक थानका दाम ३॥) से ४॥) तक होता था। सन् १७०८ में बन्दा वैरागीने यह नगर लूटा था।

सरहिंद–इसे सहरिन्द भी कहते है। बहुत ऊँची भूमिपर स्थित होनेके कारण इसका सरहिन्द या 'सरे–हिन्द' अर्थात् भारतका मस्तक नाम शुद्ध समझते हैं। किन्तु कई जगह इसे सहरिन्द भी कहा है। यह नाम 'सिंह-अरण्य' का अपभ्रंश बताया जाता है। एक जगह लिखा है, कि श्रीकृष्णके वंशमें १६६ वें नरेश साहिर राव लाहोरके राजा थे। उन्हींके नामपर यह नगर बसाया गया था। तारीख फरिश्तामें इसे ब्राह्मणनरेश जयपालके राज्यकी पूर्वीय सीमापर बताया है। बादशाह तृतीय फीरोजशाहने इसे अपने गुरु जलालुद्दीनकी आज्ञानुसार फिरसे बसाया। वही बादशाह सतलज नदीकी एक नहर काटकरभी लाया था। मुगल सम्राटोंके समय सरहिन्द उन्नतिके शिखरपर पहुँच गया था। सैकडों मंदिर, मसजिद, सराय, तालाब, बाग आदि वहां मौजूद थे। अब भी नगरके इर्दगिर्द कई मीलतक खण्डरात पडे हैं। सन् १७६३ में यह नगर पटियालानरेशोंके हाथमें चलागया। काबुलके बादशाह शाहजमाकी कब्र इसी नगरमें है।

सेना और पुलिस।

बृटिश सरकारकी सेवाके लिये एक रिसाला, और दो बटालियन पैदल पल्टन हैं। राज्यकी सेनामें अफसर और सिपाही कुल मिलाकर ३४२९ आदमी हैं। पुलिसकी संख्या १९७३ है। ९० तोप कामकी हैं।

नाभा.
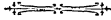
नाभा राज्य फूलकियांवाली रियासतोंमें शामिल है । इसका विस्तार प्रायः ९६६ वर्गमीलमें है । पंजाबके अतिरिक्त राजपूतानेमें भी इस राज्यकी कुछ भूमि है । वह एक अलग निजामत है । बावल उसका सदर स्थान है ।

सन् १७६३ तक नाभा और पटियालाका इतिहास एकही है । उस समय फूलवंशीय राजकुमारोंमें हम्मीरसिंह नाभाके सरदार थे । सन् १७६३ में सरहिन्द विजयके बाद फूलकियां राज्य कई हिस्सेदारोंमें बट गया । अमलोहके इर्दगिर्दकी भूमि हम्मीरसिंहके हिस्सेमें आई । वहीं नाभाके प्रथम राजा हुए; किन्तु १० वर्ष बाद कुछ भूमि हम्मीरसिंहके हाथसे निकल गई । सन् १७७४ में जीन्दनरेश गजपतिसिंह तथा नाभानरेशमें युद्ध छिड गया । अन्तमें गजपतिसिंहकी विजय हुई, उन्होंने संगूर, अमलोह तथा भादसोनके इलाके नाभासे छीन लिये । पीछे पटियालानरेशके कहनेसे अमलोह और भादसोनके इलाके नाभाको लौटा दिये गये, किन्तु संगूर तबसे जीन्द राज्यमेंही शामिल रहा और अब भी है ।

फूलकियां राज्योंका बल बढते देखकर सन् १७७६ में दिल्लीकी मुगल सरकारका ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ । उन्हें अपने अधीन करनेके लिये मुगल बादशाहने हांसीके मुसल्मान हाकिमको फूलकियां राज्योंपर चढाई करनेकी आज्ञा दी । हाकिम एक बडी सेना सहित इन रियासतोंपर चढ़ गया । फूलकियांनरेशोंने एक होकर उसका सामना किया । युद्धमें मुगल हाकिम बडी हानि उठाकर हारा और भागगया । इस विजयके कारण इर्दगिर्दकी बहुतसी भूमि फूलकियांनरेशोंके हाथ लगी । इसमें रोडीका इलाका हम्मीरसिंहके हिस्सेमें आया ।

सन् १७८३ में हम्मीरसिंहका देहान्त होगया । उनके बाद नाबालिग राजकुमार यशोवन्तसिंह गद्दीपर बैठे । उनकी नाबालिगीमें राज्यकार्य सन् १७९० तक रानी देसू चलाती रहीं । यह रानी बडी बुद्धिमती और योग्य

शासिका थी। जीन्दनरेश गजपतिसिंहने नाभा राज्यकी जो भूमि दबाई थी उसका अधिकांश भाग रानीने गजपतिसिंहसे छीन लिया। इतनेमें गजपतिसिंहकी मृत्यु हो गई। उनके मरते ही दोनों राज्योंमें मेल होगया।

यह सम्बन्ध सन् १७९८ में और भी घनिष्ट हो गया। उस वर्ष पठान शाहजमां दुर्रानीने भारतपर आक्रमण किया। उस समय फुलकियां राज्योंके समस्त सिख नरेश एक हो गये और दुर्रानीको रोकनेके लिये लाहोरकी ओर बढ़े। वहीं एकाएक खबर मिली कि मराठोंका एक यूरोपियन अफसर टामस, जीन्द राज्यपर चढ़ आया और उसने राजधानी जीन्दको घेर रखा है। यह सुनतेही सिख सेना पीछे लौटी। युद्ध हुआ। युद्धमें सिख परास्त हुए। किन्तु इसका दोष उन्होंने नाभानरेशपर रखा, क्योंकि उन्होंने ठीक समयपर सहायता नहीं दी थी। जो हो, सन् १८०१ में सभी फुलकियांनरेश एक संधिपत्र लिखकर मराठोंके अधीन हो गये। किन्तु पीछे नाभानरेश यशोवन्त सिंहने संधिपत्रका विरोध किया। उन्होंने सन् १८०४ में अंग्रेजी जनरल लार्ड लेकसे बातचीत करके अंग्रेजोंसे मेल बढ़ाया और मराठोंसे सम्बन्ध तोड़ लिया। सन् १८०५ में होल्कर अंगरेजोंसे हारकर लाहोर जाते हुए नाभामें ठहरे और राजासे सहायता चाही, किन्तु उन्होंने इनकार किया और अंग्रेजी सरकारके मित्र बने रहे।

इसके थोड़े ही दिन बाद फुलकियां नरेशोंमें परस्पर युद्ध आरम्भ हो गया। एक ओर पटियालेकी रानी थी, दूसरी ओर नाभा और जीन्दके नरेश। रानीसे हारकर दोनों नरेशोंने महाराज रणजीत सिंहसे सहायताकी प्रार्थना की। महाराज यह सुनतेही सतलजके पार उतर आये और नाभा में डेरे डाल दिये। यहां उन्होंने मेल करानेकी चेष्टा करके मुसल्मानी राज्य मलेरकोटलापर खूब हाथ साफ किया। उक्त राज्यके कोट बसिया, धुमआन, जगराबँ और तालवण्डीके इलाके जीतकर महाराजने नाभानरेशको प्रदान कर दिये और स्वयं लाहोर लौट गये। सन् १८०७ में रणजीतसिंह फिर सतलजपारके राज्योंमें घुस गये। इस बार महाराज खन्नेका इलाका यशोवन्तसिंहको दे गये।

रणजीतसिंहके यों बारबार घुस आनेसे सतलजपारके नरेश बहुत घबराये। उन्होंने सन् १८०९में बृटिशसरकारसे रक्षाकी प्रार्थना की। यह मालूम करके

रणजीतसिंहने पहले अपना कुछ दावा सतलज पारकी भूमिपर दिखाया किन्तु पीछे उसे वापस लेलिया और फिर कभी सतलजपार हस्तक्षेप न किया।

राजा यशोवन्तसिंहके समय नाभा राज्यने अच्छी उन्नति की थी। राज्यकी आय उनके समयमें बहुत बढ गई थी। इनके शासनकालमें पटियालासे सीमा-सम्बन्धी झगडे बहुत समयतक चलते रहे। अन्त समयमें यशोवन्तसिंहको अपने पुत्रकी बगावत और मृत्युका भारी सदमा सहन करना पडा।

सन् १८४० में यशोवन्तसिंहका देहान्त होगया। उनके बाद उनके पुत्र देवेन्द्रसिंहने आरम्भही से अंग्रेजोंका विरोध करना शुरूकिया। जो संधिपत्र वृटिश सरकार और राजाके पिता यशोवन्तसिंहके मध्य लिखा गया था उसका उन्होंने कुछ ख्याल न किया। उसी समय सिख-अंग्रेज युद्ध आरम्भ होगया। नाभानरेशने सिखोंको कई तरहसे सहायता दी। युद्ध समाप्त होने पर वृटिश सरकारने उनसे जवाब तलब किया और जांच की। परिणाम यह हुआ कि राजा देवेन्द्रसिंह सिंहासन से उतार दिये गये और ५० हजार रुपये वार्षिक पेन्शन उनके लिये वृटिशसरकारकी ओरसे मुकर्रकी गई। इसके सिवा राज्यका चौथा हिस्सा जब्त करके वृटिशसरकारने पटियाला और फरीदकोट नरेशोंको बांट दिया, क्योंकि इन लोगोंने युद्धमें अङ्गरेजोंका अच्छा साथ दिया था।

देवेन्द्रसिंहके ज्येष्ठ कुमार भरपूरसिंह सन् १८४७ में गद्दीपर बैठे। सन् १८५७ के गदरमें राजा भरपूरसिंहने अङ्गरेजोंकी सब तरह सहायता की थी। इससे प्रसन्न होकर वृटिशसरकारने झझरकी नवाबीकी बाबत निजामत नाभा-नरेशको प्रदान करदी। इस इलाकेकी वार्षिक आय उस समय १ लाख ६ हजार रुपयेकी थी। पटियाला और जीन्दके नरेशोंको उस समय जो अधिकार प्राप्त थे वैसेही अधिकारोंकी सनद वृटिशसरकारने नाभानरेशको भी प्रदान करदी। सन् १८६० में ९ लाख ५० हजार ५ सौ रुपये नजराना लेकर वृटिशसरकारने झझरकी नवाबीके कानौड और बडवाना परगने भी नाभादरबारके हवाले करदिये। आगामी वर्ष सन् १८६३ में राजा भरपूरसिंहका देहान्त हो गया।

भरपूरसिंहके कोई पुत्र नहीं था इससे उनके छोटे भाई भगवानसिंह गद्दीपर बैठे। कुछ दिन बाद यह खबर उडी कि राजा भरपूरसिंह विषसे मारे गये थे।

बृटिशसरकारने यह सुनकर जांचके लिये एक कमीशन बिठाया। कमीशनमें एक बृटिश अफसर तथा पटियाला और जीन्दके नरेश बैठे। जांचसे मालूम हुआ कि भरपूरसिंह अपनी मौतसे मरे, उन्हें विष किसीने नहीं दिया। राजा भगवानसिंह बृटिशसरकारके परममित्र थे। किन्तु वह कुल ८ वर्ष राज्य करने पाये। बिना कोई सन्तान छोडे सन् १८७१ में उनका स्वर्गवास होगया सन् १८६० में तीनों फूलकियां राज्योंको एक सनद द्वारा बृटिशसरकारसे यह अधिकार प्राप्त होचुका था कि इन तीनों राज्योंमेंसे यदि किसीके नरेश बिना सन्तान मरजावें तो शेप दोनों राज्योंके नरेश एक बृटिशअफसर सहित फूलवंशके किसी कुमारको सन्तानहीन राजाका उत्तराधिकारी बनादेंगे। भगवानसिंहकी मृत्युके बाद यह अधिकार प्रथम बार काममें लाया गया। भगवान सिंहके एक दूरके सम्बन्धी हीरासिंहजी राज्यके उत्तराधिकारी माने गये और नाभेकी गद्दीपर बिठा दिये गये। आपही नाभाके वर्तमान नरेश हैं।

राजा हीरासिंहजीका जन्म सन् १८४३ में हुआ था। सन् १८७७ की १ जनवरीको दिल्लीमें लार्ड लिटनने जो दरबार किया था, राजा हीरासिंह उसमें सादर निमन्त्रित किये गये थे। इसके दो वर्ष बाद दूसरे अफगान युद्धके समय राजा साहबने सेना आदिसे अंग्रेजोंकी खूब सहायता की थी, इससे प्रसन्न होकर बृटिश सरकारने आपको जी. सी. एस. आई. की उपाधिसे विभूपित किया। नाभानरेशको सम्पूर्ण दीवानी फौजदारी अधिकार प्राप्त हैं। आपकी सलामी १९ तोपोंकी थी। गत वर्ष आपका स्वर्गवास होगया। हिन्दू और सिखसमाजके आप अग्रगण्य नेता थे। बृटिशसरकार भी विशेषरूपसे आपका आदर करती थी। वर्त्तमान नाभानरेश श्रीमान रिपुदमनसिंहजी उच्च श्रेणीके शिक्षित राजपुरुष हैं और होनहार शासक समझे जाते हैं।

वीरनिखण्ड कष्ट कर सरदामल सरदार रामलाल कृत।

राज्य और प्रजा।

इस राज्यमें ४ बडे नगर और ४८८ ग्राम हैं सन् १९०१ में २ लाख ९७ हजार ९४९ मनुष्य इस राज्यमें बसते थे। इनमें अधिकांश हिन्दू हैं। इनसे कम जट्टसिख और उनसे कम मुसलमान हैं। बावल निजामतमें

राजपूत और अहिर अधिक हैं। राज्यकी वार्षिक आय सन् १९०४ में १४ लाख ७० हजार रुपये थी।

शिल्प व्यापार।

फूल, अमलोह, जैतो और बावल निजामतके मेलोंमें गाय, बैल, भैंस, घोडे आदि पशुओंकी बहुत बिक्री होती है। बावल निजामतके महासरवाले मेलेमें प्रायः १॥ लाख रुपयेके पशु बिकजातेहैं। इसी निजामतके बेहाली तथा कान्ती नामके स्थानोंमें पत्थर खोदा जाता है। राज्यमें अनेक जगह सोने, चांदी तथा पीतलका काम होता है किन्तु, माल राज्यके अन्दर ही खप जाता है। राज्यके बाहर मट्टीके बरतन और खिलौने भेजे जाते है। गोटा नाभा नगरमें अच्छा बनता है। बाहर भी जाता है। अमलोहकी सूसी और गबरून वस्त्र अच्छा होता है। लोहेका सामान भी अच्छा बनता है। दरी और अमलोह नामेकी उत्तम होती हैं। खास राजधानी नाभामें एक जिनिङ्ग फैक्टरी तथा जैतोमें तेल निकालनेकी कल है। राज्यके बाहर अनाज बहुत जाता है। जैतोकी अनाजमण्डी बड़ी है। रुई विशेषतः अम्बालेको अधिक भेजी जाती हैं।

शासन।

राजा तीन मेम्बरोंकी एक कौन्सिलकी सहायतासे राज्यकार्य चलाते हैं। इस कौन्सिलको "इजलासे आलिया" कहते हैं। शासनके मुख्य चार विभागोंके प्रधान अफसर ये हैं-मीर मुन्शी, बख्शी, हाकिमे अदालते सद्र तथा दीवाने माल सद्र। विदेशी मामले मीरमुंशी के सपुर्द हैं। सेना और पुलिसके अध्यक्ष बखशी हैं। हाकिमे अदालते सद्र न्यायविभागका और दीवाने माल-सद्र मालविभागके प्रधान हैं। सबसे ऊंची अदालत "इजलासे आलिया" है। उसमें स्वयं महाराज बैठकर न्याय करते हैं।

शिक्षा।

राज्यभरमें १३ स्कूल हैं। राजधानीमें एक हाई स्कूल है, । बावलमें मिडिल स्कूल है। चोटियानके स्कूलमें राजाकी आज्ञा लेकर केवल सिख भरती हो सकते हैं। शिक्षापर प्रायः १० हजार वार्षिक व्यय किया जाता है। सन १९०१ में सैकड़े पीछे ४ आदमी पढ लिख सकते थे।

सेना और पुलिस।

वृटिशसरकारकी सेवाके लिये १ बटालियन पैदल पल्टन है। इसके सिवा १५० सवार, ७० पैदल, ४० गोलन्दाज और १० तोपें हैं। पुलिसकी संख्या कुल मिलाकर ८३८ है।

मुख्यस्थान।

नाभा-प्रायः २० हजार आदमियोंकी बस्ती है। सन् १७५५ में नाभानरेश हम्मीरसिंहने इसे बसाकर उसीको अपनी राजधानी बनाया। नगरके छः द्वार हैं। नगरके बीचमें एक किला हैं। वहीं राज्यके दफ्तर हैं। राजा तथा युवराजके महल नगरके बाहर पुखता बागमें। पासही मुबारक बागमें एलगिन भवन है, वहां राजाके मेहमान ठहराये जाते हैं। श्यामबागमें भूतपूर्व नरेशोंके स्मारक चिह्न बने हैं।

बावल-प्रायः ६ हजार आदमी बसते है। अलवरके चौहान राजपूत राव मिसनालने इसे सन् १२०५ में बसाया था। पीछे झझरके नवाबोंके अधिकारमें चला गया। गदरके बाद नाभा राज्यमें शामिल किया गया। इस नगरमें एक बहुत पुरानी मसजिद है, सन् १५६० में बनाई गई थी।

जीन्द.

फूलकियां राज्योंका तीसरा राज्य जीन्द है। जीन्द राज्यका विस्तार १ हजार ३ सौ ३२ वर्ग मीलमें है। संग्रूर, जीन्द और दादरी इन तीन तहसीलोंमें विभक्त है। जीन्द तहसीलमें कुरुक्षेत्रकी पवित्र भूमिका भी कुछ भाग शामिल है। दादरी तहसीलमें कुछ भाग हरियानेका और कुछ राजपूतानेका मिला हुआ है। संग्रूर राजधानी है। कोई बड़ी नदी राज्यमें नहीं है।

जीन्दका पृथक् इतिहास सन् १७६३ से आरम्भ होता है। उस वर्ष सरहिन्द विजयके बाद गजपतिसिंहने इस राज्यकी नीव डाली। गजपतिसिंह फूलकियांवाले राजाओंके पूर्व पुरुष फूलके प्रपौत्र थे। उनके पिता सुखचैनका देहान्त सन् १७५१ में हुआ था। पिताकी मृत्युके बाद उनकी जमीन्दारी तीन भाइयोंमें बँट गई। गजपतिसिंह उनके दूसरे पुत्र थे। कुछ वर्ष बाद

ज्येष्ट भ्राताकी मृत्यु होजानेसे उनकी भूमिपर भी गजपतिसिंहका अधिकार होगया। उसी समयसे उनका वैभव बढने लगा। सन् १७५५ में उन्होंने दिल्लीकी बादशाहीके जीन्द और सफीदोन परगनोंपर आक्रमण कर दिया, कर्नाल, पानीपत तक चढ गये, किन्तु अधिकांश जीते हुए परगनोंको वह अधिकारमें न रख सके। सन् १७६३ में सरहिन्दकी लडाईके बाद अपना अलग राज्य स्थापित करके जीन्द नगरको राजधानी बनाया। मुगल राज्यकी भूमिपर अधिकार जमा लेनेपर भी उन्हें मुगल बादशाहकी अधीनता स्वीकार करनी पडी। सन् १७७२ में बादशाहने गजपतिसिंहको एक फर्मान द्वारा वंश परम्पराके लिये राजा बना दिया।

सन् १७७४ में जीन्द और नाभामें युद्ध छिड गया। राजा गजपतिसिंहने नाभा राज्यके संगूर, भादसोन और अमलोह, तीन इलाकोंपर अधिकार कर लिया। पीछे पटियाला दरबारके बाध्य करनेपर अमलोह और भादसोन लौटा दिये, किन्तु संगूरका इलाका नहीं छोडा। दूसरेही वर्ष दिल्लीकी सरकारने अपनी खोई हुई भूमि जीन्दनरेशसे वापस लेनेके लिये उनके राज्यपर आक्रमण कर दिया, किन्तु तीनों फूलकियां राज्योंने ऐसा सामना किया कि शाही सेनाको हानि उठाकर पीछे हटना पडा। युद्ध समाप्त होतेही जीन्दनरेशने जीन्द नगरमें एक किला बनवाया। इसके कुछ दिन बाद पटियालाके शरीक होकर उन्होंने शाही परगने रोहतकपर आक्रमण कर दिया। किन्तु शाही सेनाने इन्हें पीछे हटा दिया। हताश न होकर दोनों नरेशोंने इसके बाद मेरठपर चढाई की; किन्तु मुगल सेनासे हारना पडा। लडाईमें गजपतिसिंहको मुसलमान जनरलने कैद करलिया किन्तु पीछे कई लाख रुपये लेकर छोड दिया। इसके बाद गजपतिसिंह कुछ वर्षतक शान्तिपूर्वक राज्य करके सन् १७८९ में मरगये।

गजपतिसिंहके दो पुत्र थे, भागसिंह और भूपसिंह। भागसिंह राजगद्दीपर बैठे, भूपसिंहको बहूखांका इलाका मिला। उस समय मराठों और अङ्गरेजोंमें युद्धकी तैयारियां होरही थीं। भागसिंहने मराठोंका साथ न दिया, अंग्रेजोंके मित्र बने रहे। उत्तर भारतमें सिंधियाका राज्य जीतकर अङ्गरेजी जनरल लेक पश्चिमकी ओर बढते गये। कुछ समय बाद जब यशोवन्तराव होल्कर दिल्लीसे

पंजाबकी ओर भागे तो भागसिंहने ससैन्य जनरल लेकके साथ व्यासा नदीतक उनका पीछा किया। नदीके पार सिखपति महाराज रणजीतसिंहकी अमल्दारी थी, इससे राजा और जनरल वहीं रुक गये। पीछे लेकने भागसिंहको अङ्गरेजोंका दूत बनाकर रणजीतसिंहके दरबारमें भेजा और प्रार्थना की, कि सिखनरेश होल्करको सहायता न दें। भागसिंह रणजीतसिंहके मामा थे, रणजीतसिंहकी माता राजकौर भागसिंहकी बहन थीं। मामाके समझानेसे रणजीतसिंहने अंग्रेजोंका कहना मानलिया और होल्करको शरण न दी। इस सफलतासे प्रसन्न होकर अंग्रेजोंने बवानेका परगना भागसिंहको दे दिया। इसके कुछ वर्ष बाद रणजीतसिंहने लुधियाना जिलेकी वह भूमि जीन्दनरेशको प्रदानकी जो अब जगरांव, जडाला, बसियां और रायकोट इलाकोंमें शामिल हैं। कुछ काल पश्चात्, सन् १८१९ में, ३६ वर्ष राज्य करके राजा भागसिंहका देहान्त होगया।

भागसिंहके बाद उनके पुत्र फतहसिंह गद्दीपर बैठे, किन्तु यह कुल ३ वर्ष राज्य करके सन् १८२२ में मर गये। इनके पुत्र संगतसिंह तब राज्यके मालिक हुए; किन्तु उस समय राज्यमें ऐसा विद्रोह आरंभ हुआ कि संगतसिंहको राजधानी छोडकर भागना पडा। सन् १८३४ में विना कोई सन्तान छोडे संगतसिंहका भी देहान्त हो गया। राज्यका कोई वारिस न होनेसे बृटिशसरकारने समस्त जीन्द राज्यपर अधिकार कर लिया। किन्तु १८३७ में बायजीदपुरके स्वरूपसिंहने गद्दीपर अपना हक साबित किया। बृटिशसरकार जांच करके सन्तुष्ट हो गई कि वास्तवमें स्वरूपसिंह राजा संगतसिंहके सम्बन्धी हैं, इससे उन्हींको राज्यका उत्तराधिकारी स्वीकार करके जीन्द राज्यका अधिकांश भाग उन्हें सौंप दिया। राजा गजपतिसिंहकी मृत्युके बाद जो भूमि जीन्दनरेशोंने प्राप्त की थी वह बृटिशसरकारने नहीं लौटाई, उसकी वार्षिक आय उस समय १ लाख ८२ हजार रुपये थी। स्वरूपसिंहको जितना राज्य मिला उसमें ३२२ ग्राम थे, वार्षिक आय ३ लाख ३६ हजार रुपये थी।

सिख-अंग्रेज युद्धके समय राजा स्वरूपसिंहने अंग्रेजोंकी रसद और सेनासे, खूब सहायता की। इसीके बदलेमें बृटिश सरकारने उन्हें ५०००

वार्षिक आयका एक इलाका दे दिया । पीछे १०००) की आमदनीका एक और इलाका दिया । सन् १८४७ में राजा और अंग्रेजोंके बीच एक प्रतिज्ञापत्र लिखा गया । इसके अनुसार अंग्रेज सरकारने एक सनद राजाको प्रदान करके वचन दिया कि राजा या उनके वंशजोंसे वृटिशसरकार कमी कर या किसी प्रकारकी मालगुजारी या फौजी सहायताके बदले धन न मांगेगी । इधर राजाने यह प्रतिज्ञा की कि किसीसे युद्ध छिडनेपर वह सदा अंग्रेजोंकी सब तरह सहायता करेंगे, फौजी सडकोंको उत्तम दशामें रखेंगे और सती, कन्याहत्या तथा दासत्वकी प्रथाको उठा देंगे । इसी प्रतिज्ञाके अनुसार दूसरे सिखयुद्ध तथा सन् १८५७ वाले गदरमें राजा स्वरूपसिंहने अंग्रेजोंका अच्छा साथ दिया । गदरके समय स्वयं राजा राजधानीसे निकलकर ससैन्य कर्नाल जिलेमें घुसगये और अंग्रेजी छावनीकी रक्षा करके उन्होंने यमुना नदीपर बागपतके घाटपर अधिकार जमा लिया । राजाके ऐसा करनेसेही मेरठवाली अंग्रेजी सेना कुशलसे और शीघ्रतापूर्वक इसी घाटपर नदीपार करके दिल्लीकी अंग्रेजी सेनासे जा मिली । दिल्लीके पास अलीपुरकी लडाईमें भी राजा उपस्थित थे । लेकिन उसी समय खबर मिली कि खास उनके राज्यमें बगावत शुरू होगई । इससे राजा अपने राज्यको लौट गये । वहाँ शांति स्थापित करके वह फिर दिल्ली चले गये । दिल्ली जीतनेके समय राजा स्वरूपसिंहने बडी वीरता और रणकौशल दिखाया था । दिल्ली जीतनेके बाद वृटिशसरकारने ऐसी सेवाका बहुत उत्तम बदला दिया । बहादुरगढके बागी नवाबका राज्य जब्त करके अंग्रेज सरकारने राजा स्वरूपसिंहको प्रदान करदिया । यही वर्त्त-मान दादरीका इलाका है । इसके अतिरिक्त संगरूरके निकट और १३ ग्राम भी दिये । उसी समय जीन्दनरेशकी सलामी ११ तोपोंकी मुकर्रर हुई और अन्य फूलकियां राज्योंकी तरह जीन्दनरेशको भी दत्तक पुत्र लेनेका अधिकार मिल गया ।

सन् १८६४ में राजा स्वरूपसिंहका स्वर्गवास होगया । उनके पुत्र रघु-बीरसिंह गद्दीपर बैठे । यह राजा भी बडे प्रतापी थे । अफगान युद्धमें उन्होंने वृटिशसरकारकी भलीभांति सहायता की थी । इससे प्रसन्न होकर

सरकारने जीन्दनरेशको "राजये राजगान" बना दिया । सन् १८८२ में मिसर देशमें अंग्रेजोंसे युद्ध छिडनेपर राजा रघुबीरसिंहने फिर सहायता देना चाही किन्तु बृटिशसरकारने धन्यवाद सहित उसे अस्वीकार करदिया। राजा रघुबीरसिंहने संग्रूरको जयपुरके ढंगपर बनवाकर उसीको अपनी राजधानी बनाया। जीन्द, सफीदोन और दादरीमें भी बहुत कुछ सुधार किया । सन् १८८७ में राजा रघुबीरसिंहका देहान्त होगया । उसके बाद उनके पौत्र वर्त्तमान जीन्दनरेश राजा रणवीरसिंह गद्दीपर बैठे । राज्याभिषेकके समय आपकी उम्र कुल ८ वर्षकी थी इससे आपके बालिग होनेतक रिजेन्सी कौन्सिल राज्यकार्य चलाती रही। सन् १८९९ में राजा साहबको संपूर्ण राज्याधिकार प्राप्त होगये ।

शिल्प व्यापार ।

जीन्द राज्यमें सोने चांदी तथा लकडी और चमडेका काम कई स्थानोंमें अच्छा बनता है। दादरी और संग्रूरका चमडेका सामान जैसे जूते, घोडेका साज आदि अच्छा होता है। संग्रूरमें स्त्रियोंका बनाया जरीका काम उत्तम होता है। बाहर भी जाता है। जीन्दमें एक जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है।

शिक्षा ।

सन् १९०१ में सैकडा पीछे दो आदमी लिख पढ सकते थे । छोटे बडे सब मिलाकर २९ स्कूल सन् १९०४ में थे, उसी वर्ष उनमें ७९१ विद्यार्थी पढते थे। संग्रूरमें डायमण्ड जुबिली कालिज है। शिक्षापर राज्यका प्रायः १०-१२ हजार रुपया वार्षिक व्यय होता है।

सेना ।

इम्पीरियल सर्विस पल्टनमें ६०० सिपाही हैं । राज्यकी सेनामें ९६० पैदल, २२० सवार और ८० गोलन्दाज हैं। कामके लायक १६ तोपें हैं।

प्रधाननगर ।

दादरी-सन् १९०१ में ७००९ मनुष्य इस नगरमें बसते थे। यह नगर अतिप्राचीन बताया जाता है लेकिन उस समयका कुछ इतिहास मालूम नहीं। सन् १८५७ में झझरके नवाबकी बगावतके बाद बृटिश सरकारने

यह नगर और इलाका जीन्दनरेशको प्रदान कर दिया । सोमेश्वर नामका तालाब मुगल बादशाह मुहम्मदशाहके खजांची सीतारामने खुदवाया था ।

जीन्द–राज्यकी पुरानी राजधानी है। सन् १९०१ में ८०४७ आदमियोंकी बस्ती थी। जीन्द नरेशोंका राज्याभिषेक इसी नगरमें होता है । जीन्द नगर कुरुक्षेत्रकी पवित्र भूमिमें है। पांडवोंने युद्धके बाद यहां जयन्ती देवीका एक मंदिर बनवाया था। इसीसे नगरका नाम जयन्तीपुरी पडा। यह बिगडते बिगडते जीन्द होगया । सन् १७५५ में गजपतिसिंहने इसे मुगलबादशाहसे छीन लिया। सन् १७७५ में रहीमदादखां नामके सरदारको बादशाहने जीन्दपर चढाई करनेकी आज्ञा दी । सफीदोन नगरके पास युद्ध हुआ। मुगल सरदार मारा गया, शाही सेना भाग गई । उस लडाईकी कई चीजें नगरमें रखी हैं। जीन्दमें प्राचीन समयके अनेक मंदिर और तीर्थ स्थान हैं। फतहगढका किला राजा गजपतिसिंहने बनवाया था।

संग्रूर–जीन्द राज्यकी वर्तमान राजधानी। सन् १९०१ में ११ हजार ८ सौ ९२ आदमी बसते थे। सन् १८२७ में एक साधारण ग्राम था। राजा संगतसिंहने उसी वर्ष इसे अपनी राजधानी बनाया। इसी नगरमें एक कालिज है।

सफीदोन–प्राचीन नाम 'सर्पदमन' राजा परीक्षित्‌को यहींके एक सर्पने डसा था। उनके पुत्र राजा जनमेजयने पिताकी मृत्युका बदला लेनेके लिये इस प्रान्तके सर्पोंको दमन करा दिया इसीसे सर्पदमन नाम पडा। अब बिगडकर सफीदोन होगया। यहां नागक्षेत्र नामका पवित्र कुंड है।

स्वर्गीय

नवाब बहावलपुर।
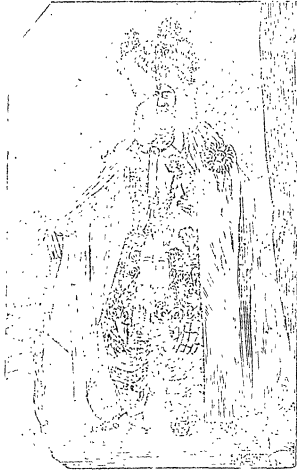
नवाब सादिक मुहम्मदखाँ।

बहावलपुर.

बहावलपुर राज्य ।

पंजाबके दक्षिण पश्चिम कोनेमें १५ हजार ९ सौ १८ वर्गमील भूमिमें विस्तृत है। इसके पूर्व ओर राजपूताना, दक्षिणमें सिंध, पश्चिममें सिन्धु और सतलज नदी और उत्तरमें फीरोजपुरका जिला। राज्यकी अधिकसे अधिक लम्बाई ३०० मील है और चौडाई ४० मील। रेगिस्तानवाले भागमें हकडा नामकी खाल है। किसी समय कोई वडी नदी उसमें वहती थी यह सब मानते हैं लेकिन इसका निश्चय अभी नहीं हुआ कि वह नदी घग्गड थी, जो अब सिरसेके आगे रेगिस्तानमें गुम होजाती है, या यमुना अथवा सतलज किसी समय इसी ओर वहती थीं।

बहावलपुर राज्य अब्बासी दाऊदपुत्र जातिके दाऊदखांने स्थापित किया था। यह जाति अपनेको मिसरके अब्बासी खलीफाओंके वंशमें वताती है। अहमदशाह दुर्रानीके डरसे सिन्धसे भागकर इस प्रांतमें बस गई। धीरे धीरे भूमिपर अपना अधिकार करके दाऊदखां नवाव वन बैठा। दाऊदखांके वाद उसका पुत्र मुवारक सिंहासनारूढ हुआ। उसने खण्डालका परगना जीतकर देरावल नगरको अपनी राजधानी वनाया। उसके वाद बहावलखांने अपने नामपर बहावलपुर वसाकर उसीको राजधानी वनाया, सन् १७८० में कावुलनरेशने बहावलपुर पर आक्रमण किया। बहावलखां उनका सामना न करसके और अधीनता स्वीकार करली। उनके पुत्र मुवारकने वापसे वगावत की। बहावलखांने उसे पकडकर कैद कर दिया किन्तु अपनी मृत्युके समय मुक्त कर दिया। किन्तु सरदारोंने उसे मारकर उसके छोटे भाई सादिक महमूदको सिंहासनपर विठाया। सादिक महमूदके समय राज्यकी बहुत उन्नति हुई।

सादिक महमूदके वाद तीसरे बहावलखां सिंहासनपर बैठे। इन्हें रणजीतसिंहका भय सदा लगा रहा। बृटिश सरकारसे रक्षा की कई वार प्रार्थना

र्को, किन्तु सन १८०९ वाले संधिपत्रके कारण अंग्रेजोंने सहायता देनेसे इनकार करदिया।

सन् १८३३ में अंगरेजों और नव्वाब के मध्य व्यापार संबन्धी कुछ बात चीत होने के बाद एक संधिपत्र लिखा गया, सन् १८३८ में एक राज-नीतिक संधि भी हुई। इसके अनुसार नव्वाब स्वतन्त्र नरेश मानेगये और व्यापारके लिये सिन्धु और सतलजके मार्ग खोल दिये गये।

प्रथम अफगानयुद्ध छिडनेके समय नवाब वहावलखांने अंग्रेजी सेनाको रसद आदिसे भलीभांति सहायता की और सन् १८४७-४८ में मुलतानकी चढाईपर भी उन्होंने अंग्रेजी जनरल एडवार्डेसका अच्छा साथ दिया। ऐसी उत्तम सेवासे प्रसन्न होकर सरकारने सब्ज़लकोट और भुंगके जिले नवाबसा-हवको देकर उनकी १ लाख रुपये सालाना पेन्शन भी नियत करदी।

वहावलखांकी मृत्युके बाद उनके सिंहासनके लिये उत्तराधिकारियोंमें बहुत वादविवाद आरंभ हुआ। नवाब अपने कनिष्ठ पुत्रको नवाब बनागये थे किन्तु मृत्युके बाद ज्येष्ट पुत्रने यह स्वीकार नहीं किया इसीसे घरेलू लडाइयां शुरू होगईं। अन्तमें ज्येष्ठभ्राताकी ही जय हुई छोटे भाईने भागकर बृटिशअमल-दारीमें शरण ली। बृटिशसरकारने प्रबन्ध करके वहावलपुर राज्यसे उनको कुछ वार्षिक पेन्शन नियत करा दी। वह एक प्रकार नजरबंद रहने लगे। पीछे उन्होंने फिर अपना दावा राज्यपर दिखाना चाहा इससे सरकारने उन्हें लाहोरके किलेमें कैद करदिया। वहीं सन् १८६२ में उनका देहांत होगया।

उधर वहावलपुरमें नये नवाब साहबके जुल्म और बुरे शासनसे देशमें हलचल पडगई। सन् १८६३ और ६६ में अनेक बलवे खडे होगये; किन्तु नवाबने एक एक करके सब बागियोंको दबा लिया। मार्च सन् १८६६ में नवाब एकाएक मरगये। उस समय ऐसा सन्देह किया गया था कि वह विष देकर मारडाले गये। जो हो; उनकी मृत्युसे देशमें शीघ्रही शांति स्थापित होगई।

उनके बाद उनके नाबालिग पुत्र चतुर्थ नवाब सादिक मुहम्मदखां सिंहा-सनपर बैठे। राज्याभिषेकके समय उनकी उम्र कुल ४ वर्षकी थी। यह देख

बृटिशसरकारने राज्यका शासनकार्य अपने हाथमें ले लिया । सन् १८७९ में नवाबके बालिग होने तक उसे चलाती रही। इसके बाद शासनके समस्त अधिकार युवा नवाब को प्रदान किये गये और उनकी सहायताके लिये ६ योग्य पुरुषोंकी एक कौन्सिल भी कायम करदी गई । इन नवाब साहबने बहुत उत्तम रीतिसे राज्यका शासन किया । सन् १८८० वाले अफगान-युद्धमें उन्होंने बृटिशसरकारकी सब तरह सहायता की और अपनी सेना डेरा गाजीखां जिलेकी रक्षाके लिये भेजदी थी।

सन् १८९९ में नवाब सादिक मुहम्मदका देहांत होगया । इनके पुत्र पांचवें नवाब बहावलखां भी उस समय नाबालिग थे। चार वर्ष बाद बालिग होजानेपर समस्त शासनाधिकार आपको प्राप्त होगये । यह नवाब साहब शिक्षित और सुयोग्य शासक थे; किन्तु अधिक कालतक राज्य न कर सके, ठीक उठती जवानीमें इस संसारसे कूच कर गये । सन् १९०७ में आप दल बल सहित हज करने मक्के पधारे थे। वहांसे लौटते हुए राहमें ही आपका देहान्त होगया। आपके बाद आपके पुत्र पांचवें नवाब हाजी सदिक मुहम्मदखां अब्बासी सिंहासनपर बैठाये गये। इनकी अवस्था इस समय कुल ४ वर्षकी है।

बहावलपुरके नवाबोंकी सलामी १७ तोपोंकी होती है।

शिल्प व्यापार।

इस राज्यमें लुङ्गी बहुत अच्छी बनती है। सूती रेशमी वस्त्र भी उत्तम बुना जाता है। बहावलपुर और खानपुरमें धातुके बर्त्तन बनते हैं। पूर्वीय अहमद तथा खैरपुरके रोगनी मिट्टीके बर्त्तन तथा जूते और रंगीन वस्त्र अच्छे होते हैं। गत १० वर्षमें व्यापारकी यहां अच्छी उन्नति हुई है । इसी अरसेमें चावल साफ करनेकी ९ कलें स्थापित हो चुकी है। जिनिङ्गके भी कई कार-खाने हैं। राज्यके बाहर विशेषतः गेहूँ, चना, लकडी, शोरा, नील, खजूर, आम तथा अन्य कई फल भेजे जाते हैं।

शिक्षा।

सन् १९०१ में सैकडे पीछे २ आदमी लिख पढ सकते थे । बहावलपुर नगरमें सादिक एजर्टन कालिज और एक हाईस्कूल है। एक स्कूल पादरियोंका

है । राज्यभरमें ७ अंग्रजी स्कूल, ३२ आरम्भिक पाठशालायें तथा ६ इस्ला-मधर्मके शिक्षालय हैं । सन् १९०४ में शिक्षाका खर्च ३३ हजार रुपये था ।

सेना ।

इम्पीरियल सर्विस अर्थात् बृटिश सरकारकी सेवाके लिये 'सिलादार कैमिल ट्रान्सपोर्ट कोर' नामका रसद पहुँचानेवाला ऊँटोंका रिसाला है । इनके सिवा सांडनीसवारोंका एक जङ्गी रिसाला है । इसमें कुल मिलाकर १६९ अफसर और सवार हैं । रिजर्व कम्पनीमें ८० सैनिक हैं । राज्यकी सेनामें अफसरों सहित ५९९ आदमी हैं । कामके लायक १३ तोपें तोपखानेमें हैं । सेनाका कुल खर्च प्रायः २ लाख रुपये सालाना है ।

मुख्य स्थान ।

बहावलपुर–राजधानी, सतलज नदीके दक्षिणी तटपर है । सन् १९०१ में १८ हजार ९सौ ४६ आदमियोंकी वस्ती थी । नवाब बहावलखांने सन् १७४८ में इसे बसाया । नगर प्रायः ४ मीलके घेरेमें है । नवाबका महल आलीशान इमारत है । छतपरसे बीकानेरका विस्तृत रेगिस्थान दूरतक दिखता है । नूरमहलमें राज्यके मेहमान उतारे जाते हैं । यहमी अच्छा महल है । सन् १८७५में १२ लाख रुपयेके व्ययसे बनवाया गया था । नगरमें दो अस्पताल, एक कालिज, तीन स्कूल और एक अनाथालय है । व्यापार उन्नत दशामें है ।

बीजनोट–प्राचीन समयका किला है । कहते हैं, राजा बंझो या बीजा भाटियाने बनवाया था । सन् ११७५में शहाबुद्दीन गोरीने इसे तुडवा डाला । कर्नल टाडके कथनानुसार यह किला बीजारायके पिता और दिवराजके दादाने बनवाया था । दिल्लीके बादशाह अलतमशके समय यह एक स्वतन्त्र सूबा था, लेकिन पीछे मुलतान सूबेमें शामिल करदिय

मारोट–हकडेकी खालमें बहनेवाली नदीके तटपर किसी समय अच्छा नगर था । कहते हैं, चीतोडके नरेश महरूटने बसाया था । दिल्लीमुलतानवाली सडक इसी नगरमेंसे जाती थी ।

पट्टन मुनारा–यहां किसी वडे प्राचीन नगरके खण्डरात हैं। बौद्धोंके समयके भवन, विहार आदिके चिह्न अबभी मौजूद हैं। एक वृहदाकार बुर्जका कुछ भाग बाकी रहगया है। कहते हैं, किसी समय यह बुर्ज तीन खण्डका था और इसके इर्दगिर्द एक बहुत बडा नगर बसा हुआ था। कोई कोई इसे मौशिकानस नामके राजाकी राजधानी बताते हैं। यह नरेश सिकन्दरके समयमें हुआ है। एक संस्कृत शिला लेखसे माळूम हुआ है कि वहां अति प्राचीनकालमें कोई मठ था।

सुईविहार–यहां किसी प्राचीन बौद्धमन्दिर या बुर्जके खण्डरात हैं।

उच्च–सर कनिंघम इसे सिकन्दरका बसाया हुआ बताते हैं। १२ वीं शताब्दिमें इसे देवगढ कहते थे। मुसलमानोंका तीर्थ स्थान है।

कपूरथलानरेश-

श्रीमान् फर्जन्दे दिलवन्द, रासिखुल इक्तदार दौलते इंग्लिशिया, राज्ये-राजगान।

राजा जगजीतसिंह बहादुर

के. सी. एस. आई.।

कपूरथला।

व्यासानदीके पूर्वीय तटपर कपूरथला राज्य प्रायः ६२१ वर्गमीलमें विस्तृत है। एक भाग, फगवाडा, जलंधर जिलेमें हैं।

कपूरथला राजवंशकी उत्पत्ति जैसलमेर घरानेके एक राजपूत सरदार राना कपूरसे बताई जाती है। कहते हैं कि प्रायः ९०० वर्ष पहले इन सरदारने कपूरथला बसाया, किन्तु राज्यकी नीव सरदार जस्सासिंह या जस्सा कलालने डाली थी। वारी दोआवका अहलू नामक ग्राम राजवंशका आदि निवास-स्थान था, इसीसे कपूरथलानरेश अहलूवालिया कहलाते है।

सरदार जस्सासिंहके समयतक इस घरानेके अधिकारमें बहुत कम भूमि थी। जस्सासिंहने तलवारके जोरसे सन् १७८० तक वारी दोआवकी बहुतसी भूमि पर अधिकार करलिया। पीछे सतलजपारकी कुछ भूमि उसने जीतकर अपने राज्यमें शामिल करली। इसके सिवा सन् १८०८ में कुछ भूमि महाराज रण-जीतसिंहने भी जस्सासिंहको प्रदान करदी। इस प्रकार १९ वीं शताब्दिके आरम्भमें कपूरथला राज्यका खासा विस्तार होगया था।

सन् १८०९ में कपूरथला और वृटिश सरकारमें परस्पर एक संधिपत्र स्वीकार किया गया। इसके अनुसार कपूरथलाके सरदार फतहसिंहने युद्धके समय रसद आदिसे वृटिशसेनाकी सहायता करनेकी प्रतिज्ञा की फतहसिंहके वाद उनके पुत्र सरदार निहालसिंह गद्दीपर बैठे। इन्हींके समय सिख–अङ्गरेजयुद्ध आरम्भ हुआ था। बापकी प्रतिज्ञाको भूलकर निहालसिंहने युद्धमें सिखोंका साथ दिया और अलीवालकी लडाईमें अंग्रेजोंसे लडे। इस अपराधके लिये अंग्रेज सरकारने युद्धके बाद कपूरथलेका इलाका जब्त कर लिया। किन्तु सन् १८४६ में सतलजके उत्तरवाला इलाका सरदार निहालसिंहको कुछ कर नियत करके सपुर्द कर दिया। उसी समय वारी दोआववाली भूमि भी लौटा दी किन्तु उसके पुलिस सम्बन्धी प्रबन्धका अधिकार अपनेही हाथमें रखा। सन् १८४९ में निहालसिंह राजा बनाये गये। इसके तीन वर्ष बाद सन् १८५२ में उनका देहान्त होगया।

तत्पश्चात् उनके पुत्र रणधीरसिंह सिंहासनपर बैठे। गदरके समय रणधीरसिंहने अङ्गरेजोंकी हरतरह सहायता की और जलंधर दोआबमें शांति स्थापित रखी। इसके अतिरिक्त राजा ससैन्य अङ्गरेजोंके साथ अवधपर चढगये और वहां शान्ति स्थापित करनेमें अङ्गरेजोंका खूब हाथ बटाया। इस सेवाके बदले बृटिश सरकारने आपको बहराइच जिलेके बोंडी और इकौना तथा बारावंकी जिलेका भिटौली इलाका प्रदान करदिया। इन तीनों इलाकोंका विस्तार प्रायः ७०० वर्गमीलमें है। इनकी वार्षिक आय १३ लाखसे ऊपर है। सरकारी कर प्रायः ३ लाख रु० सालाना देना पडता है। इन इलाकोंपर कपूरथलानरेशोंको शासनाधिकार प्राप्त नहीं है, किन्तु अवधके ताल्लुकदारोंके मुकाबिलेमें बडाईके लिये कपूरथलानरेश अवध प्रान्तमें "राजये राजगान" कहे जाते हैं। सन् १८६२ में अन्य पंजावी नरेशोंकी भांति कपूरथला नरेशको भी दत्तक पुत्र बनानेका अधिकार मिलगया। २ वर्ष बाद रणधीरसिंह जी. सी. एस. आई. की उपाधिसे विभूषित किये गये। सन् १८६९ में आप विलायत यात्राके लिये रवाना हुए, वहांसे लौटते हुए अदनमें, अप्रैल सन् १८७० में, आपका देहान्त होगया।

तब उनके पुत्र खड्गसिंह सिंहासनपर बैठे। किन्तु वह शासनके योग्य नहीं समझे गये, इससे बृटिश सरकारने सन् १८७५ में शासनकार्य जलंधर कमिश्नरके अधीन एक सुपरिन्टेन्डेण्टके सपुर्द कर दिया। अगले वर्ष श्रीमान् प्रिन्स आव वेल्स अर्थात् वर्त्तमान महाराज एडवर्ड लाहौर पधारे। राजा खड्गसिंह भी उनसे भेट करने गये थे। इसके कुछ मास पश्चात् राजा खड्गसिंहका देहान्त होगया।

आपके पुत्र वर्त्तमान कपूरथलानरेश, राजा जगजीतसिंहजी सितम्बर सन् १८७७ में सिंहासनारूढ हुए। उस समय आप कुल ६ वर्षके थे, इससे राज्यकार्य चलानेके लिये एक रिजेन्सी कौन्सिल स्थापित की गई। सन् १८९० में राजा बालिग होगये इससे उसी वर्ष २४ नवम्बरको समस्त राज्याधिकार आपको प्राप्त होगये।

: कपूरथलानरेश १ लाख ३१ हजार रुपये वार्षिक कर बृटिश सरकारको करते हैं। इनकी सलामी ११ तोपोंकी होती है।

शिल्प व्यापार।

फगवाडेमें कई धातुओंके बरतन अच्छे बनते हैं। सुलतानपुरके रङ्गीन छपे हुए कपडे खूब होते हैं। इसकी चादरें, फूलकारियां, परदे, जाजम आ बहुत खूबसूरत बनाई जाती हैं। यूरपको बहुत भेजी जाती हैं।

शिक्षा।

सन् १९०१ में सैकडे पीछे ३ आदमी लिख पढ सकते थे। सन् १९०४ में २९४७ विद्यार्थी राज्यभरमें शिक्षा पाते थे। सन् १९०७ राज्यमें २७ आरम्भिक और ९ बडे स्कूल थे। राजधानी कपूरथलामें एक कालिज है। गत पूर्व वर्ष २०९ कन्यायें स्कूलोंमें शिक्षा पाती थीं। शिक्षापर प्रायः २८०००) वार्षिक व्यय होता है।

सेना।

इम्पीरियल सर्विसके लिये एक बटालियन पल्टन है। राज्यकी पल्टनमें ९९ सवार २४८ पैदल और २१ गोलन्दाज है। ८ तोपें कामकी हैं। बाडी-गार्ड रिसालेमें २० सवार है।

मुख्य स्थान।

कपूरथला–राजधानी है। सन् १९०१ में १८ हजार ५ सौ १९ आदमी बसते थे। ११ वीं शताब्दिमें राना कपूरने इसे बसाया, पीछे मुसल-मानोंके हाथमें पडगयी। सन् १७८० में सरदार जस्सासिंहने इसे छीनकर कपूरथला राज्यकी नींव डाली। यहीं रणधीर कालिज, एक हाईस्कूल तथा एक कन्यापाठशाला है।

फगवाडा–जलंधर दोआबमें एक बडा कसबा है बस्ती १४१०८ आदमियोंकी है। व्यापार उन्नत दशामें है।

सुलतानपुर–कपूरथलेके दक्षिण प्रायः ९ हजारकी बस्तीका एक छोटा-सा कसबा है। महमूद गजनवीके एक जनरल, सुलतानखां लोदीने ११ वीं शताब्दिमें बसाया था। यहां पुराने जमानेकी एक सराय और दो पुल बाकी रह गये हैं। औरंगजेब और उसके भाई दाराशिकोहने इसी स्थानमें एक मौलवी-साहबसे आरम्भिक शिक्षा पाई थी।

चम्बा.

चम्बा राज्य पञ्जाबके उत्तर पर्वत मालाओंसे घिरा हुआ प्रायः ३२१६ वर्गमीलमें फैला हुआ है इसके पश्चिममें काश्मीर, पूर्वमें कांगडा तथा दक्षिणमें गुरुदासपुर जिला है। राज्यमें दो बडी नदियां हैं, चनाब और रावी। राज्यके अन्दर चनाबका नाम है चन्द्रा। चन्द्राकी घाटी उत्तरमें है और रावीकी दक्षिणमें। राज्यमें २१ हजार फुटतक ऊंचे पहाड हैं। इसी कारण वहां ऋतुके अनेक परिवर्त्तनोंका अनुभव होता रहता है।

इस राज्यका इतिहास बहुत प्राचीन है। अनेक शिला तथा ताम्रपत्र लेखोंसे इसके पूर्व इतिहासकी भलीभांति तस्दीक हो चुकी है। कहते हैं छठी शताब्दिमें मारोट नामके सूर्यवंशी राजपूत सरदारने इस राज्यकी नीव डाली थी। उसीने ब्रह्मपुरा नगर बसाया जो अब ब्रह्मौर कहा जाता है। सन् ६८० में मेरु वर्मा नामके चम्बानरेशने अपने राज्यका और भी विस्तार किया। सन् ९२० में साहिल वर्माने चम्बानगर बसाया। मुगलोंके भारत—आक्रमणके समयतक चम्बा, कभी स्वतन्त्र और कभी काश्मीरके अधीन चला आता था। मुगलशासनकालमें मुसलमानोंके अधीन हो गया, लेकिन उसके भीतरी शासनमें कोई हस्तक्षेप नहीं किया गया। सिखोंके समय भी चम्बापर कोई आंच नहीं आई।

सन् १८४६ में राज्यका सम्बन्ध बृटिश राज्यसे हो गया। उसी वर्ष रावीके पश्चिमवाला भाग काश्मीरको दे दिया गया, किन्तु अगले वर्ष वह फिर चम्बाको लौटा दिया गया और राज्यकी सीमा निश्चित कर दी गई। सन् १८४८ में राज्यकी सनद भी परम्पराके लिये चम्बानरेश राजा श्रीसिंहको प्रदान की गई। इसके बदले राजाने १० हजार रुपये वार्षिक कर और युद्धके समय सेना और सामान देनेकी प्रतिज्ञा की। पीछे सन् १८५४ में डलहौसी और सन् १८६७ में बक्लोह और बाल्लनकी भूमि बृटिश सरकारने अपनी सेनाकी छावनीके लिये मांग ली, इससे वार्षिक कर ५ हजार रुपया रह गया। सन् १८७० में राजा श्रीसिंहका देहान्त हो गया। आपके कोई सन्तान

नहीं थी। आपके भाई सुचेतसिंहने राज्यका दावा किया किन्तु बृटिशसरकारने एक दूसरे भाई गोपालसिंहको गद्दीपर बिठाया। किन्तु कुछ दिन बाद गोपालसिंह शासनके योग्य न समझे गये, इससे उन्हें गद्दीसे उतारकर सन् १८७३ में उनके पुत्र श्यामसिंहको गद्दीपर बिठाया गया। श्यामसिंह उस समय नाबालिग थे। उनके बालिग होने तक राज्यकार्य एक रिजेन्सी कौन्सिल चलाती रही। कौन्सिलके शासनकालमें राज्यकी बहुत उन्नति हुई। श्यामसिंहके बालिग होनेपर कुल अधिकार उन्हें सौंप दिये गये। सन् १९०४ उन्होंने राजगद्दी त्याग दी। इससे वर्तमान चम्बानरेश राजा भूरेसिंहजी सिंहासनपर बिठाये गये। आप योग्य और विचारवान् शासक हैं। आप के. सी. एस. आई. और सी. आई. ई. की उपाधियोंसे विभूषित हैं। आपकी सलामी ११ तोपोंकी होती है।

शिल्प व्यापार।

अल्लौर और चौरेमें लोहेकी खानें हैं। अन्यत्र अभ्रक और तांबेकी खानें हैं। किन्तु यह सब प्रायः बन्द हैं। डलहौसीके पास स्लेट पत्थर निकलता है। शिल्प दस्तकारीका प्रायः नाम नहीं है। लोग अपनेही कामकी चीजें बना लेते हैं। कहीं कहीं लकडी और पीतलका काम होता है। कहीं मोटे कपडे बुने और रंगे जाते हैं। राज्यके बाहर शहद, लकडी ऊन आदि जाता है।

आय व्यय।

राज्यका वार्षिक आय ४ लाख ९८ हजार रुपये हैं। खर्चमें वह कर भी शामिल है जो बृटिशसरकारको दिया जाता है।

सेना।

राज्यकी सेनामें ३१ सवार ३७० पैदल, १६ गोलन्दाज और ४ तोपें हैं।

शिक्षा।

सन् १९०९ में राज्यभरमें ८ स्कूल और २०६ विद्यार्थी थे। एक स्कूल लडकियोंका भी है।

मुख्य स्थान ।

ब्रह्मौर—चम्बाकी प्राचीन राजधानी थी । अब कुल २९३ आदमी बसते हैं । यहां तीन प्राचीन मन्दिर हैं—एक लक्षणादेवीका, जो ७ वीं शताब्दिमें राजा मेरु वर्माने स्थापित किया था, दूसरा नृसिंह भगवानका; यह लकडीका मन्दिर है, तीसरा मणिमहेशका, यह सन् १४१७ में स्थापित किया गया था । लक्षणादेवीके मन्दिरमें प्राचीन समयकी लकडीकी नकाशीके अत्युत्तम नमूने देखे जा सकते हैं ।

चम्बा—राजधानी है । प्रायः ६००० आदमियोंकी वस्ती है यहां लक्ष्मी-नारायणका मंदिर देखने योग्य है । सम्भवतः १० वीं शताब्दिमें यह स्थापित किया गया था ।

चित्रादी—रावीके तटपर प्राचीन ग्राम है यहां भी ७ वीं शताब्दिका एक देवस्थान है ।

मंडी ।

पञ्जावकी एक प्रधान पहाडी रियासत, कांगडा जिलेके पूर्व दक्षिण पर्वतमालाओंसे घिरी हुई, प्रायः १२०० वर्गमीलमें विस्तृत है । व्यासा नदी कांगडेके निकटस्थ पर्वतोंसे निकल कर मण्डी राज्यके मध्यसे गयी है । राज्यके उत्तर, पूर्व और दक्षिण कांगडेके पहाड है और पूर्वमें सुकेत राज्य । राज्यकी अधिकसे अधिक लम्बाई ५४ मील है और चौडाई ३३ मील ।

मण्डीका इतिहास बहुत पुराना है । प्राचीनकालमें यह राज्य सुकेत राज्यमें सम्मिलित था । १४ वीं शताब्दिके आरम्भमें, सम्भवतः सन् १३३० के लगभग, सुकेतमें चन्द्रवंशी राजपूत नरेश साहुसेन राज्य करते थे । उन्हींके समय मंडीवाला भाग राज्यसे अलग हो गया । साहुसेनके कनिष्ट भ्राता राजपरिवारमें वैमनस्य होनेसे सुकेतसे निकलकर कुल्लूमें जा बसे । वहां कुछ समय बाद कुल्लूनरेशसे युद्ध छिडगया, उसीमें वह मारेगये । उनकी विधवा रानी उस समय गर्भिणी थी । रक्षाके लिये रानी कुल्लूसे भागकर अपने पिता शिवकोटके रानाके घर चली गयीं । पुत्र प्रसव मार्गमेंही होगया । थककर और पीडा उठनेसे रानी एक बडे बान वृक्षके नीचे बैठी थीं, वहीं पुत्रका जन्म हुआ । इससे कुमारका नाम बानसेन रखा गया । नानाकी मृत्युके बाद बानसेन शिवकोटके राना हुए । उन्होंने थोडेही समयमें अपने राज्यको खूब विस्तार दिया और अपनी राजधानी बदलकर भिन नामक स्थानमें कायम की । उनके बाद पुत्र कल्याणसेनने मण्डीके पास बटोहली स्थान खरीदा । इन राजाके बाद प्रायः १६ वीं शताब्दिके आरम्भतक मण्डी राज्यका इतिहास ठीक ठीक नहीं मिलता ।

सन् १५२७ में अजबरसेन नामक राजाने मण्डी नगरकी नीव डाली । इनसे दो एक पुश्त बाद राजा सूर्यसेनके समय राज्यपर बडी विपद पडी । सूर्यसेनने लालचवश बंगाहल राज्यपर आक्रमण करदिया; किन्तु युद्धमें बंगाहलनरेशके साले मानसिंहने सूर्यसेनको बहुत बड़ी हानि पहुँचाकर परास्त

किया। युद्धखर्चके सिवा सूर्यसेनको अपनी द्रंग और गूमा वाली नमककी खानियां भी बंगाहलको देदेनी पड़ीं। कुछ समय बाद, सन् १६३९ में, सूर्यसेनने कमलाका किला और दमदमा महल बनवाया। राजाके १८ पुत्र थे; लेकिन ईश्वरेच्छासे सब उनके सामनेही मरगये। राजाने चांदीकी एक मूर्त्ति बनाकर माधवराव उसका नाम रखा और समस्त राज्य सन् १६४८ में उसके अर्पण कर दिया।

दस वर्ष बाद, सन् १८९६ में राजाका देहान्त होगया। तब उनके भाई श्यामसिंह गद्दीपर बैठे। मण्डी नगरवाला श्यामी कालीका मंदिर इन्हीं नरेशने स्थापित किया था। उनके बाद गुरुसेन सिंहासनारूढ हुए। पदल मंदिरमें स्थापित मूर्त्ति यही नरेश जगन्नाथपुरीसे लाये थे। इन राजाके एक पुत्र जिन्होंने राज्यकी आर्थिक दशाका सुधार किया और मालगुजारीके आईन बनाये। वही आईन अब भी प्रचलित हैं।

गुरुसेनके बाद उनके पुत्र सिद्धसेन सन् १६८६ में गद्दीपर बैठे। यह बडे शक्तिशाली और वीर योद्धा हो गये हैं। गद्दीपर बैठनेसे चार वर्षके अन्दर इन्होंने नाचन, हाटली, दहले, धनेशगढ, रायपुर और माधवपुर सुकेत नरेशसे छीन लिये। कहते हैं, बङ्गाहलके राजा पृथ्वीपालको मण्डीमें बुलाकर इन्होंने धोखेसे मारडाला था। एक यही धब्बा इनकी उज्वल कीर्त्तिपर समझा जाताहै, नहीं तो इन नरेश जैसा न्यायपरायण और ऐश्वर्यवान् दूसरा नरेश पिछले समयमें मण्डीमें नहीं हुआ। मण्डीमें गणपतिका मंदिर और हाटगढमें शिवपुरी इन्हींकी स्थापित है। शिवपुरीवाला मंदिर सन्१७०९ में स्थापित हुआ था। सिख गुरु श्रीगोविन्दसिंहजी इन्हींके समय मण्डीमें पधारे थे। राजाके सत्कारसे प्रसन्न हो गुरु महाराजने उन्हें आशीर्वाद दिया था। अनेक वर्ष बडे दबदबेसे राज्यकर सन् १७२९ में इन नरेशका देहान्त हो गया। मृत्युके समय उनकी उमर १०० वर्षकी थी।

राजा सिद्धसेनके बाद उनके पौत्र शमशेरसिंह सिंहासनारूढ हुए। उन्होंने कुल्लूराज्य पर आक्रमण करके हस्तपुर रामगढ, देवगढ और सरनी स्थान छीन लिये। कुछ समय बाद अपने पांच वर्षके पुत्र ईश्वरीसेनको छोडकर राजा

परलोक सिधार गये। ईश्वरीसेन सिंहासनपर बैठे, किन्तु वह नाम मात्रके राजा थे इस अवसरको गनीमत जान, कांगडेके राजा संसारचन्द्रने मंडी पर आक्रमण करदिया और हाटली, चौहड और अनन्तपुर छीनकर हाटली सुकेत नरेशको और चौहड कूलूनरेशको देदिया। अनन्तपुर अपने अधिकारमें रखा। इसके सिवा शिशु राजा ईश्वरीसेनको कांगडेके किलेमें कैद करके मंत्रियोंसे भारी कर वसूल किया।

सन् १८०५ में संसारचन्द्रने रहलूर राज्य पर भी आक्रमण कर दिया। वहांके नरेशने गोरखोंसे सहायता मांगी। गोरखे उस समय सूर्य नदीसे सतलजके तट तक पहुंच गये थे। उन्होंने रहलूरका पक्ष लेकर महलमोरीस्थानमें संसारचन्दको परास्त किया और मंडीनरेश ईश्वरीसेनको मुक्त करदिया। मुक्त होकर सिंहासनारूढ़ होने पर ईश्वरीसेनने गोरखा अमरसिंहकी अधीनता स्वीकार करली। ३ वर्षबाद सन् १८०९ में सिख नरेश रणजीतसिंहने इन पहाडी रियासतों पर आक्रमण करके गोरखोंको सतलजपार भगा दिया और अपने सरदार देशासिंह मजीठियाको इन रियासतोंका नाजिम नियत किया। मंडी राज्यपर पहले ३० हजार रुपये कर लगाया गया, किन्तु सन् १८१५ में एक लाख होकर फिर ५० हजार हुआ और अन्तमें ७५ हजार निश्चित हुआ। इसके सिवा सन् १८२६ में मंडीनरेश जालिमसिंहसे १ लाख और वसूल किये गये। महाराज रणजीतसिंहकी मृत्युके बाद सन् १८३९ में सिख सरकारने चीनी तुर्किस्तानपर आक्रमण करनेका विचार किया। इस विचारसे उसने मण्डी पर पूर्ण अधिकार जमा लेना चाहा। अगले वर्ष सिखोंके यूरोपियन जनरल वेन्टूराने मंडीनगरपर अधिकार करलिया और दो मासके घेरेके बाद कमलगढ भी हस्तगत किया। मंडी नरेश बलबीरसिंह कैद करके अमृतसर भेजे गये लेकिन एक वर्ष बाद सिखनरेश शेरसिंहने उन्हें मुक्त करके मण्डी भेजदिया। सिख अंग्रेज युद्धके समय राजाने अङ्गरेज सरकारसे बातचीत करके उनकी अधीनता स्वीकार करली। सुब्रांवकी लडाईके बाद २४ अक्टोबर सन् १८४६ को इसीके अनुसार एक सनद

राजाको प्रदान की गई। सनद प्राप्त करतेही राजाने सिख सेनाको अपने राज्यसे निकाल दिया।

सन् १८९१ में राजा बलबीरसिंहको देहान्त होगया। तब उनके ४ वर्षीय कुमार विजयसेन सिंहासनपर बैठे। उनकी नाबालिगीमें भारत सरकारने मंत्री गुसाऊके अधीन एक रिजेन्सी कौन्सिल कायम करदी। वही राज्यकार्य चलाती रही। सन् १८८६ में राजाने बालिग होकर राज्यकार्य अपने हाथमें लिया, लेकिन अच्छी तरह उसे न चला सके, राज्यमें गडबड और असन्तोष फैलगया। अन्तमें बृटिश सरकारकी सलाहसे राज्यकार्य एक प्रकार अच्छी तरह चलने लगा। सन् १९०२ में विजय सेनका स्वर्गवास हो गया। उनके बाद उनके पुत्र वर्त्तमान मंडीनरेश राजा बलवन्तसेन सिंहासनपर बैठे। आपने लाहोरके एटकिसन कालिजमें शिक्षा पाई थी। आपके समयमें भी राज्यकार्य सन्तोषप्रद रीतिसे नहीं चल सका।

प्रजा।

मंडी राज्यमें सन् १९०१ की मनुष्यगणनाके अनुसार १ लाख ७४ हजार ४५ आदमी वसते थे। इनमें हिन्दू सैकडे पीछे प्रायः ९८ हैं। ब्राह्मणोंके बाद कनैत, कोली; चमार और डोम अधिक वसते हैं। भाषा मंडियाली और पहाडी है।

खनिज और उद्यम।

राज्यभरमें लोहेकी अधिकता है लेकिन खोदने और गलानेका ठीक प्रबंध नहीं। नमक गुमा और द्रंगमें नीकलता है, लेकिन मनुष्यके लिये निकम्मा होता है गाय बैलके लिये अधिकतासे व्यवहार किया जाता है। राज्यमें रंगसाजी लकडी, पीतल और लोहेके कामके सिवा और कोई खास उत्तम नहीं होता।

प्रबंध और उपाय।

राज्यकार्य, राजा मंत्रीकी सलाहसे चलाते है। राजाको मृत्युदंड देनेका अधिकार है, लेकिन उसका समर्थन जलंधरके कमिश्नरसे करा लेना होता है

राज्यकी वार्षिक आय प्रायः ९ लाख रुपयेकी है। इसमें एक लाख बृटिश सरकारको करस्वरूप अदा करना होता है। राजाकी सलामी ११ तोपोंकी है। सेनामें २० सवार १९२ पैदल और दो तोपें हैं।

शिक्षा।

शिक्षामें मण्डी राज्य बहुत पीछे है। सैकडे पीछे प्रायः दो मनुष्य लिख पढ सकते हैं। राज्य भरमें ८ स्कूल हैं। सन् १९०४ में १८० विद्यार्थी पढते थे।

प्रधान नगर।

मण्डी—राजधानी है। यह प्रायः ८२ सौ आदमियोंकी है। यह नगर सन १९२७ में राजा अजबरसेनने बसाया था। मण्डीमें कई अच्छे मंदिर और प्राचीन स्थान हैं। व्यासा नदी नगरके बीचमें बहती है। नदीपर एम्प्रेस ब्रिज नामक सुन्दर लोहेका पुल बँधा है। नगरमें १ मिडिल स्कूल और एक अस्पताल है। लदाख और यार्कन्दका व्यापारी पथ नगरमेंसे होकर गया है।

सिर्मूरनरेश

राजा सर सुरेन्द्र विक्रमप्रकाश बहादुर

के. सी. आई. ई.

सिरमूर ।

यमुनानदीके पश्चिमी तटपर शिमलेके निकटवर्त्ती पर्वतोंमें सिरमूर राज्य प्रायः ११९८ वर्गमीलमें विस्तृत है, दूसरा नाम है नाहन । नाहन राजधानीका भी नाम है । राज्यकी अधिकसे अधिक लम्बाई पूर्व पश्चिम ५० मील और चौड़ाई उत्तर दक्षिण ४३ मील । राज्यके उत्तर जुब्बल और बलसन राज्य, पूर्वमें देहरादून जिला, दक्षिणमें कलसिया रियासत तथा अम्बाला जिला और पश्चिममें क्योंथल और पटियालेकी भूमि । पूर्व दक्षिण कोनेमें कियारदा दून नामक घाटीके सिवा राज्यका शेष भाग पहाडी है ।

सिरमूरका प्राचीन इतिहास बहुत विदित नहीं है। इतनाही प्रसिद्ध है कि सिरमूर नगर अति प्राचीन समयमें इस पहाडी राज्यकी राजधानी था; किन्तु अब ग्राम मात्र है । इर्द गिर्द अनेक खंडरात अब भी मिलते हैं । प्राचीन समयमें यहांके नरेश सूर्यवंशी क्षत्रिय थे । उन्हींमेंसे किसी राजाके समयकी एक विचित्र बात अबतक प्रसिद्ध है । कहते हैं कि एक दिन किसी स्त्रीने राजाके सामने अपने बल और साहस की बहुत बडाई की और नट विद्यामें अपनेको अद्वितीय बताया । गिरि नामकी नदी इस समय भी बडे जोर शोरसे राज्यमें बहती है । राजाने इसी नदीके किनारे जाकर स्त्रीसे कहा कि यदि तू रस्सेपर चलकर नदी पार करके फिर इस पार वैसे ही लौट आवे तो तुझे अपना आधा राज्य दे दूंगा । स्त्रीने स्वीकार किया । उसी दम एक लम्बे रस्सेके दोनों सिरे नदीके वारपार मजबूतीसे बांध दिये गये । राजाकी आज्ञानुसार स्त्री रस्सेपर चढी और कुशलपूर्वक नदी पारकर गयी; किन्तु जब उधरसे लौटने लगी और इस पारके निकट पहुँच गयी तो उसके साथ एक दरबारीने घोर विश्वासघात किया । दरबारीने देखा राजा मुफ्त आधा राज्य एक स्त्रीको दिये देते हैं, इससे ज्योंही स्त्री कुशलपूर्वक किनारेके निकट पहुँची दरबारीने रस्सेका अपने पासवाला भाग काट दिया । स्त्री तत्काल गिरिमें डूबकर मर-गयी । कहते हैं कि इस विश्वासघातका महाभयङ्कर परिणाम हुआ । कुछही देर

बाद ऐसे जोरकी बाढ आयी कि सैकडों आदमियोंके सिवा राजा अपने वंशजों-सहित डूबकर मरगये ।

राजा न होनेसे राज्यमें बडी अशान्ति फैल गयी, चारों ओर लडाई भिडाई लूटमारका बाजार गर्म हो गया । ऐसेही समय जैसलमेर राजघरानेके एक सरदार तीर्थयात्रा करते हरिद्वारमें पहुँचे । वहां सिरमूर राज्यके एक चारणने राज्यकी शोचनीय दशाका वर्णन करके सरदारसे कहा, कि आप वहांका राज्य-भार लीजिये और देशमें शान्ति स्थापन कीजिये । सरदारने यह स्वीकार किया। उन्होंने अपने पुत्र रावल सोभाजीको सेना सहित सिरमूर भेजा । रावलने जातेही विद्रोह दूर करके शांति स्थापित करदी । अन्तमें रावल अपना नाम सोमंश प्रकाश रखकर सिरमूरके राजा हुए । तभीसे सिरमूरनरेशोंकी उपाधिमें "सोमंश प्रकाश" शामिल है ।

सन् १०९९ में नवीन राजाने राजबन नगरको अपनी राजधानी बनाया और बडी खूबीसे राज्य करने लगे । उन्हींके वंशमें आठवें राजाने रतेश प्रान्त सन् ११९० में जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया । यह प्रान्त आजकल क्योंथल राज्यमें सम्मिलित है । इन राजाके बाद राज्यकी बहुत उन्नति हुई । उनके पुत्रने सिंहासनारूढ होतेही जुब्बल बलसन, कुम्हारसेन, थियोगर आदि जीत-कर राज्यका विस्तार सतलजके समीपतक कर दिया । अनेक वर्षोंतक इन स्थानोंपर सिरमूरनरेशोंका अधिकार रहा । उस समय राजधानी कलसी नग-रमें थी । यह अब देहरादून जिलेमें है । मालूम होता है, कुछ समय बाद राजाका अधिकार इन जीते हुए प्रान्तों पर कमजोर पडगया । तभी १४ वीं शताब्दिमें राजा वीरप्रकाशको जुब्बल, रवेत और सहरीके निकट हायकोटी स्थानमें एक सुदृढ किला बनवाना पडा । यही राजा अपनी राजधानी कल-सीसे हटाकर सहरीमें लेगये, लेकिन थोडेही समय बाद फिर उसे बदल देना पडा । वर्तमान राजधानी नाहनकी नींव सन् १६२१ में राजा कर्मप्रकाशने डाली थी । तबसे यही राजधानी चली आती है ।

राजा कर्मप्रकाशके पुत्र मानधाताके समय शाहजहां बादशाहने गढवालपर चढाई करनेकी आज्ञा दी । खलीलुल्लह नामक सरदार एक बडी सेना सहित

गढवालपर चढगया। उसी समय शाहजहांकी आज्ञानुसार कर्मप्रकाश भी सेना सहित खलीलकी मददके लिये गये और भलीभांति मुगल सरदारका साथ दिया। किन्तु गढवाल विजित हुआ इनके पुत्र सौभाग्यप्रकाशके समय बादशाहने मानधाताकी सेवासे प्रसन्न होकर-कोटाहाका परगना सौभाग्यप्रकाशको प्रदान कर दिया। इनके बाद राजा बुद्धप्रकाशने पिंजौरका इलाका औरङ्गजेबके एक भाईसे ले लिया।

बुद्धप्रकाशके बाद राजामितप्रकाश सिंहासनारूढ हुए। इन्हीं राजाने सिखगुरु गोविन्दसिंहको शरण दी और पांवटा स्थानमें उन्हें किला बनानेकी आज्ञा प्रदान की। सन् १६८८ में गढवाल और कहलूरके नरेशोंने सिरमूरपर आक्रमण कर दिया। गुरु गोविन्दसिंहजीने दोनोंको भगानी स्थानमें परास्त किया। इसके बाद राज्यमें मुद्दततक शांति विराजती रही।

सन् १७६० में कीर्त्ति प्रकाश सिरमूरके राजा हुए। उन्होंने गढवाल नरेशको परास्त कर नारायणगढ, मोर्नी, पिंजौर तथा सिखोंकी बहुतसी भूमि पर कब्जा कर लिया। उन्हीं दिनोंमें पटियालानरेश और उनके मन्त्रीमें अनबन होगयी। कीर्त्तिप्रकाशने एक अहदनामा लिखाकर पटियालेको सहायता दी और बागी मन्त्रीको परास्त किया। कुछ दिन बाद रोहेला सरदार गुलामकादिरखांने कहलूरराज्यपर आक्रमण किया। कीर्त्तिप्रकाशने कहलूरकी सहायता करके रोहेलोंको मार भगाया। उन दिनोंमें गोरखोंका जोर पूर्वीय सीमापर बहुत बढगया था, इससे गढवालनरेशने कीर्त्तिप्रकाशको अपनी सहायताके लिये बुलवाया। राजा गये और गढवालकी सब तरह सहायता की; लेकिन ठीक युद्धमें गढवालनरेश सिरमूरसे अलग होगये और उन्हें उनके भाग्यपर छोड दिया। तो भी कीर्त्तिप्रकाशने अपने कीर्त्तिका प्रकाश कम न होने दिया। गोरखोंके ऐसे कान उमेठे कि उन्होंने गंगाके पूर्वीय तटको अपनी सीमा मान लिया और फिर नदी पार करनेकी हिम्मत न की।

कीर्त्तिप्रकाशके बाद गढवाल नरेशने फिर सिरमूरपर आक्रमण किया, साथही नालागढके राजा भी इसी नीयतसे चढ दौडे। लेकिन अपने पिताके पुत्र धर्मप्रकाशने दोनोंको परास्त करके मार भगाया। इसके बादही कांगडा-

नरेश संसारचन्दने कहलूरपर आक्रमण कर दिया। धर्मप्रकाश कहलूरकी रक्षाके लिये दौड़े। युद्ध हुआ। युद्धमें संसारचन्द और धर्मप्रकाशका सामना होगया, दोनों आपसमें लड़ने लगे। परिणाम यह हुआ कि युवक धर्मप्रकाश संसारचन्दके हाथसे मारे गये।

कर्मप्रकाश उनके भाई सन् १७९३ में सिंहासनपर बैठे। यह बहुत कमजोर राजा थे। इनके शासनकालमें राज्यभरमें अशांति फैलगयी। राजाने इसे दबानेके लिये गोरखोंको बुलानेकी भूल की। गोरखे यह चाहते ही थे, वह तुरन्त सिरमूरमें घुस गये और बागियोंको एक एक करके परास्त किया। पीछे उनकी नीयत खराब होगयी, उन्होंने स्वयं राजा कर्मप्रकाशको सिंहासनसे उतार दिया और राज्यपर कब्जा कर लेना चाहा। यह देख राजा सिटपिटाकर रह गये। लेकिन क्या कर सकते थे, चुप होगये।

उनकी रानी बड़ी बुद्धिमती स्त्री थीं। उन्होंने फौरन अंग्रेज सरकारसे मददकी प्रार्थना की। अंग्रेज उस समय इसके लिये तैयार थे, क्योंकि स्वयं उनका झगड़ा नेपालसे लगा हुआ था। रानीकी बात सुनतेही अंग्रेजोंने थोड़ीसी सेना सिरमूर भेजदी। उसने गोरखोंको निकाल बाहर किया और कर्मप्रकाशके पुत्र फतहप्रकाशको सिंहासनपर बिठाकर यमुनाके पूर्वीय तटकी भूमिपर अपना अधिकार जमालिया। पीछे सन् १८३३ में ५० हजार रुपये लेकर कियारदाजूनकी भूमि सिरमूरको लौटा दी गई।

राजा फतहप्रकाश सदा अंग्रेजोंके मित्र बने रहे। प्रथम अफगानयुद्धके समय उन्होंने धनसे और सिख युद्धके समय सेनासे अंग्रेजोंकी खूब सहायता की। सिरमूरी सेना हरिकापट्टन स्थानमें लड़ी थी।

फतहप्रकाशके बाद सन् १८५१ में राजा सर शमशेरप्रकाश सिंहासनपर बैठे। इनके समयमें राज्यकी बहुत उन्नति हुई। बेगारकी प्रथा दूर हुई, मालगुजारीके नियम बने, स्वास्थ्यरक्षा आदिका प्रबन्ध हुआ, नई नई सड़कें और अस्पताल, स्कूल आदि कायम किये गये। तार और डाकका भी अच्छा प्रबन्ध हुआ। इन्हीं राजाके समय सन् १८५७ का गदर हुआ था। राजाने उसमें और फिर सन् १८८० में अफगानयुद्धके समय सेना आदि भेजकर

अंग्रेजोंकी अच्छी सहायता की । फिर सन् १८९७ में तीराबुद्धके समय उनके पुत्र अर्थात् वर्त्तमान सिरमूरनरेश मेजर वीर विक्रमसिंह सेना सहित मददको गये थे । बृटिश सरकारने सर शमशेर प्रकाशको जी. सी. एस. आई. की उपाधिसे विभूषित किया था । सन् १८९८ में उनका देहांत होगया ।

आपके बाद वर्त्तमान राजा सर सुरेन्द्र विक्रमप्रकाश सिंहासनपर बैठे । आप के. सी. एस. आई. की उपाधिसे विभूषित हैं । राज्यकी उन्नति आपने भी बहुत कुछ की है । अदालतोंका प्रबंध आपने नये सिरेसे किया । कुछ समय तक आप बडे लाटकी कौंसिलके मेंबरभी रह चुके है । आपकी सलामी ११ तोपोंकी होती है ।

प्रजा ।

सन् १९०१ की मनुष्यगणनाके अनुसार राज्यभरमें १३५ ६२६ आदमी बसते थे । सैकडे पीछे ९५ हिन्दू हैं । राज्यकी भाषा पश्चिमी पहाडी है ।

शिल्प व्यापार ।

लोहेकी खाने अनेक हैं, पर खोदनेका प्रबन्ध नहीं है । नाहन राजधानीमें लोहेका कारखाना है । इसके लिये लोहा बाहरसे लाना पडता है । तांबे, सीसे और गेरू आदिकी भी खानें है । गेरू दो स्थानोंमें खोदा जाता है । सोने की रेत रुन और बाटा नदियोंमें मिलता है । रेनका और पच्छाद तह-सीलमें स्लेट पत्थर निकलता है ।

नाहनवाला लोहेका कारखाना राज्यका है । सन् १८६७ में खोला गया था । पहले उसमें राज्यकी खानोंका लोहा गलाया जाता था । लेकिन वह विलायती स्टीलका मुकाबिला न करसका । कारखाना मुद्दतसे ऊख पेर-नेके कोल्हू बनाता है । युक्तप्रदेश और पञ्जाबमें उनकी बहुत खपत है । कारखानेमें ६०० आदमी काम करते हैं । प्रति सप्ताह प्रायः २१०० मन लोहेका काम तैयार हो सकता है । कारखानेमें नवीन कलें लगायी गयी हैं । राज्यकी जेलमें फर्श कालीन बनते है । कहीं कहीं लकडी बेत आदिका

सामान तथा कम्बल बनते हैं । आसपासके जिलोंसे अन्न, लकडी, शक्कर और जंगल पहाडी पैदावारका लेनदेन होता है ।

सेना।

सिरमूरकी सेपर माइनर पल्टन प्रसिद्ध है । तीरावाली लडाईमें यह अपने राजाके अधीन अच्छा नाम पैदा कर चुकी है । कोहाट-पल रेलवे बनानेमें भी इसने बहुत सहायता दी थी । इस पल्टनमें १९७ आदमी हैं । इसके सिवा राजाके पास ३१ सवार, २३९ पैदल और दो तोपें हैं ।

शिक्षा।

सन् १९०१ में सैकडे पीछे ४ आदमी लिख पढ सकते थे । सन् १९०४ में ३८१ विद्यार्थी पढते थे ।

मुख्य स्थान।

चौर–सिरमूर राज्यमें हिमालयकी एक चोटी है । समुद्रसे ११९८२ फुट ऊंची है । सरहिन्दके मैदानसे भी यह चोटी देख पडती है । ऊपरतक देवदारके वृक्षोंसे लदी है । इसी पहाडपर एक आबजर्वेटरी अर्थात् नक्षत्र दर्शनालय है।

नाहन–राजधानी है । सन् १९०१ में ६१९६ आदमी बसते थे । राजा शमशेरप्रकाशकी छावनी तथा उनका यूरोपियन महल मुख्य स्थान हैं ।

फरीद कोट।

फरीदकोट पञ्जाबकी एक छोटी रियासत, प्राय: ६४२ वर्गमीलमें विस्तृत है। जलन्धर कमिश्नरके अधीन है। सन् १९०१ की मनुष्यगणनाके अनुसार राज्य भरमें १२४,९१२ आदमी बसते थे।

फरीदकोट राजघराना सिद्धूबरार जाट वंशज है फुलकियां घरानेसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है। फुलकियां वंशका अधिकार इस रियासतपर अकबरके समयसे चला आता है। पहले यह राज्य बहुत बड़ा था, लेकिन आपसके झगड़ोंसे विस्तार बहुत कम रह गया। सिख अङ्गरेज युद्धके समय फरीदकोटनरेश राजा पहाडसिंहने अङ्गरेजोंकी हर तरह सहायता की थी। इसीसे प्रसन्न होकर वृटिश सरकारने नाभा राज्यसे छीनी हुई कुछ भूमि तथा कोटकपूरेका खोया हुआ इलाका फरीदकोटको प्रदान कर दिया। गदरके समय राजा वजीरसिंह सिंहासनपर थे। उन्होंने भी उस विकट समय अंगरेज सरकारकी अच्छी सहायता की थी। इसका बदला उन्हें अच्छी तरह दिया गया।

वर्त्तमान नरेश राजा ब्रजेन्द्रसिंहजी अभी नाबालिग हैं। एक कौन्सिल राज्यकार्य चलाती है। राजाकी सलामी ११ तोपोंकी है राज्यकी कुल आय १६ लाख रुपये सालाना है।

सेना।

सेनामें एक कम्पनी सेंपर माइनर, ४१ सवार, १२७ पैदल, २० गोलन्दाज और ६ तोपें हैं।

मुख्य स्थान।

फरीदकोट--राजधानी है। बस्ती प्राय: ११ हजार आदमियोंकी है। रेलद्वारा फीरोजपुर, भटिंडासे मिली हुई है यहां एक सुदृढ किला ७०० वर्षका पुराना है। एक राजपूत नरेश राजा मोकलसीने बनवाया और एक महात्मा बाबा फरीदके नामपर उसका नाम फरीदकोट रखा। यही नगरका नाम पडा। गल्ले आदिका व्यापार खूब चलता है। नगरमें एक हाईस्कूल और एक खैराती दवाखाना है।

कोटकपूरा—राजधानी फरीदकोटसे ७ मीलपर एक प्राचीन कसवा है। वस्ती प्रायः १० हजारकी है । १६ वीं शताब्दिमें चौधरी कपूरासिंहने इसे वसाया था । इसीके पास कोट ईसाखां नामक वस्ती थी । कपूरासिंहके कहनेसे कोट ईसाके निवासी कोट कपूरामें वस गये । इसीसे कोट ईसाका हाकिम ईसाखां विगड गया और चौधरी कपूरको सन् १७०८ में पकडके वध कर दिया । इसके बाद चौधरी जोधसिंहने सन् १७६६ में यहां एक किला वनवाया, लेकिन पटियाला नरेश अमरसिंहके हाथके चौधरी युद्धमें मारे गये । कुछ समय बाद महाराज रणजीतसिंहका इसपर अधिकार होगया । किन्तु सिख युद्धके बाद सन् १८४७ में यह फरीदकोटको वापस मिल गया । गल्लेका व्यापार खूब होता है ।

युवराज।

साहबजादा अहमदअलीखां साहब।

मालेरकोटला.

मालेरकोटला पंजाबकी एक छोटी रियासत है। लुधियानेके दक्षिण १६७ घर्गमीलमें विस्तृत है। जलन्धरके कमिश्नर राज्यकी देख रेख करते हैं। राज्यके अन्दर कोई नदी या पहाड नहीं है। सरहिन्दवाली नहर राज्यमें होकर गयी है लेकिन नवाब मालेरकोटला उससे सिंचाई नहीं होने देते।

मालेर कोटलाके नवाब एक अफगान घरानेके है। उनके पूर्वज मुगल राज्यके समय सरहिन्दके आसपासवाले सूबोंके हाकिम थे, किन्तु १८ वीं शताब्दिमें मुगल राज्यका पतन होतेही वह स्वतन्त्र होगये। सन् १७३२ में मुगल सेनाने पटियाला राज्यपर चढाईकी थी। उस समय मालेर कोटलाके सरदार जमालखां थे। जमालखांने मुगल सेनाका साथ देकर पटियालानरेश आलासिंहपर आक्रमण किया। फिर सन् १७६१ में अहमदशाह दुर्रानीके साथ होकर भी जमालने पटियालेपर हाथ साफ किया। अहमदशाह जिस हाकिमको सरहिन्दमें छोडगया था उसको जमालने पटियालेके विरुद्ध बहुत कुछ सहायता दी। इसका परिणाम यह हुआ कि इर्द गिर्दके सिख राज्योंसे विशेषतः पटियालासे मालेर कोटलाका वैर बँध गया और आगे चलकर इसका बुरा फल हुआ।

जमालखां एक लडाईमें मारा गया। उसके बाद उसके पुत्रोंमें अनबन होगयी। अन्तमें भीखनखां नवाबी आसनपर बैठे। इसके कुछही दिन बाद अहमदशाह सदाके लिये भारतसे विदा होगया। अब तो पटियाला नरेशकी बन आई, राजा अमरसिंहने भीखनसे बदला लेना निश्चय कर लिया। मालेरकोटलापर चढाई हुई, नवाबके अनेक ग्राम राजाने छीन लिये। भीखनखांने देखा कि ऐसे शक्तिशाली शत्रुसे जीतना कठिन है। इससे उसने सुलह करके एक अहदनामा लिख दिया। इसके बाद बहुतवर्ष तक राज्यमें शान्ति रही।

इस शान्तिकालमें मालेर कोटलाने कई वार सेनासे पटियालानरेशकी सहायता की। सन्१७८७ में राजा साहबसिंहने इसका बदला चुका दिया। इस

वर्ष भदौरके शक्तिशाली सरदारने मालेरकोटलापर चढाई कर दी। नवाबके कई गांव भी उसने छीन लिये। पटियालानरेशने यह सुनतेही अपनी सेना नवाबकी सहायताके लिये भेजी। फल यह हुआ कि राज्यकी पूर्ण रीतिसे रक्षा होगई।

सन् १७९४ में प्रथम सिख गुरु, वेदी साहबसिंहजीने मुसलमानोंके विरुद्ध युद्धका झण्डा खडा किया। गोरक्षा मुख्य उद्देश्य बताकर गुरुसाहबने अनेकानेक सिख सरदारोंको अपने झण्डे तले एकत्र किया और गोहिंसक मालेरकोटलापर चढाई करदी। घोर संग्राम हुआ। नवाब साफ हार गये और राजधानीमें घुसकर बैठ रहे। गुरु साहबने राजधानीको घेर लिया। बहुत दिनोंतक घेरा पडा रहा। अन्तमें पटियालानरेशने फिर अपनी सेना सहायताके लिये भेजी और बहुत कुछ कह सुनकर तथा बहुमूल्य भेंट देकर नवाबका पीछा गुरुजीसे छुडवा दिया।

सन् १८०३ में लसवाडीका प्रसिद्ध युद्ध हुआ था। इसमें लार्डलेकके अधीन अङ्गरेज जीते और मराठानरेश सिंधिया हार गये। इस विजयके कारणही सतलज और यमुनाके बीचवाले प्रान्तपर सन् १८०५ में अंग्रेजोंका अधिकार हो गया। नवाब मालेरकोटला तब ससैन्य अंग्रेजोंसे जा मिले और उनके अधीन होगये। उसी समय रणजीतसिंहने सतलजके पार कदम बढाया और पारकी बहुतसी भूमि जीतली। पीछे फरीदकोटपर अधिकार जमाकर महाराज मालेरकोटलापर चढ गये और १ लाख ५५ हजार रुपये लेकर नवाबको मुक्त किया। इससे रोकनेके लिये अंग्रेजी दूत मि. मेटकाफने महाराजको बहुत समझाया। अन्तमें अंग्रेजोंके समझानेसे महाराजने भी मान लिया कि सतलज पारकी भूमि अंग्रेज रक्षित है और फिर उसमें हस्तक्षेप न किया। तबसे मालेरकोटला शांतिपूर्वक उन्नति करता जाता है।

वर्त्तमान नवाब मुहम्मद इब्राहीम अलीखां सन् १८५७ में पैदा हुए और सन् १८७७ में सिंहासनपर बैठे। आपके दिमागमें कुछ खलल है, इससे राज्यकार्य युवराज साहबजादा अहमदअलीखां चलाते हैं। नवाबकी सलामी ११ तोपोंकी होती है। दो तोपकी सलामी खास नवाब साहबके लिये और बढाई गई है।

अन्न, रुई, चीनी, अफीम आदि मुख्य पैदावार है। सेनामें ९० सवार, २६२ पैदल, एक कम्पनी सैपर माइनर्स १७७ आदमियोंकी और दो तोपें हैं। राज्यमें एक एंग्लोवर्नाक्यूलर स्कूल और ३ प्राथमिक पाठशालायें हैं।

मालेर कोटला–राजधानी है। बस्ती १९०१ में २११२२ आदमियोंकी थी। नगरके दो भाग हैं-मालेर और कोटला। अब मोतीबाजार बन जानेसे दोनों एक होगये हैं। मालेर कोटला राज्यकी नींव डालनेवाले सद्रुद्दीनने सन् १४६६ में मालेर नगर बसाया था। दूसरा नगर कोटला सन् १६५६ में बायजीदखांने बसाया। नगरमें नवाबके महल और सद्रुद्दीनका मकबरा देखने योग्य है। छावनी नगरसे बाहर है। नगरमें पैमाइशके यन्त्र बनानेका एक छोटासा कारखाना है। एक काटन प्रेस भी है। अनाजकी बड़ी मंडी हालमें बनी है। नगरमें दो अस्पताल और एक हाई स्कूल है।

लोहारू.

दिल्ली कमिश्नरीमें एक छोटी रियासत है। प्रायः २२२ वर्गमीलमें विस्तृत है। सन् १८०३ में इस रियासतकी नींव पड़ी थी। उस वर्ष अलवरके राजा और बृटिश जनरल लार्ड लेकसे आपसमें सम्बन्ध कायम करनेकी बातचीत हो रही थी। इसके लिये राजाने अहमदबख्शखां नामके एक मुगल सरदारको अपना प्रतिनिधि नियत किया था। अहमदबख्शने सब कार्य बड़ी खूबीसे पूरा किया। राजा और अंगरेज दोनोंही उनसे प्रसन्न हुए। राजाने लोहारूका इलाका सदाके लिये अहमदबख्शखांको दे दिया। उधर लार्ड लेकने भी उन्हें गुरगांव जिलेका फीरोजपुर परगना दे दिया।

अहमदबख्शकी मृत्युके बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र शम्सुद्दीनखां राज्यके मालिक हुए, लेकिन वह बहुत दिन राज्य न करने पाये। शम्सुद्दीनने दिल्लीके रेसीडण्ट मि० फ्रेजरकी हत्यामें कुछ भाग लिया था, इससे सन् १८३५ में उन्हें दिल्लीमें प्राणदंड देकर फीरोजपुर वाला परगना जब्त कर लिया गया। शम्सुद्दीनके दो भाई थे, जियाउद्दीनखां और अमीनुद्दीनखां। लोहारूका इलाका इन्हीं दोनों भाइयोंको बांट दिया गया। गदरके समय दोनों भाई दिल्लीमें थे।

दिल्ली जीतनेके बाद बृटिशसरकारने दोनों भाइयोंकी निगरानीका हुक्म दिया, लेकिन अन्तमें उनके चाल चलनेसे सन्तुष्ट होकर उनका इलाका उन्हें सौंप दिया।

सन् १८६९ में अमीनुद्दीनके पुत्र अलाउद्दीन संपूर्ण राज्यके मालिक हुए। वहीं लोहारूके प्रथम नवाब बनाये गये। उनके पुत्र वर्त्तमान नवाब, सर अमीरुद्दीन अहमदखां के. सी. एस. आई. सन् १८८४ में सिंहासनपर बैठे। सन् १८९३ में आप मालेर कोटलाके सुपरिण्टेण्डेण्ट बनाये गये। सन् १९०३ तक आपने इस कामको खूबीसे पूरा किया। इस बीचमें निज राज्यका प्रबंध उनके छोटे भाई करते थे। १ जनवरी सन् १९०३ को खास नवाब साहबको ९ तोपोंकी सलामीका अधिकार प्राप्त हुआ। राज्यकी कुल आय ६६०००) वार्षिक है।

लोहारू–११७९ आदमियोंकी बस्ती है। किसी समय यहां जयपुर राज्यकी टकसाल थी। कहते हैं टकसालमें बहुतसे लोहार काम करते थे, इसीसे नगरका नाम लोहारू पडा। नवाब साहबके भवनके सिवा एक अस्पताल, तारघर, डाकघर और जेलखाना नगरकी मुख्य इमारतें हैं।

दुजाना.

यह रियासत भी दिल्ली कमिश्नरीमें है। १०० वर्गमीलमें विस्तृत है। राज्य भरमें प्रायः २४१७४ आदमी बसते हैं।

पेशवाकी सेनामें एक यूसुफजई पठान सिपाही था। उत्तर भारतमें अंग्रेजी अमल होने पर उक्त पठान लार्ड लेककी सेवामें चलागया। लार्ड लेकने सन् १८०६ में हरियानेका नाहर और बाहूवाला परगना प्रदान करके उक्त पठानको नवाब बना दिया। नवाब इतना बडा इलाका न सम्भाल सके। इसलिये सन् १८०९ में उन्होंने दुजानाका छोटा इलाका लेलिया। राज्य दो तहसीलोंमें विभक्त है, दुजाना और नाहर। दुजानामें नवाब और उनके दीवान रहते हैं। नाहरमें एक तहसीलदार रहता है। गदरके समय वर्त्तमान

नवाबके पिता हसनअली अंग्रेजोंके मित्र बने रहे। वर्त्तमान नवाब मुमताज-अली सन् १८८२ में सिंहासन पर बैठे। राज्यकी वार्षिक आय ७७१७०) है।

दुजाना—दिल्लीसे ३७ मील पश्चिम ९९४९ आदमियोंकी बस्ती है। दुर्जनशाह नामके एक फकीरने यह नगर बसाया था। इसीसे दुर्जना या दुजाना नाम पडा।

पाटौदी.

गुरगांव जिलेमें ५२ वर्गमीलकी एक छोटी रियासत है। २१९९३ आदमी राज्यमें बसते हैं। यहांके नवाब अफगान जातिके हैं। मराठा युद्धके बाद लार्ड लेकने सन् १८०६ में पाटौदीका इलाका नवाबके पूर्वज तालिब-फैजखांको प्रदान कर दिया था। भरतपुर युद्धके समय सन् १८२६ में तालिबफैजने अंगरेजोंकी खूब सहायता की। गदरके समय उनके पुत्र अकबर-अलीका चलन भी अच्छा रहा। वर्त्तमान नवाब सन् १८६३ में पैदा हुए और सन् १८९२ में सिंहासन पर बैठे। राज्यकी वार्षिक आय ७६६३१) है।

पाटौदी—गुरगांवसे १९ मील पश्चिम-दक्षिण, ४१७१ आदमियोंकी बस्ती है। जटौली रेल स्टेशनसे २॥ मील दूर है। कहते हैं, बादशाह जला-लुद्दीन खिलजीके समय पाटा नामके एक मेवातीने यह नगर बसाया था। इसी लिये पाटौदी नाम पडा। नगरमें एक स्कूल और एक अस्पताल है।

कलसिया.

अम्बालेके पास १६८ वर्गमीलकी रियासत है। लाहोरके पास कलसिया एक स्थान है। वहींके एक जाट सरदार गुरुबख्शसिंहने इस राज्यकी नीव डाली। उनके पुत्र जोधसिंहने सतलज तककी भूमि पर अपना अधिकार कर लिया था। लेकिन पीछे उसे सँभाल न सके। अंगरेजी अमल होते ही सरदार जोधसिंह भी उनके अधीन हो गये। वर्त्तमान सरदार रणजीतसिंहजी हैं। राज्यकी कुछ भूमि फीरोजपुर जिलेमें भी है। छछरौली और बसी मुख्य नगर हैं। वार्षिक आय १ लाख कुछ रुपयेसे अधिक है।

विलासपुर नरेश

राजा विजयचंद।

पहाड़ी रियासतें.

बिलासपुर.
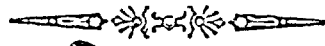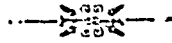
बिलासपुर शिमलेकी पहाडी रियासतोंमें शामिल है। इसका क्षेत्रफल ४४८ वर्गमील है और बस्ती सन् १९०१ में ९०,८७३ आदमियोंकी थी। राज्यमें एक बड़ा नगर और ४२१ ग्राम हैं। गत शताब्दीके आरम्भमें गोरखोंने इस राज्यपर अधिकार जमा लिया था, लेकिन सन् १८१९ में अङ्गरेजोंने उन्हें निकालकर राजाको गद्दीपर बिठा दिया। सन् १८४७-४८में पंजाब हस्तगत होनेपर अङ्गरेजोंने राजाको पूर्णाधिकार दे दिये। राज्यकी कुछ भूमि सतलज पार भी थी, उसके लिये राजा सिखसरकारको कर दिया करते थे। अङ्गरेज सरकारने यह भूमि राजाके पास रहने दी और उसका कर भी माफ कर दिया; लेकिन इसके बदले यह शर्त कराली कि राजा चुंगीका महसूल उठा देंगे। सन् १८६९ में बसी बचेरत्वाला परगना भी ८०००) वार्षिक मालगुजारी लिखाकर राजाको दे दिया गया। गदरके समय राजाने अंगरेजोंकी खूब सहायता की थी। इसके बदले उन्हें ५ हजारी जोडा प्रदान करके ७ तोपोंकी सलामीका अधिकार दिया गया; लेकिन पीछे सलामी ११ तोपकी नियत कीगई।

वर्त्तमान राजा विजयचन्दजी सन् १८८९ में सिंहासनारूढ हुए थे, किन्तु सन् १९०३-०४ में कई कारणोंसे राज्याधिकार उनसे ले लिये गये और राज्यकार्य चलानेके लिये एक कौन्सिल नियत कीगयी। राजा राज्य छोडकर काशीमें रहने लगे। किन्तु गत वर्ष १९०८ में सरकार आपसे हर तरह सन्तुष्ट होगयी, इससे राज्याधिकार पूर्ववत् प्राप्त होगये।

राज्यकी सेनामें ११ सवार १८७ पैदल और २ तोपें हैं। वार्षिक आय प्रायः १५७०००) है। मुख्य पैदावार अनाज, सोंठ, तम्बाकू और अफीम है।

बिलासपुर-राजधानी है। सतलजके बायें तटपर प्रायः १४६५ फुटकी ऊंचाईपर आबाद है। सन् १९०१ में ३१९२ आदमी बसते थे।

गोरखोंके आक्रमणसे इसे बहुत हानि पहुँची थी। नगरमें पक्के मकान और बाजार तथा एक अस्पताल और एक स्कूल है। राजाका महल सादा होनेपर भी खूबसूरत है। नगरसे दो मीलपर सतलज पार करनेका घाट है।

जुबल।

शिमलेकी एक पहाड़ी रियासत प्रायः २८८ वर्गमीलमें विस्तृत है। सन् १९०१ में २१, १७२ आदमी बसते थे। पहले जुबल सिरमूरके अधीन था, लेकिन गोरखा आक्रमणके समय स्वतन्त्र होगया। बुरा शासन करनेके दोषमें राजा सन् १८३२ में सिंहासनसे उतार दिये गये; लेकिन फिर चलन सुधरनेपर सन् १८४० में राज्याधिकार उन्हें प्रदान कर दिये गये।

इनके पौत्र पद्मचन्दने सन् १८७७से सन् १८९८तक बड़ी योग्यताके साथ शासन किया। आपके बाद वर्तमान राजा ज्ञानचन्द सिंहासनारूढ़ हुए। आप अभी नाबालिग हैं इससे राज्यकार्य एक बृटिश अफसर चलाते हैं। राजघराना राठौड़ राजपूत वंशज है। राज्यमें ८४ ग्राम हैं। वार्षिक आय १९२०००) है। मुख्य पैदावार अनाज, तम्बाकू और अफीम है। दोरहा राजधानी है।

रावैन।

रावैन या रैनगढ़ जुबलके अधीन एक छोटी सी रियासत है। पबार नदीके बायें तटपर एक पहाड़ी है। उसीके शिखर पर रैनगढ़ नामक पुराना किला है। किलेके इर्दगिर्द ७ मील तक इस राज्यका विस्तार है। किलेके नीचे पबार नदी पर लकड़ीका पुल है। राजधानी साधारण ग्राम है, कुल ८३२ आदमी बसते हैं। राज्यके अधीश्वर ठाकुर कहलाते हैं। इनका घराना जुबल राजवंशकी एक शाखा है।

यह रियासत एक समय टिहरी राज्यके अधीन थी। गोरखा आक्रमणसे कुछ पहले बशाहरनरेशने इसपर आक्रमण करके अपना अधिकार जमा लिया। बृटिश–गोरखा युद्धके बाद इस राज्यके तीन भाग किये गये। एक भाग अंगरेजोंने और दूसरा गढ़वाल नरेशने लिया। तीसरा रावैनके ठाकुर राना

रुनाको मिला। वर्त्तमान रियासत वही तीसरा भाग है। वर्त्तमान शिमलेकी भूमि सन् १८३० में क्युंथल नरेशसे लीगई थी। इसके बदले अंग्रेज सरकारने राबैनवाला अपना पूर्वोक्त तीसरा भाग क्युंथलको दे दिया। राज्यमें ब्राह्मण अधिक हैं। घाटीपर उन्हींका अधिकार है। राज्यमें २ पुराने मंदिर हैं। इनकी बनावट तिब्बी ढंगकी है।

वार्षिक आय ३०००) है। वर्त्तमान अधीश्वर ठाकुर केदारसिंहजी है। आप सन् १९०४ में गद्दी पर बैठेथे। सम्पूर्ण फौजदारी और दीवानी अधिकार आपको प्राप्त हैं, केवल मृत्युदंडकी तस्दीक सुपरिण्टेण्डेण्ट शिमला हिल स्टेट्ससे करा लेना होती है।

ढाढी।

ढाढी, जुब्बलके अधीन एक छोटीसी रियासत है। २९ वर्गमीलमें विस्तृत है। किसी समय थरोच और बशाहरके अधीन थी। गोरखा आक्रमणके समय राबैनने इसपर अपना अधिकार जमा लिया; लेकिन सन् १८९६ में यह रियासत जुब्बल राज्यके कब्जेमें चली गई। बस्ती कुल २४७ आदमियोंकी है। वार्षिक आय १४००) है। वर्त्तमान ठाकुर धर्मसिंहजी है। आप नाबालिग है। एक कुटुम्बी शासनकार्य चलाते है। ठाकुरको सिर्फ मृत्युदंडकी तस्दीक अंग्रेजी सुपरिण्टेण्डेण्टसे कराना होती है।

थरोच।

टौंस नदी केदारखण्डसे निकलकर जहां पबार नदीसे मिलती है, उससे कुछ दूर पश्चिम, थरोच नामकी पहाडी रियासत है। इसका विस्तार ६७ वर्गमीलमें है। राज्यमें ४४११ आदमी बसते है। एक समय यह रियासत सिरमूरके अधीन थी। बृटिश अधिकारके आनेके समय वृद्ध ठाकुर कर्मसिंह यहांके नाममात्र शासक थे। इस लिये शासनकार्य उनके भाई झोबूको सौंपा गया। ठाकुरकी मृत्युके बाद बृटिश सरकारने झोबूको राज्यका अधिकारी मानकर

ठकुराईकी सनद प्रदान कर दी। वर्त्तमान ठाकुर सूरतसिंहजी नाबालिग हैं। वजीर राज्यकार्य चलाते हैं। वार्षिक आय ४००००) है।

बलसन।

बलसन या घोडना शिमलेसे ३० मील पूर्व गिरी नदीके तटपर एक छोटी पहाडी रियासत है। क्षेत्रफल ५१ वर्गमील है। बस्ती ६७ सौसे अधिक है। इस राज्यमें देवदारके बडे सघन जङ्गल हैं। राजघराना सिरमूर राजवंशकी एक शाखा है। वर्त्तमान राना वीरसिंहजी अच्छे शासक हैं। वार्षिक आय ९०००) है। इनमें १०८०) वार्षिक भारत सरकारको ३० मजदूरोंके बदले देना पडते हैं।

बशाहर।

तिब्बतकी सरहद पर टिहरीसे उत्तर और कांगडेके पश्चिम एक बडा पहाडी राज्य है। ३८२० वर्गमीलमें फैला हुआ है। बस्ती सन् १९०१ में ८० हजार ९ सौ ३२ थी। इसी राज्यमें सतलज नदी तिब्बतसे निकल कर शिपकी घाटीके रास्ते भारतमें प्रवेश करती है।

सन् १८०३ से १८१५ तक यह राज्य गोरखोंके अधिकारमें रहा। किन्तु अङ्गरेज-गोरखा युद्धके बाद राजाने अंगरेजोंकी अधीनता स्वीकार की। अंगरेजोंने २२५००) वार्षिक कर पर राजाको सनद प्रदान कर दी। सन १८४६ में राज्यके अन्दर मालके आने जानेका महसूल उठवा कर अंगरेज सरकारने कर घटा दिया। अब ५९१०) वार्षिक देना पडता है। वर्त्तमान राजा शमशेरसिंह सन १८५० में गद्दी पर बैठे थे। आप बहुत कमजोर हैं। एक सरकारी अफसर शासन कार्य चलाता है। वार्षिक करके सिवा युद्धके समय अंग्रेज सरकारकी सहायताके लिये कुछ सेना तैयार रखना पडती है और राज्यकी सडक बनानेके लिये मजदूर देने पडते हैं। वार्षिक आय ८५०००) है।

कानावर इस राज्यका मुख्य भाग है। इसे सतलजकी घाटी भी कहते हैं यहां अंगूरकी पैदावार बहुत है। तिब्बती सीमापर होनेके कारण हिन्दुओंके सिवा तिब्बती, चीनी और तातार लोग भी इसमें बसते हैं। इस प्रान्तके निवासियोंने गोरखोंको बडी वीरतासे रोका था। गोरखे हताश होकर लौट गये। इस प्रान्तकी अनेक जातियोंमें स्त्रियोंके एक साथ कई पति होते है । यह प्रथा बहुत कालसे प्रचलित है। घरके ५–६ भाइयोंकी एक ही स्त्री होती है । इस घाटीमें मुख्य ग्राम संगनम और कानुम हैं।

मुख्य स्थान ।

चीनी–बशाहरके कानावर प्रान्तका सदर स्थान है सतलजसे एक मील पश्चिम१९सौ फुट ऊँची पहाडी पर यह नगर बसा हुआहै। अंगूर और किशमिश यहां बहुत होती है। यहांके कुत्ते बडे बलवान होते है। भालुओंसे अंगूरिस्तानोंकी खूब रक्षा करते हैं। लार्ड डलहौसी ग्रीष्म ऋतु यहीं बिताते थे ।

रामपुर–बशाहरकी राजधानी है। सन् १९०१ में ११५७ आदमियोंकी वस्ती थी। सतलजके बायें तटपर आबाद हे , नगरके चारों ओर ऊँचे ऊँचे पहाड हैं। १९०५ वाले भूकम्पमें नगरको बहुत हानि पहुँची थी। यहांके शाल और चादरें प्रसिद्ध है। राजाका महल आधा हिन्दी आधा चीनी ढंगका बना हुआ है।

शिपकी घाटी–पश्चिम हिमालयमें तिब्बतका द्वार है। हिंदुस्तान तिब्बतवाली बडी सडक इसी घाटीमेंसे गई है। शिपकी तातारोंका एक ग्राम है।

कनेठी ।

बशाहरके अधीन एक छोटी रियासत है। क्षेत्रफल १९ वर्गमील, जनसंख्या १९०१ में २५७५, वार्षिक आय ४०००) है। वर्त्तमान ठाकुर अमोगचन्द नाबालिग हैं, एटकिसन कालिज लाहोरमें शिक्षा पाते है। एक सरकारी कर्मचारी शासनकार्य चलाता है। बशाहरको ९००) वार्षिक कर दिया जाता है।

डेलाथ।

वशाहरके अधीन ४२ वर्गमीलकी रियासत है । सन् १९०१ में जन-संख्या १४८९ थी । वार्षिक आय ५५०) है । १५०) वार्षिक कर वशाहरको देना होता है । वर्त्तमान ठाकुर नरेन्द्रसिंह हैं ।

कुम्हारसेन।

शिमलेके पूर्व एक पहाडी रियासत है । क्षेत्रफल ९० वर्गमील है । जन-संख्या सन् १९०१ में ११७३९ थी । कुम्हारसेन राजधानी एक ग्राममात्र है, हिन्दुस्तान तिब्बतवाली सडकके किनारे बसा हुआ है । पहले यह राज्य वशाहरके अधीन था लेकिन सन् १८१५ में गोरखा आक्रमणके बाद स्वाधीन होगया । वर्त्तमान अधीश्वर राना हीरासिंहजी हैं । वार्षिक आय २५०००) है । वृटिश सरकारको २०००) वार्षिक कर देना होता है ।

डरकोटी।

क्षेत्रफल ८ वर्गमील । सन् १९०१ में जनसंख्या ५१८ । वार्षिक आय ८००) है । वर्त्तमान नरेश राना राम शरणसिंहजी हैं ।

टेहरी नरेश ।
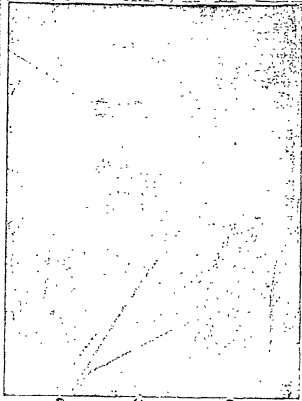
श्रीमान् राजा कीर्त्तिसाह
सी. एस. आई. ।

संयुक्त प्रान्त।

टेहरी-गढवाल।

संयुक्त प्रान्तकी रियासतोंमें विस्तारके हिसाबसे टेहरी राज्य सबसे बडा है। गढवालके पश्चिमी पहाडोंमें ४२०० वर्गमीलमें विस्तृत है। इसके उत्तर तिब्बत तथा रावैन और बशाहर राज्य है। पश्चिम और दक्षिण ओर देहरादून जिलेसे घिरा हुआ है। पूर्वमें गढवालका जिला है।

सम्पूर्ण राज्य हिमालयकी पर्वत मालाओंसे घिरा हुआ है। हिमालयके कई सुविशाल शिखर इस राज्यमें या इसकी सीमापर है। केदारनाथ, बदरीनाथ, रुद्र, हिमालय श्रीखंड, गंगोत्री यमुनोत्री केदारखंड आदि हिन्दुओंके पवित्र स्थान इसी राज्यमें और उसके आस पास है। गङ्गा और यमुना, हिन्दुओंकी परम पवित्र नदियोंका निकास इस राज्यके उत्तर भागसे होता है। गंगा नदी गंगोत्रीकी गोमुख नामक बर्फकी गुफासे निकलकर कुछ दूर पश्चिमोत्तर दिशाकी ओर बहती है। गोमुख गुफा समुद्रसे १३५७० फुट ऊंची है भैरव घाटीमें पहुंचतेही जाह्नवी आ मिलती है। यहांसे भागीरथी नाम पाकर यह पवित्र धार दक्षिण और फिर दक्षिण पूर्व दिशाको गई है और टेहरी नगरके नीचे बहती हुई देवप्रयागमें पहुंचती है। यहां अलकनन्दा मिलती है। यहांसे एकाएक दक्षिण पश्चिमको घूमकर सुखी स्थानके पास हिमालयको चीरती हुई गंगा नामसे हरिद्वारके पास उत्तराखंडके विशाल मैदानमें प्रवेश करती है। इसी प्रकार यमुना पश्चिमोत्तर दिशामें बन्दर पुंच नामक शिखरके नीचेसे निकलकर कल्सीके पास टौंस नदीसे मिलती है और आगे शिवालिक पर्वतका कोना स्पर्श करती हुई सहारनपुर जिलेमें प्रवेश करती है। सुपिन नदी यमुनोत्रीके उत्तरसे निकलकर आगे रुपिनसे मिलती है और कलसियासे आगे यमुनासे मिल जाती है।

प्रायः सभी पहाडी पशु पक्षी राज्यके जङ्गलोंमें मिलते हैं । उत्तरमें शेर और पश्चिममें तेन्दुए बहुत होते हैं । कई स्थानोंमें भालू और जङ्गली कुत्ते मिलते हैं । कस्तूरीवाला मृग भी पाया जाता है । इनके सिवा कई प्रकारके मृग तथा बकरियां आदि भी पायी जाती हैं ।

इस राज्यका प्राचीन इतिहास वही है जो गढवाल प्रान्तका है । किन्तु गढवाल प्रान्तका प्राचीन इतिहास भी ठीक ठीक विदित नहीं । केवल ७वीं शताब्दिसे कुछ कुछ पता चलता है । उस शताब्दिमें एक चीनी यात्री भारतभ्रमणके लिये आया था । उसके यात्रा सम्बन्धी इतिहाससे ऐसा ख्याल किया जाता है कि यह प्रान्त सम्भवतः ब्रह्मपुर राज्यमें शामिल था । अति प्राचीन राजवंशोंमें केवल कत्यूरी राजवंशका कुछ इतिहास मिलता है । गढवाल अन्तर्गत जोषीमटस्थान इस घरानेका उत्पत्ति स्थान कहा जाता है । कत्यूरी नरेशोंके अधीन गढवाल और अल्मोडा दोनों प्रान्त थे । कुछ समय पश्चात् यह राज्य कई भागोंमें बट गया । छोटे छोटे अनेक स्वाधीन राजा बन गये । किन्तु १४ वीं शताब्दिके मध्य या अन्तमें अजयपाल नामके एक छोटे राजाने अपने बाहुबलसे अन्य समस्त राजाओंको परास्त किया और सम्पूर्ण गढवालपर राज्य करनेलगे । देवलगढमें इनकी राजधानी थी । अल्मोडा प्रान्तपर इनका अधिकार नहीं जम सका ।

१७ वीं शताब्दिमें इन्हींके वंशज महीपत साह गढवालके सिंहासनपर थे । यह बडे पराक्रमी राजा थे । श्रीनगर इन्हींने बसाया था । सन् १५८१ में गढवाल और अल्मोडा नरेशोंसे अनबन होगयी । उसीवर्ष अल्मोडेके चन्द घरानेके नरेश रुद्रचन्द्र प्रथम बार गढवाल पर चढाई की, लेकिन बहुत हानि उठाकर उन्हें लौट जाना पडा । पीछे और कई बार आक्रमण हुए लेकिन कुछ सफलता न प्राप्त हुई ।

सन् १६५४ में शाहजहांने एक सेना गढवालपर चढाई करनेके लिये भेजी । उस समय पृथ्वीसाह गढवालके राजा थे । चढाईका परिणाम यह हुआ कि देहरादून गढवालसे जुदा होगया । कुछ वर्ष बाद शाहजहांके घरमें फूट पड गई और औरंगजेबने बगावतका झंडा खडा किया । ऐसे समय शाहजहांका बडा पुत्र दारा शिकोह बागियोंसे बचनेके लिये भागकर राजा

पृथीशाहकी शरणमें चला आया। राजाने पहले तो उसे आश्रय दिया, लेकिन पीछे औरंगजेबके हवाले कर दिया।

१७ वीं सदीके अन्तमें अल्मोडा नरेश-जगतचन्दने फिर गढवालपर आक्रमण किया। इस बार सफलता प्राप्त हुई। गढवाल नरेश हार गये और श्रीनगर हाथसे खो बैठे। जगतचन्दने श्रीनगर जीतकर एक ब्राह्मणको दे दिया। लेकिन कुछ समय बाद गढवाल नरेश प्रदीपशाहने गढवाल और देहरादूनपर फिर अधिकार जमा लिया। किन्तु सन् १७५७ में देहरादून हाथसे निकलकर नजीबखां रोहेलाके अधिकारमें चला गया। सन् १७७९ में ललितशाह गढवालके सिंहासनपर थे। उन्होंने कमाऊं नरेशको जीत कर अपने पुत्र प्रद्युम्नशाहको उनके सिंहासनपर बिठाया। पीछे पिताके मरनेके बाद प्रद्युम्नशाह कमाऊं और गढवाल दोनोंके राजा होगये। किन्तु कुछ दिन बाद अलमोडा नरेशकी छेडछाडसे तंग आकर श्रीनगरमें रहने लगे।

उधर अल्मोडा नरेशपर भी सन् १७९० में विपद् पडी। उस वर्ष गोरखोंने अल्मोडेको जीत लिया और गढवालपर चढाई करनेकी तैयारी करने लगे, किन्तु इसी बीचमें नेपाल और तिब्बतमें परस्पर कुछ तकरार शुरू होगई, इससे गोरख उस समय चुप होगये, लेकिन सन् १८०३ में आक्रमण करके उन्होंने गढवाल और देहरादूनपर अधिकार जमा लिया। प्रद्युम्न शाह सेना एकत्र करके देहरादूनके पास उनसे लडे, लेकिन अन्तमें मारे गये। गोरखोंने प्रायः १२ वर्षतक इस प्रान्तमें खूब कडाईसे शासन किया। इतनेमें सन् १८१५ में अंग्रेज पहुंच गये। इन्होंने कमाऊं जीतकर गोरखोंको निकाल बाहर किया और फिर सम्पूर्ण गढवालपर अधिकार जमा लिया। बृटिश सरकार पुराने राज घरानेको नहीं भूली। उसने वर्त्तमान टेहरी राज्य कायम करके प्रद्युम्नशाहके पुत्र सुदर्शनशाहको नवीन सिंहासनपर बिठा दिया। सुदर्शनशाहने इस नेकीका बदला गदरके समय अंग्रेजोंको बहुत कुछ सहायता पहुंचाकर दिया। इसके एक वर्ष बाद, सन् १८५९ में उनका देहान्त होगया। कोई औलाद नहीं थी इससे राज्य बृटिश सरकारके अधिकारमें चला गया। किन्तु कुछ समय

वाद सुदर्शनशाहके निकटीय स्वात्मीय भवानीसिंहको राज्य सौंपकर उन्हें पोष्यपुत्र लेनेका अधिकार भी प्रदान कर दिया। भवानीशाह सन् १८७२ में, और उनके पुत्र प्रतापशाह सन् १८८७ में मर गये। उनके वाद स्वर्गीय टेहरी नरेश राजा सर कीर्तिसाह के. सी. एस. आई. सन् १८९४ में सिंहासनारूढ हुए। आपका विवाह नेपालके महाराज जंगबहादुरकी एक पोतीसे हुआ था। आप उन्नतिशील नरेश थे।

२० वर्ष राज्यकरके सन् १९१३ के अप्रैल मासमें आपका स्वर्गवास होगया। आपके वाद आपके नाबालिग पुत्र महाराज कुमार श्रीनरेन्द्रशाह सिंहासनासीन हुए हैं। इनकी नाबालिगीमें राजकार्य राजमाताकी अध्यक्षतामें रिजेन्सी कौन्सिलद्वारा चलाया जायगा।

राज्यकार्य्यके लिये एजेंटने इस प्रकार प्रबंध किया:—श्रीमती महारानी नैपालियाजी साहबा श्रीमान् टीकासाहबके विद्याध्ययन तक रिजेन्टकी हैसियतसे शासन करेंगी। उनकी मददके लिये श्रीकुँवर विचित्रशाह साहब तथा वजीर पंडित हरिकृष्ण रतूड़ी साहब मेम्बर और पं० भवानीदत्त ओझा साहब सेक्रेटरी कौंसिल वनाये गये।

पश्चात् शुभ मुहूर्त्त १८।९।१३ को ९ बजे अपराह्नमें कोटकी बैठकके मैदानमें दर्बार हुआ। दो बढिया कुरसियोंपर श्रीमान् महाराजा नरेन्द्रशाह साहब बहादुर और पोलिटिकल एजेन्ट साहब विराजमान् थे। दाहनी ओर श्रीमान् कुँवर विचित्रशाह साहब, श्रीमान् कुँवर सुंदरसिंह साहब, मिस्टर पोलार्ड साहब फिर महाराजके ए० डी० सी० ठा० देवीसिंह ठा० दर्लीपसिंह, और अन्य ठाकुर लोग बैठे थे और बायीं ओर श्रीमान् कर्नल राना ज्ञानजंगबहादुर, श्रीमान् राना टीकेन्द्रजंगबहादुर, श्रीमान् राना जोधाजंगबहादुर फिर माफीदार राय श्रीदत्तराय, महेन्द्रदत्त, वजीर पं० हरिकृष्ण रतूड़ी, रायबहादुर पं० रमादत्त और पं० भवानीदत्त कौंसिलके सेक्रेटरी इत्यादि बैठे थे। एजेंट साहबने अपनी स्पीचमें कहा:—"आपके प्रियमहाराज तरुणावस्थामें और मानसिक शक्तियोंके पूर्ण विकासपर आपसे जुदा कर दिये गये हे। मैं भलीभांति जानता हूँ कि उनका वियोग उनकी सारी प्रजाको असह्य हुआ है

और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपके शोकके साथ वृटिश गवर्नमेंट ने पूरा २ हिस्सा लिया है। महाराज वृटिश राज्यके शुद्ध शुभ इच्छ औ राजभक्त मित्र और अपने वंशपरंपरागत रीतिके अनुयायी थे मैं अपने लिये क्या कहूं। मुझपर तो महाराजकी मृत्युके समाचारसे एक भारी सदमासा लगा है। २६ वर्ष हुए मेरे सामने बालक महाराजने अपने पिताका राज्य प्राप्त किया था। हमारी मित्रता उस समयसे शुरू हुई और तबसे अबतक अटूट रही। मैने उनके चरित्र बडी उत्कण्ठा तथा आश्चर्यसे देखे। जब मुझे कमाँऊंके कमिश्नर होनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ पूर्व घनिष्ट मित्रता फिर नवीन हुई। महाराज कीर्तिशाहने केवल पाठशालाहीमें अपना जीवन आश्चर्यजनक सफलतापूर्वक नहीं विताया, किंतु जब उन्होंने राज्याधिकार प्राप्त किये तबसे अपने बाल्यावस्थाके इकरारोंको काफी तौरपर पूर्ण किया।

श्रीमान् राजा सर कीर्तिशाह केवल पाठशालामें अच्छे होनहार विद्यार्थी ही न थे, किंतु वे अपनी राज्यके कारबारकी व्यवस्था तथा अपने बाल्य अवस्थाके वचनोंके प्रतिपालन करनेमें प्रवृत्त रहे। उनका एक मात्र अभीष्ट अपने राज्य तथा प्रजाके हितार्थ था और आप लोगोंके लिये न्याय तथा उन्नति पहुँचानेमें उनको जो कष्ट होता था उसको वह कुछ भी नहीं समझते थे।

मैं विश्वास करता हूँ उन्होंने अपनी प्रजाका सच्चा प्रेम और उनसे सच्ची प्रतिष्ठा प्राप्त कर इसका प्रतिफल भी प्राप्त कर लिया। आप आज मेरे पास इसलिये निमंत्रित किये गये हैं कि मैं आपको यह सूचित करूं कि भारत गवर्नमेन्टने महाराज कुमार नरेन्द्रशाहको अपने पिताकी गद्दी और इस राज्यका अधिकारी स्वीकार कर लिया है। इस समय इस वर्षमें राज्याभिषेकका शुभ मुहूर्त नहीं है। इसकी तिथि पुनः कोई होगी जो अभीतक निश्चित नहीं हुई।

मैनें इतने ही थोडे समयमें जबसे कि मैं यहां हूँ महाराज नरेन्द्रशाहके बावत जैसा कुछ सुना और देखा उससे मुझे आशा होतीहै कि वह अपने आदर्श पिताके

योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध होंगे । यद्यपि अभी वह बालक ही है, किन्तु बड़े होनहार हैं । वह शीघ्र ही महारानी तथा छोटे लाट साहबकी सम्मतिसे, अजमेर राजकुमार कालेजमें, जहां उनके पिताने विद्या प्राप्त की थी, भेजे जावेंगे! वहां वह पूर्णतया गम्भीर शिक्षा प्राप्त करेंगे अपने समान अन्यान्य राजकुमारोंका सहवास भी उनको वहां प्राप्त होगा । दुनियांका ज्यादो तजुबा हासिल होगा बनिस्वत इसके जितना उनको अपने राज्यकी सीमाके भीतहो सकता है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह अपने समयको अधिकतर उपयोगमें लावेंगे और जब उनको राज्यका पूर्ण अधिकार प्राप्त होगा तो वह दृढतापूर्वक राज्यप्रबन्धको अपने पिताके बताये हुए मार्गपर चलाते जावेंगे । महाराजके साथ राय पं० हरिशरण साहब उनके गार्जियन बनकर जायेंगे । इस पदपर २९ वर्ष हुए वह उनके पिताके साथ भी रहे। महाराज छुट्टियोंका अधिक भाग टिहरी ही में वितावेंगे। जिससे आपलोग प्रेमदृष्टिसे उनके बचपनसे युवावस्थाकी उन्नतियोंको देखते रहें । राजाकी नाबालिगी तक और जबर तक कि राजकी लगाम थामनेके योग्य वह नहीं समझे जाते, राज्यका प्रबन्ध एक कौंसिल आफ रिजन्सीके हाथ—जिसको छोटे लाट साहबने स्वीकार कर लिया है—रहेगा । इस कौंसिलकी प्रधान श्रीमहाराणी नैपालियाजी साहिबा रहेंगी और उनके साथ स्वर्गवासी महाराजके लघु भ्राता कुँवर विचित्रशाह और पं० हरिकृष्ण वजीर जो रियासतके एक वृद्ध और विश्वासपात्र कर्मचारी हैं मेम्बर और पं० भवानीदत्त उन्याल, जिनपर स्वर्गवासी महाराजका पूर्ण विश्वास था, कौंसिलके मन्त्री रहेंगे। मुझे निश्चय है कि कौंसिल यथाशक्ति राज्यका प्रबन्ध उसी मार्गपर ले जावेगी जिस मार्गपर महाराज कीर्त्तिशाहने इसको रखा है और यथाशक्ति प्रजाके साथ न्यायका वर्त्ताव करेगी और उनके सुख शमृद्धिका उनको विश्वास दिलावेगी । कठिनाइयोंके समयपर वह बृटिश-गवर्नमेंटकी सहायता और सलाह ले सकती है और उनकी कार्यवाही पूर्ण सहानुभूतिके साथ अवलोकन की जावेगी । मैं आप लोगोंको टिहरी राज्यभरके मनुष्योंका प्रतिनिधि करार देकर यह प्रार्थना करता हूँ कि आप लोग अपने नवीन राजा साहब तथा कौंसिलके प्रति वैसी ही राजभक्ति

दर्शावेंगे जैसी आप स्वर्गवासी महाराजके प्रति दिखलाते थे। अब हमारी सि
यही इच्छा है कि हम महाराज नरेन्द्रशाहके चिरंजीवी और चिर आनन्दके लि
और महारानी साहिवा और उनकी कौंसिलकी सफलताके लिये प्रार्थना करें।

नावालिग महाराज श्रीमान् नरेन्द्रशाहने इसके उत्तरमें कहाः—हमको इ
विपत्ति कालमें आपने जो सहायता प्रदान की उसके लिये हम आपको बहु
बहुत धन्यवाद देते हैं। कृपापूर्वक मेरे शुद्ध आन्तरिक धन्यवादोंको आ
गवर्नमेंटकी सेवामें प्रेषित कर दीजिए कि जिसने मुझे अपने आदर्श पिता
उत्तराधिकारी तथा राज्यका शासक स्वीकृत किया है। आपने मुझे जो ने
नसीहतें दी हैं, उनपर चलना मै अपना मुख्य कर्तव्य समझूंगा। मैं विश्वा
करता हूं कि, आप मुझसे उसी प्रकारकी मित्रता रखेंगे जैसी आप और मे
स्वर्गवासी पिताके परस्पर थी "।

तत्पश्चात् श्रीमती महारानी नैपालियाजी साहेवाने अपना व्याख्यान श्रीमा
राना ज्ञानजंगबहादुरके हाथ भेजा, जिसको वजीर पं० हरिकृष्ण रतूडी साह
बने पढकर सुनाया।

महारानी साहिवाकी स्पीच।

"मिस्टर कैम्पवेल!

आपने बहैसियत एजेंट और मेरे पूज्य पतिके दोस्तके मुझको इस सख
मुसीवतमें जो कुछ मदद दी है उसके लिये मैं और मेरी रिआया आपका दिल
शुक्रिया अदा करती हैं। मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि आप मेरी ओरसे जना
लाट साहवको उनकी हमदर्दी और मददके लिये धन्यवाद देंगे।

मैं उम्मेद करती हूं कि जिस तरह मैंने अपने खाविंद और आपके परस्परव
दोस्तीका फायदा उठाया है उसी तरह आइन्दा उठाऊंगी।

मुझे वडी खुशी है कि आपने टीका साहवकी तालीमका माकूल इन्तजा
करनेके साथ ही उनकी गद्दीनशीनीकी भी मंजूरी हासिल की है। कौंसिल आ
रिजेन्सीके लिये जो मेम्बर व सेक्रेटरी आपने मंजूर किये हे उसके लिये मै आपक
व गवर्नमेंटका दिली शुक्रिया अदा करती हूँ। उनकी योग्यता व नेक खिदम
तके निसवत मेरा भी वही खयाल है जो आपका है। मै उम्मेद करती हूँ कि

यह कौंसिल आपका नेक-सलाह व मददसे रिआयाको खुश व खुर्रम रखेगी। और आपको यह सुनकर खुशी होगी कि आपका किया हुआ इन्तजाम माकूल तौरपर अंजामको पहुँचा, और मैं उम्मेद करती हूँ कि मेरी रिआया हरतरह मुझको मदद देगी, और उनकी बेहबूदीका हर वक्त मेरे दिलमें खयाल रहेगा। कोई तकलीफ पेश आनेपर बेशक मैं आपको मददके लिये तकलीफ दूंगी। "

भूमि बनस्पति और पशु ।

भूगर्भशास्त्रानुसार भूमिकी बनावट कैसी है यह कुछ विदित नहीं परन्तु इस राज्यकी भूमि वैसी ही है जैसी कि पडोसके गढवाल या देहरादून जिले की। बनस्पति वही हैं जो पर्वतोंपर हुआ करती हैं। पशुओं कुछ शेर उत्तरमें है और तेंदुए पश्चिममें मिलते है। काले भालू और जङ्गली कुत्ते भी कई जगह हैं। कई प्रकारके हरन, जिनमें कस्तूरी हरन भी शामिल है, और पहाडी बकरियां भी हैं।

ऋतु ।

मौसम गढवाल जिलेकासा है। दक्षिणीय घाटियोंमें गर्मी कहीं कम कहीं अधिक पडती है। ४००० फुटकी ऊंचाईपर जो स्थान हैं शीतकालमें वह भी बरफसे ढक जाते हैं।

जनसंख्या ।

राज्यमें २४५६ ग्राम है। टेहरीके सिवा नगर कोई नहीं। जनसंख्या प्रतिवर्ष बढती जाती है। सन् १९११ की मनुष्यगणनाके अनुसार ३००८१९ मनुष्योंकी आबादी है। सम्पूर्ण राज्य एकही तहसीलके अन्तर्गत है। राजधानी टेहरी नगरही बस्ती और व्यापारमें बडा हुआ है। सौमें ९९ से भी अधिक हीन्दू बस्ते है। बस्ती बहुत बिखरी हुई है। एक वर्गमीलके अन्दर कुल ६४ मनुष्य बस्ते है। इसका कारण यही है कि यह प्रान्त सारेका सारा पहाडी है। भाषा मध्यमा पहाडी है। १२ वर्ष पूर्व राज्यभरमें छः हजार आदमी लिखपढ सकते थे, परन्तु इस समय ऐसे लोगोंकी संख्या बढी हुई है।

राज्यके निवासियोंमें ब्राह्मण, राजपूत और डोम यही तीन जातियां मुख्य है। सबसे अधिक राजपूत हैं, उनसे प्रायः आधे ब्राह्मण हैं, और उनसे कुछ कम डोम। राज्यके उत्तरीय भागमें कुछ तिब्बती भी हैं। कृषिही प्रधान कार्य है। सौमें ८८ आदमी इसीके द्वारा पेट पालते हैं।

खेती।

खेती और उपज गढवाल और अलमोडा जिलेकी भांति है। पहाडोंकी तलहटी या नदियोंके किनारेही खेती की जाती है। सब मिलाकर खेतीके नीचेकी भूमि लगभग ७० वर्ग मील है। चावल, बाजरा, मंडुआ और गेहूं की पैदावार मुख्य है। आलू भी बहुत पैदा होता है। सिंचाई छोटी २ नहरों द्वारा होती है। मवेशी छोटे होनेपर भी बड़े मजबूत होते हैं।

जङ्गल।

टेहरीके जङ्गल बहुमूल्य हैं। जङ्गलको एक भाग जो १४१ वर्ग मीलमें है, बृटिश सरकारको पट्टेपर दिया हुआ है। चीर और अन्य बहुतही मूल्यवान् लकडियां प्रतिवर्ष इसमेंसे निकलती हैं। देवदार, साल और तुन आदिकी लकडी भी अधिक प्राप्त होती हैं। सन् १८८४ में राज्यका जङ्गल विभाग अंग्रेजी जंगल विभागके नमूनेपर बनाया गया था। जंगलकी आमदनी लगभग २ लाख रुपये है, परन्तु खर्च बहुत कम।

व्यापार।

राज्यसे बाहर लकडी और जंगलकी अन्य पैदावार, घी, चावल और आलू अधिक जाता है। बाहरसे आनेवालेमें कपडा, चीनी, नमक, लोहा, पीतलके बर्तन, दाल, मसाले और तेल मुख्य है। नमक तिब्बतसे भी आता है। कुछ कम्बल बुनने और चमडा कमानेके सिवा और किसी प्रकारकी दस्तकारी राज्यमें नहीं होती। मुख्य बाजार मसूरी है। वहांसे सब माल खरीदकर राज्यमें लाया जाता है। लकडीके लट्ठे और शहतीरें नदियोंमें बहाकर लायी जाती है पर अब सब प्रकारका माल पशुओं या कुलियोंके द्वारा आता जाता है।

सडकें ।

राज्यकी सडकें गाडी चलाने योग्य प्रायः नहीं हैं । इनकी लम्बाई २६३ मील है । मुख्य सडकें ये हैं—टेहरीसे मसूरी, टेहरीसे हरद्वार, टेहरीसे गंगोत्तरी, और टेहरीसे देवप्रयाग ।

शासन ।

राज्यके अन्दर टेहरी नरेशको जानमाल संबंधी पूर्णाधिकार प्राप्त हैं । संयुक्तप्रान्तीय सरकारकी ओरसे कमाऊंके कमिश्नर इस राज्यके पोलिटिकल एजेंट हैं । शासनके सवकार्य वजीरके हाथमें होते हैं । मालगुजारी वसूल करने और उसके संबंधी मुकद्दमोंका निर्णय तहसीलदार और तीन डिपुटी कल्क्टर करते हैं । एक डिपुटी कल्क्टर रावैनमें रहता है । तीसरे दर्जेके दो मजिस्ट्रेट हैं । एक देवप्रयागमें तैनात हैं, दूसरे कीर्त्तिनगरमें । डिपुटी कल्क्टरोंको दूसरे दर्जेके मजिस्ट्रेटी अधिकार प्राप्त है । एक मजिस्ट्रेट पहले दर्जेके हैं । वजीरको भी पहले दर्जेके मजिस्ट्रेटी अधिकार प्राप्त हैं । प्राणदंड केवल राजा दे सकते हैं । अपराध बहुत कम होता है । दीवानी मुकद्दमें डिपुटी कल्क्टर सुनते हैं । इनके अतिरिक्त दो दीवानी अदालतें और हैं । इनकी अपील राजासाहबके दरबारमें होती है । वह कभी कभी इन्हें वजीर या पहले दर्जेके मजिस्ट्रेटके पास भेज दिया करते हैं । सकलाना इलाकेके मुआफीदारोंको भी कुछ अधिकार प्राप्त हैं । राज्यकी आय सब मिलाकर साढे ४ लाख रुपयेके लगभग है, जिसमें प्रायः १ लाख भूमिकरसे प्राप्त होता है ।

राज्यकी मुख्य इमारतोंमें राजाका महल, दफ्तर, अदालतें और जेल है । सडकोंकी मरम्मतमें प्रतिवर्ष ३०–३५ हजार रुपये खर्च होते हैं ।

सेना ।

११३ जवानोंकी एक पैदल पल्टन है । दो तोपेंभी हैं जो सलामी या किसी उत्सवके समय दागी जाती हैं ।

पुलिस और जेल ।

पुलिस केवल टेहरी, देवप्रयाग और कीर्तिनगरमें तैनात है । अन्यत्र ग्रामके मुखिया पुलिसका काम करते हैं । वे वारदातकी इत्तला पटवारीसे कर देते

हैं। जेलखानेमें २९० कैदी रह सकते हैं, पर इनकी संख्या कभी २० से अधिक नहीं हुई।

शिक्षा।

सन् १८८० में राज्यके अन्दर कुल ३ स्कूल और २०३ विद्यार्थी थे। इस समय स्कूल १९ से ऊपर हे और विद्यार्थियोंकी संख्याभी बढी हुई है। शिक्षापर लगभग ९ हजार रुपये वार्षिक खर्च होता है।

अस्पताल।

दो अस्पताल हे। जिनमें अस्त्रचिकित्सा भी होती है। दोनोंका वार्षिक खर्च लगभग ४ या साढे ४ हजार रुपये है।

सकलाना।

टेहरी राज्यके अधीन सकलाना ७० वर्ग मीलका एक इलाका है, यहांके मुआफीदार टेहरीनरेशको २००) वार्षिक कर देते हैं। उनकी वार्षिक आय २९००) है। गोरखा युद्धमें मुआफीदारोंने बृटिश सरकारकी अच्छी सहायता की थी। अपने इलाकेके दीवानी और फौजदारी मुकद्में मुआफीदार सुनते हैं। उन्हें दूसरे दर्जेके मजिस्ट्रेटी अधिकार प्राप्त हैं। जिन मुकद्मोंसे स्वयं उनका संबंध होता है, वे कमाऊंके कमिश्नरकी मार्फत किसी बृटिश अदालतमें विचारार्थ भेजे जाते हैं।

मुख्य स्थान।

भैरवघाटी—भागीरथी और जाह्नवीके संगमपर इस नामका एक मंदिर और घाटी है। यहां जंगल बहुत घना हैं। दृश्य ऐसा मनोहर कि बस देखतेही बनता है। पहाडोंकी चोटियोंको दूरसे देखनेपर बुर्जो और मन्दिरोंका धोखा होता है। जाह्नवीके किनारेसे ३९० फ़ुटकी उंचाईपर लोहेके तारोंका प्राय: २९० फ़ुट लम्बा एक झूलना पुल बना है। इधरसे अधिक गंगोत्रीके यात्रियोंका आनाजाना रहता है।

देवप्रयाग—भागीरथी और अलकनन्दाके: संगमपर एक ग्राम है। इसी स्थानपर भागीरथी गंगा नाम धारण करती है। देवप्रयाग समुद्रतटसे २२६९ फ़ुट ऊंचा है। प्रतिवर्ष यहांभी बहुतसे यात्री आते हैं।

गंगोत्तरी—यहां भागीरथीके दहिने किनारेपर गंगाजीका मंदिर है। गोमुख, जहांसे गंगाजी निकलती है, यहांसे ८ मील दूर है। गंगाजीका मन्दिर १८ वीं शताब्दीके आरम्भमें गोरखा सेनापति अमरसिंह थापाने प्रतिष्ठित किया था। ग्रीष्मकालमें यहां बहुत यात्री आते हैं और शीशियोंमें गंगाजल भरकर लेजाते हैं। यहां कई धर्मशालाएं हैं। शीतकालमें पंडे और अन्य निवासी मुखनामें चलेजाते हैं। यह स्थान गंगोत्तरीसे १० मील पर है। समुद्रतटसे गंगोत्तरीकी उंचाई १०३१८ फीट है।

जमनोत्तरी—यहां यमुनाजीका मंदिर है। हिमालयका बंदरपुंच शिखर समुद्रसे २०७३० फीट ऊंचा है। उसके प्राय: १० हजार फीट नीचे बरफकी चट्टानोंमेंसे यमुनाजी नीकलती हैं। वहांसे ८ मीलपर यह जमुनोत्तरी स्थान है। मन्दिरके पास गर्मजलके झरने है। यात्री ग्रीष्मकालमें यहां आते हैं। समुद्रतटसे इसकी उंचाई १०८०० फीट है।

देवप्रयाग—नदी किनारेसे १०० फुटकी उचाईपर बसा हुआ है। उसकी पीठपर ८०० फुट ऊँचा पर्वत शिर उठाये खडा है। इस स्थानमें श्रीरघुनाथजीका अति प्राचीन मंदिर है। अनुमान है कि इसकी प्रतिष्ठा लगभग १० हजार वर्ष पूर्व हुई थी। अलकनन्दा और भागीरथीके संगमके निकट दो कुण्ड हैं— वसिष्ठकुण्ड और ब्रह्मकुंड। यात्री इनमें स्नान करते है। सन् १८०३ में देवप्रयाग भूकम्पसे नष्टप्राय होगया था। मंदिर गिरपडा। पीछे दौलतराव सिंधियाने उसकी मरम्मत करा दी। यहां लगभग २० दुकाने हैं, एक प्रायमरी स्कूल है और पहले दरजेके मजिस्ट्रेटकी अदालत है।

टिहरीनगर—टिहरी राज्यकी राजधानी है। भागीरथी और वेहलिंग नदीके संगमपर वसी है। जनसंख्या लगभग साढे ३ हजार है। नगर पौन मील लम्बा और आधमील चौडा है। बीचमें एक बाजार है जो नगरको दो भागोंमें विभक्त करता है। उत्तरमें राजासाहबके महल हैं और दक्षिणमें अदालतें, अस्पताल और स्कूल हैं। राजप्रासाद सबसे ऊंची इमारत है। नगरमें कई मन्दिर और

धर्मशालाएं हैं। चुंगीसे लगभग ४०००) वार्षिक आय होती है। राजा सुद-र्शनशाहने सन् १८२९ में इस नगरको राजधानी बनाया। गर्मी यहां बहुत पड़ती है। उस समय राजपरिवार प्रतापनगरमें रहता है। यह स्थान टिहरीसे ९ मील है।

रामपुर ।

युक्तप्रदेशकी दूसरी वडी रियासत रामपुर है । इसका क्षेत्रफल है ८९३ वर्ग मील । इसके उत्तर नैनीताल, पूर्वमें वरेली, दक्षिण और वदाऊँ और पश्चिममें मुरादावादका जिला है । राज्यकी भूमि उपजाऊ है । उत्तरमें तराईकी भूमिसे मिलती है । कई छोटी छोटी नदियां वहती हैं जिनमें कोसी और नाहन मुख्य हैं । रामगंगा इस राज्यके अन्दर पश्चिमोत्तर दिशासे प्रवेश करती है और दक्षिण पूर्वसे निकल जाती है, सव छोटी नदियां इसीमें गिरती हैं । राज्यमें कोई पर्वत नहीं है ।

वनस्पति ।

तराईकी सव वनस्पति यहां मिलती है । उत्तरीय भागमें कुछ जङ्गल हैं । वांस सर्वत्र होता है । वेर और आमके वृक्ष भी वहुत है ।

पशु पक्षी ।

चीते और शेर उत्तरमें मिलते हैं । सुअर, हरन, नीलगाय, खरगोश, बटेर, वतख आदि शिकारके पशु पक्षी सर्वत्र मिलते हैं । शिकारी कुत्ते यहांके मशहूर हैं । अङ्गरेजी कुत्तोंसे वडे होते हैं ।

इतिहास ।

इस राज्यका इतिहास रोहेलखण्डके इतिहासमें सम्मिलित है । १७ वीं शताब्दीके अन्तमें शाह आलम और हुसेनखां नामके दो रोहेले पठान मुगल वादशाहकी सेवामें उपस्थित थे । दोनों आपसमें भाई थे । ज्येष्ठ भ्राता शाह आलमके पुत्र दाऊदखांने मराठा युद्धमें वडा नाम पैदा किया । इसके इनाममें उसे वदाऊँ जिलेमें कुछ भूमि जागीरके तौरपर दी गयी । उसका दत्तक पुत्र अली-महम्मद सन् १७१८ में नवाव बनाया गया और रोहेलखण्डका अधिकांश भाग उसकी जागीरमें शामिल किया गया । उसकी ऐसी उन्नति देखकर उसके

पडोसी अवधके सूबेदार सफदरजंगको बडी डाह उत्पन्न हुई।एक झगडा खडा करके उसने अलीमहम्मदकी ओरसे बादशाहको भडकाया। परिणाम यह हुआ कि अलीमहम्मदकी सारी जागीर छीन ली गयी और वह स्वयं दिल्लीमें कैद किया गया।

६ मासके बाद फिर उसका सितारा चमका। कैदसे मुक्त करके सरहिंदकी सूबेदारी पर भेजा गया। इसके प्रायः एक वर्ष बाद अहमदशाह अब्दाली-का आक्रमण हुआ। उस गडबडमें अली महम्मदने अपनी खोई हुई रोहेलखंड वाली जागीरपर फिर अधिकार कर लिया। पीछे दिल्लीके बादशाह अहमदशाहने भी जागीरपर उसका कबजा स्वीकार करलिया। अली महम्मदके मरनेके बाद कुल जागीर उसके लडकोंने बांट ली। सबसे छोटे पुत्र फैजुल्लहखाँके हिस्सेमें रामपुर कटेरा नामका इलाका पडा। इतनेमें रोहेलखंडपर मराठोंका आक्रमण हुआ। रोहेले सरदारोंने उनसे बचनेके लिये नवाब अवधसे सहायताकी प्रार्थना की और इसके बदले४० लाख रुपये देनेका वचन दिया। नवाबने सहायता दी, पर जब रुपया अदा करनेका समय आया तो रोहेले अपने वचनसे फिरगये। तब नवाबने अंग्रजी गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्ससे सहायता लेकर रोहेलखंड पर आक्रमण किया और रोहेलोंको परास्तकर उनकी सारी भूमि छीन ली। राम-पुरके जागीरदार फैजुल्लहखाँने नवाबकी फौजी सेवा करनेका वचन दिया इसलिये उनकी जागीर छोड दी गयी। पीछे फौजी सेवाके बदले १५ लाख रुपये वार्षिक कर देनेकी बात पक्की हुई। फैजुल्लहखां सन् १७९३ में मर गये। जागीर बाटनेमें उनके पुत्रोंमें फूट पडी। छोटा भाई बडे भाईको मारकर जागीरका मालिक बन बैठा। परन्तु नवाब अवधने अंग्रेजी फौजकी सहायतासे उसे हटाकर ज्येष्ठ भ्राताके पुत्र अहमद अलीखांको जागीरका मालिक बनाया।

सन् १८०१ में रोहेलखण्ड प्रांत अग्रजी अधिकारमें आगया। अंग्रेज सरकारने रामपुरकी जागीरदारी स्थायीरूपसे स्वीकार की। सन् १८५७ में गदरके समय महम्मद युसुफअलीखाँ रामपुरके नवाब थे। उन्होंने उस समय सब प्रकार अंग्रेजोंको सहायता की। इसके बदलेमें उन्हें सरकारने प्रायः

सवालाख रुपये वार्षिक आयकी भूमि प्रदान की और सलामीकी तोपोंकी संख्या भी बढा दी। सन् १८६४ में यूसफअलीखाँका देहान्त होगया। उनके पुत्र नवाब कल्बअलीखां जी. सी. एस. आइ. सी. आइ. ई. सिंहासनासीन हुए। सन् १८७७ के दिल्लीदरबारमें उनकी सलामीमें दो तोपोंकी और वृद्धि हुई। सर कल्बअलीखांका देहान्त सन् १८८७ में हुआ। उनके पुत्र नवाब मुस्ताकअलीखां सिंहासनासीन हुए, पर दो वर्ष बादही उनका भी देहान्त हो गया। उस समय उनके पुत्र, वर्तमान नवाब साहब कर्नल सर हामिदअलीखाँ बहादुर मुस्तैदजंग, जी. सी. आइ. ई., जी. सी. वी. ओ. नाबालिग थे। इस लिये राज्यका शासन सन् १८९६ तक रिजेन्सी कौंसिल द्वारा होतारहा। शासनाधिकार प्राप्त होनेपर नवाब साहबने अपनी योग्यताका अच्छा परिचय दिया। सन् १९११ के दिल्लीदरबारमें आपका खूब सन्मान हुआ। गत वर्ष युवराजकी असमय मृत्युसे राज्यमें शोक छागया। नवाब साहब रामपुरको अंग्रेजी सेनामें कर्नलका आनरेरी पद प्राप्त है। आप सम्राट्महोदयके एडीकांग भी हैं।

जनसंख्या।

इस राज्यमें ६ नगर और ११२० ग्राम हैं। सन् १९०१ में ५३३, २१२ और सन् १९११ में ५३१२१७ मनुष्य इस राज्यमें बसते थे। पांच तहसीलें हैं—हजूर या सदर, शाहाबाद, मिलक, बिलासपुर और सुआर। राजधानी रामपुरमें है।

बस्तीमें हिन्दूमुसलमानोंकी संख्या लगभग बराबर है। सन् १९०१ में सैकड़े पीछे ५९ हिन्दू थे और ४९ मुसलमान। भाषा पश्चिमी हिन्दी है। हिन्दुओंमें चमार सबसे अधिक हैं। उनसे कम, लोध, कुर्मी, माली, ब्राह्मण और अहीर। मुसलमानोंमें अधिकांश रोहेले पठान हैं। उनसे कम तुर्क, फिर जुलाहे और शेख। हिमालयकी तराईमें बनजारे भी बसते हैं। सौमें ६१ आदमी खेती करते हैं और लगभग ४ आदमी कपडा बुनते हैं।

कृषिकार्य।

उत्तरमें अधिकतर धान और मध्यभाग तथा दक्षिणमें ज्वार, बाजरा, गेहूँ, गन्ने आदि उत्पन्न होते हैं। राज्यका कुल क्षेत्रफल ८९३ वर्ग मील है। इसमें

खेती ६२९ वर्ग मीलमें होती है। ज्वार १२९ वर्ग मीलमें, गेहूँ १०३ वर्ग मीलमें, धान ९८ वर्ग मीलमें और गन्ना २८ वर्ग मीलमें बोया जाता है।

गाय, बैल और टट्टू घटिया दर्जेके होते हैं। बनजारे लोग टट्टूओंपर माल लादते हैं।

शिल्प और व्यापार।

कपडा बुननेका काम अनेक स्थानोंमें होता है। रामपुरनगरमें खस नामका कपडा बहुत अच्छा बुना जाता है। मिट्टीके उत्तम बरतन, रंगीन और नगदार, सब तरहके बनते हैं। तलवारके फल और लोहेकी अन्य कई चीजें भी अच्छी बनती है। पहले तोडेदार बन्दूकें भी बनाई जाती थीं। कई जगह चीनी साफ करनेका काम होता है। राज्यसे बाहर चीनी, चावल और चमडा बहुत जाता है। राज्यमें आनेवाले मालमें अधिकांश कपडे, नमक और कई तरहकी धातुएं होती हैं। बकरियां भी बहुत आती है। एक समय इस राज्यके हाथी और घोडे प्रसिद्ध थे।

रेलवे और सडकें।

अवध रोहेलखण्ड रेलवे लाइन पूर्वसे पश्चिमको जाती है। कंकड न मिलनेसे सडकें पहले खराब थीं पर अब बाहरसे कंकड मंगाकर अच्छी सडकें बनायी गयी हैं। रामपुरनगरके आसपास ३३ मीलके अन्दर पक्की सडकोंकी देखरेख राज्यकी ओरसे होती हैं। बरेली, मुरादाबाद और नैनीतालकी सडकोंकी मरम्मत युक्तप्रदेशीय सरकारके जिम्मे हैं। कच्ची सडकोंकी लम्बाई २२३ मील है।

शासन

बरेलीके कमिश्नर रामपुरके पोलिटिकल एजेंट है। वर्त्तमान नवाब साहबके समयमें युक्तप्रदेशीय सरकारका कोई देशी अफसर प्रधान मंत्रीके पदपर नियुक्त होता रहा है। उसे मदारुलमहाम कहते है। उनके नीचे चीफ़ सेक्रटरी, होम सेक्रेटरी, कानूनी मंत्री और दीवाने सदर आदि है।

प्रत्येक तहसीलमें एक तहसीलदार तैनात है। उसे दीवानी और फौजदारीके अधिकार प्राप्त हैं। उसके फैसलेकी अपील नाजिमके यहां होती है।

१०००) तकके मामले तहसीलोंमें सुने जाते हैं । १००००) तकके मामले रामपुरराजधानीमें मुफ्ती दीवानी अदालतमें पेश होते हैं । इन सबकी अपील जिलाजजके यहां होती है । रामपुर नगरमें एक अदालत खफीफा भी है । प्रधान मजिस्ट्रेट २ वर्ष, सेशनजज ५ वर्ष और प्रधान मंत्री १० वर्ष तक कैदका दंड दे सकते हैं । जन्म कैद और प्राणदंडकी आज्ञा नवाब साहब देते हैं । सबकी अपील प्रधान मंत्री और अन्तमें नवाब साहब सुनते हैं । म्युनिसिपल्टी केवल राजधानीमें है । मेम्बर चुने जाते हैं ।

आयव्यय ।

राज्यकी कुल आमदनी लगभग ३६ लाख रुपये वार्षिक है । इसमें प्रायः अर्द्धभाग अकेले भूमिकरसे वसूल होता है । खर्च इससे कुछ कम होता है ।

सेना और पुलिस ।

सेनामें ३ रिसाले, १९०० पैदल, २०६ गोलन्दाज और २३ तोपें हैं । रिसालोंमें दो अर्थात् ३१७ सवार इम्पीरियल सर्विसके हैं । पुलिसमें १०९ अफसर और ४०९ कनिस्टबल, १४९ म्युनिसीपल और १२८१ देहाती चौकीदार हैं । जेलखानेमें लगभग ५०० कैदी रहा करते हैं ।

शिक्षा ।

शिक्षामें रामपुर राज्य पीछे पडा हुआ है । १० वर्ष पूर्व सौ में कुल २ आदमी पढ लिख सकते थे, पर अब कुछ उन्नति होरही है । १० वर्ष पूर्व १२८ स्कूल और ४४२४ विद्यार्थी थे । इनमें लडकियाँ १९० थीं । राजधानीमें एक ऊंचे दर्जे का अरबी कालेज और शिल्प शिक्षालय भी है । शिक्षापर लगभग ५३ हजार वार्षिक व्यय होता है ।

अस्पताल ।

१९ अस्पताल और दवा खाने हैं इनमें लगभग २०० रोगी रहसकते हैं । वार्षिक खर्च लगभग ६००००) है ।

प्रधान नगर ।

राजधानी रामपुर—रामपुर नगर बरेली—मुरादाबाद की सडकपर कोसी नदीके तटपर बसा हुआ है । रेल द्वारा कलकत्तेसे ८९१ और बम्बईसे १०७०

मील है। जन संख्या ७६२४१ है। इनमें अधिकांश मुसलमान हैं। नवाब अलीमहम्मदके पुत्र फैजुल्लहखांके समयमें यह नगर प्रसिद्ध हुआ। पहले इसका नाम था मुसतफाबाद। वर्त्तमान नगर लगभग छः मीलके घेरेमें बसा हुआ है। नगरकी चहारदीवारी बहुत घनी बांसोंकी बंसवाडी है। इसके अन्दरसे होकर नगरमें प्रवेश करनेके लिये पहले ८ मार्ग थे। अब और भी कई रास्ते है। नगरके मध्यमें नवाब साहबका आलीशान किला और अदालतें तथा राज्यके दफ्तर हैं। छावनी नगरके बाहर है। नवाब कल्बे अलीखांकी बनवाई जामेमसजिद देखने योग्य है। नगरमें ४३ स्कूल, एक अरबी कालेज और एक शिल्पशिक्षालयहै।

शाहाबाद–जन संख्या लगभग ८००० है। यह एक प्राचीन स्थान है। पहले इसका नाम था लाखनोर। कहते है, रोहेलखंडके कटेहरिया राजवंश की राजधानी इसी स्थानमें थी। नगरमें एक प्राचीन किलेके खंडर पडे हैं। वहीं नवाब साहबका एक महल बना है। उसमें आप गर्मीके दिनोंमें रहा करते है। इस नगरका जल वायु अच्छा कहा जाता है। यहां चीनी अच्छी तैयार होती है। नगरमें एक अस्पताल और एक तहसीली स्कूल है।

टांडा–सुआर तहसील का सदर स्थान है। जनसंख्या लगभग ९०००) है। यहां बनजारे अधिक रहते हैं। नगरमें एक अस्पताल और एक स्कूल है।

काशी नरेश ।

महाराज सर प्रभुनारायणसिंह जी. सी. आइ. ई.

बनारस राज्य ।

यह राज्य बनारस और मिर्जापुर जिलेके बीचमें है। क्षेत्रफल ९८९ वर्ग मील और जन संख्या पौने ४ लाखके लगभग है। चकिया गंगापुर और भदोही इन तीन मुख्य तहसीलोंमें विभक्त है। कुछ स्थान गोमती और कर्मनाशाके आसपास भी है। गंगा राज्यके मध्यसे होकर निकली है।

जलवायु और वनस्पति पूर्वीय युक्त प्रदेशकीसी है। सालभरमें वर्षाका औसत प्रायः ३९ इञ्च है आम और बांस अधिक होते है। अमरूद और बेर यहांके अच्छे होते हैं। चकिया इलाकेमें विन्ध्यपर्वतके दामनमें कुछ जंगल है। वहां शेर चीते भेडिये और हरन मिलते है। ईस्टइंडियन अवध रोहेलखंड और बंगाल नागपुर रेलवेकी लाइनें राज्यमेंसे होकर गयी है।

इतिहास ।

मुगल राज्यके कमजोर होनेपर अवधके सूबेदार स्वाधीन हुए और नवाब अवध कहलाने लगे सन् १७२२ के लगभग नवाव सआदतखांने बनारसका प्रान्त कुछ कर नियत करके मीररुस्तमअलीको दिया किन्तु कई कारणोंसे नाराज होकर सन् १७३८ में उससे छीन कर उसके एजेंट मनसारामको यह प्रान्त दे दिया उन्होंने बनारस राज्यकी स्थापना की।

मनसाराम सन् १७३९ में स्वर्गवासी हुए। उनके पुत्र बलवन्तसिंहने राजाकी पदवी प्राप्त कर राज्यकार्य सम्भाला। बलवन्तसिंह बडे दूरदर्शी और राजनीति निपुण राजा थे। अधिकार पाते ही वहँ नवाव अवधकी अधीनतासे निकल जानेकी चेष्टा करने लगे। अनेक उपायोंसे उन्होंने राज्यमें आसपासकी और भी भूमि मिला ली. और नवाबको ८० हजार रुपये देकर चकियाका परगना और कुछ दिन बाद कोंढ प्राप्त किया, धीरे धीरे कई किले बनाकर सीमाको खूब सुदृढ कर लिया। उस समय बंगाल और बिहारमें अङ्गरेजोंका जोर बढ रहा था। सन् १७६३ में दिल्लीके बादशाह शाहआलम अंग्रेजोंसे लडने चले। अवधके नवाब शुजाउद्दौलहने बादशाहका साथ दिया। राजा बलवन्तसिंह भी सेना सहित उनके साथ

हुए। बक्सरके पास अङ्गरेजोंसे बडी लडाई हुई, उसमें बादशाह परास्त हुए। राजा बलवन्तसिंह तब अङ्गरेज सरकारकी रक्षामें चले गये। नवाब अवधने अपना आधिपत्य त्यागकर बनारस प्रान्त ईस्टइण्डिया कम्पनीके हवाले किया। लेकिन कम्पनीके डिरेक्टरोंने यह स्वीकार नहीं किया इस लिये यह प्रान्त सन् १७६५ में पुनः नवाब अवधको लौटा दिया गया, परन्तु उनसे यह वचन ले लिया गया कि वह काशी नरेशके सब अधिकार अक्षुण्ण रखकर पूर्ववत् राजाकी रक्षा करते रहेंगे।

सन् १७७० में राजा बलवन्तसिंहका देहान्त होगया। तब नवाब अपना वचन भुलाकर इस चेष्टामें लगे कि जैसे बने बनारस राज्य जब्त करलें। परन्तु अङ्गरेज सरकारने ऐसा नहीं होने दिया। उसके दबाव डालनेसे लाचार होकर नवाबको अपना विचार त्यागना पडा। बलवन्तसिंहके एक पुत्र चेतसिंह सिंहासनासीन हुए। पांच वर्ष बाद नवाबने अपना बनारस राज्यका आधिपत्य अंग्रेज सरकारको दे दिया तबसे यह राज्य अंग्रेजी अमलदारीमें शामिल हुआ प्रथम अंग्रेज गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्सने राज्यकी सनद तारीख १९ अप्रेल सन् १७७६ को राजा चेतसिंहके हवाले की।

भारतमें दिन दिन बढते हुए अंग्रेजी राज्यके लिये वह समय बडा चिंताजनक था। मैसूरके नवाब हैदरअली, हैदराबादके निजाम और मराठोंसे अंग्रेजोंका सामना हुआ, इसलिये सन् १७७८ में एक पल्टनके खर्चेके लिये अंग्रेज सरकारने ५ लाख रुपये चेतसिंहसे तलब किये। पीछे १९०० सवारोंका एक रिसाला भी तैयार करने पर जोरदिया। राजाने टालमटूल की और एक सवार भी नहीं भेजा। यह देखकर गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्सने उनपर ५० लाख रुपये जुर्माना किया और उसके वसूल करनेके लिये अगस्त सन् १७८१ में स्वयं बनारस आये। राजा अपने बनारसवाले महलमें रहते थे। वारेन हेस्टिंग्सने उनको पकड लानेकी आज्ञा दी। इसपर लडाई हुई। अंग्रेजी फौज मारी गयी। शहरमें बलवा होगया। वारेन हेस्टिंग्स कुछ साथियोंसहित घिर गये किसी तरह बचकर भाग निकले और चनारगढ पहुँचे। वहां उन्होंने कुछ सेना एकत्र की, राजाकी सेनासे सोखड, पतीता और लतीफपुरमें लडाइयां हुई। राजा

चेतसिंह परास्त होकर विजयगढमें किलावन्द हुए, पर अन्तमें वहांसे भी भागे और ग्वालियर राज्यमें शरण ली । सन् १८१० में वहां उनका देहान्त हुआ ।

उनके वाद वलवन्तसिंहके एक पौत्र महीपनारायण गद्दीपर विठाये गये । राज्यका कर कुछ वढा दिया गया, वनारस शहर तथा आसपास कुछ इलाके अङ्गरेजी राज्यमें शामिल किये गये और सिक्का जारी करनेका अधिकार भी राजासे ले लिया गया । सन् १७८७ में राज्यका कुप्रवन्ध देखकर अंग्रेज सरकारने नया प्रवन्ध किया । इसके अनुसार फेमिली डोमेनका इलाका कायम किया गया । उसमें केवल मालगुजारी वसूल करनेका अधिकार राजाको दिया गया । तवसे राज्यका प्रवन्ध वहुत अच्छी तरह चलता रहा । महाराज सर ईश्वरीप्रसादनारायणसिंह इस राज्यके नामी राजा हुए । उनके वाद सन् १८८९ में वर्तमान काशीनरेश महाराज सर प्रभुनारायणसिंह जी. सी. आइ. ई. सिंहासनासीन हुए । आपके शासनकालमें राज्यकी खूव उन्नति हुई । इससे प्रसन्न होकर अंग्रेज सरकारने गत सन् १९११ में महाराजके सव इलाकों और जमींदारियोंको शामिल करके वनारसका स्वाधीन राज्य कायम किया ।

रामनगर—यहां राजधानी है । नगरकी जनसंख्या लगभग ११००० है । गंगाके पूर्वीय तटपर वसा हुआ है । राजा वलवन्त सिंह यहां एक किला वनवाकर रहने लगे तभीसे यहां राजधानी वनी । चेतसिंहने एक सुन्दर मन्दिर और तालाव वनवाया । यहां वेदव्यासजीका मन्दिर प्रसिद्ध है । हरसाल वडा मेला लगता है । अनाज और वेत तथा लकडीका सामान यहांसे वाहर जाताहै ।

युवराज—आदित्यनारायणसिंहजी युक्तप्रदेशीय कौन्सिलके सदस्य हैं ।